अमृत-धारा

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

चिन्तन-धारा

विषय - सूची

परिभाषा

चिन्तनधारा अर्थात् ज्ञान-सागर मंथन

चिन्तन का जीवन में महत्व

Q. चिन्तन क्या करना है और क्यों करना है?

चिन्तन का आधार और कारण

चिन्तन का प्रभाव और उसके विभिन्न प्रकार

चिन्तन का प्रभाव

- उसके अपने ही शरीर पर
- आत्मा का अपने ऊपर
- अन्य आत्माओं पर
- वातावरण पर
- जड़-जंगम प्रकृति पर

चिन्तन के विभिन्न प्रकार

A. 1. स्वस्थ चिन्तन
   2. अस्वस्थ चिन्तन
   3. सामान्य चिन्तन

B. कल्याणकारी चिन्तन
   अकल्याणकारी चिन्तन

चिन्तन, स्मरण अर्थात् याद और सुमिरण का स्वरूप और उनमें अन्तर

द्वितीय अध्याय (Second Chapter)

चिन्तन, परमात्मा और आत्मा
चिन्तन और आत्मा की बीजरूप स्थिति अर्थात् चिन्तन-मुक्त स्थिति
चिन्तन और निश्चय
चिन्तन और कर्म
दृश्य. दृष्टिकोण और चिन्तन
चिन्तन, श्रवण, पठन-पाठन, वर्णन और लेखन
चिन्तन और शरीर
चिन्तन और मानसिक स्थिति

चिन्तन और ईश्वरीय ज्ञान
चिन्तन और योग
चिन्तन और गुण एवं शक्तियों की धारणा
चिन्तन और बाबा की मुरली
चिन्तन और ईश्वरीय सेवा
चिन्तन और विश्व-नाटक के गुह्य राज
चिन्तन-धारा और पुरुषोत्तम संगमयुग
चिन्तन और अन्य योनि की आत्मायें
चिन्तन और स्वप्न
चिन्तन और चिन्तन-मुक्त स्थिति
चिन्तन, वातावरण और संग
श्रीमत और विचार-सागर मंथन अर्थात् चिन्तन
  श्रीमत और स्व-चिन्तन
  श्रीमत और शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक
  श्रीमत और चिन्तन, चिन्ता एवं चिन्तन-चिन्ता से परे निश्चिन्त स्थिति
चिन्तन के लिए विषय-वस्तु
  A. ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा उद्घाटित विश्व-नाटक के गुह्य राज़
  B. मुक्ति-जीवनमुक्ति के सफल अभ्यास के लिए फॉलो फादर
  C. विचारणीय आध्यात्मिक प्रश्न
  D. विभिन्न परिस्थितियों के लिए बाबा की श्रीमत
चिन्तन के सम्बन्ध में विचारणीय प्रश्न
सारांश

शिवबाबा के बच्चे अर्थात् आत्मायें तो हैं ही हैं। ... ब्रह्मा का ही दिन और रात कहते हैं, विष्णु के लिए नहीं कहते क्योंकि ब्रह्मा ही दिन और रात को जानते हैं।''

सा.बाबा 4.7.07 रिवा.

''आज तो ब्रह्मा भोजन है। शिवबाबा तो खाते नहीं हैं क्योंकि वह तो अभोक्ता है। ... पक्के योगियों के हाथ का भोजन मिले तो बुद्धि बहुत अच्छी हो जाये। शिवबाबा की याद में रहकर स्वदर्शन चक्र फिराते भोजन बनाये तो बुद्धि शुद्ध हो जाये। पवित्र तो विधवा मातायें और कुमारियाँ भी रहती हैं परन्तु वे योगिन भी हों।''

सा.बाबा 4.7.07 रिवा.

''अभी तुमको रोशनी मिलती है, जिससे तुम समझते हो यह ड्रामा का चक्र कैसे फिरता रहता है। ... ड्रामा के चक्र को जानना पढ़ाई है। जितना बाप को याद करेंगे, चक्र को फिरायेंगे तो ऊंच पद पायेंगे।... अभी तुम्हारी चढ़ती कला है, उतरती कला पूरी हुई।''

सा.बाबा 7.7.07 रिवा.

''मैं पतितों को पावन कैसे बनाता हूँ, यह भी तुम जानते हो। ... बाप तुमको सारा राज़ अच्छी रीति समझाते हैं। ... रात-दिन चिन्ता रहे कि कैसे बाप का परिचय सबको दें।''

सा.बाबा 9.7.07 रिवा.

''मैं अब तुम बच्चों को सब शास्त्रों का राज़ समझाता हूँ। अब तुम जज करो कि कौन राइट है। ... बाप सचखण्ड के लिए सच्चा ज्ञान देते हैं, बाकी वेद-शास्त्र सब हैं भक्ति मार्ग के।''

सा.बाबा 27.7.07 रिवा.

विविध बिन्दु

''बाप का फरमान है - मुझे याद करो, मैं आया हूँ भक्ति का फल देने। किसको? जिन्होंने शुरू से लेकर अन्त तक भक्ति की है। ... सोमनाथ का मन्दिर कितना जबरदस्त है। विचार करना चाहिए कि हम कितने साहूकार थे, अभी गरीब कौड़ी मिसल बन गये हैं।'' सा.बाबा 22.6.07 रिवा.

''श्रीमत पर चलना है। मन्मनाभव और चक्र राज़ भी सहज है। स्वदर्शन चक्रधारी भी बनना है। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी हो परन्तु यह अलंकार विष्णु को दे दिये हैं क्योंकि अभी तुम सम्पूर्ण नहीं बने हो।... कितनी प्वाइन्ट्स हैं, जो तुमको बुद्धि में धारण करना है।'' सा.बाबा 23.6.07 रिवा.

''ये बड़ी गुह्य बातें हैं, जो तुम ही जानते हो। ... इस चक्र को याद करना माना सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को याद करना। जितना स्वदर्शन चक्र फिरता रहेगा, उतना समझो वह यात्रा पर तीखा जा रहा है। ... बोलो हम आपको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं कि मनुष्य 84 जन्म कैसे लेते हैं। ... लक्ष्मी-नारायण ने राज्य कैसे पाया और फिर कैसे गंवाया।'' सा.बाबा 28.6.07 रिवा.

''तुमको बाप अच्छी रीति समझाते हैं, तुमको बुद्धि में अच्छी रीति धारण करना है। जो नॉलेज बाप की बुद्धि में है, वह तुम्हारे में भी रहनी चाहिए। मैं तुम आत्माओं को आप समान बनाता हूँ। सृष्टि-चक्र की जो नॉलेज मेरे में है, वह तुम्हारी बुद्धि में भी है। बाबा के साथ योग भी हो और घड़ी-घड़ी विचार सागर मन्थन होता रहे।''

सा.बाबा 29.6.07 रिवा.

''स्वर्ग में राजा-प्रजा दोनों के लिए कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहती है, जिसके लिए इन्वेन्शन आदि निकालें। ... इन लक्ष्मी-नारायण की हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको पता नहीं है। अभी तुमको कितनी ऊंच शिक्षा मिलती है। देने वाला है ही एक बाप। ... सारा दिन इन बातों में रमण करते हर्षित रहना चाहिए।''

सा.बाबा 2.7.07 रिवा.

''तुम प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्टेड बच्चे हो। शिवबाबा के एडॉप्टेड बच्चे नहीं कहेंगे।

प्रस्तावना

प्राण प्रिय शिवबाबा और प्यारे ब्रह्मा बाबा दोनों का ही हम बच्चों से अथाह प्यार है और हम अपने आध्यात्मिक जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करें, उसके लिए समय-समय पर हमको पुरुषार्थ के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। हम ज्ञान की सभी बातों को अच्छी रीति समझ सकें, उनका लाभ उठा सकें, उसके ब्रह्मा बाबा और शिवबाबाप सदा ही हमको विचार-सागर मन्थन की प्रेरणा देते रहते हैं। कैसे-कैसे बाबा ने हमको चिन्तन का महत्व समझाया, चिन्तन की विधि और विधान बताया तथा उसके लिए क्या-क्या महावाक्य उच्चारण किये, उनको यहाँ उद्धृत किया गया है।

ज्ञान सागर परमात्मा पतित-पावन है और नये विश्व का रचयिता है, वह संगमयुग पर आकर हमको यथार्थ ज्ञान देकर हमारे चिन्तन की धारा को बदल देते हैं, जिससे ही आत्मा के कर्म-संस्कार परिवर्तन हो जाते हैं और आत्मा पतित से पावन बन जाती। पावन आत्मा ही इस विश्व-नाटक के परम सुख को अनुभव कर सकती है। ये शुभ और श्रेष्ठ चिन्तन-धारा सदा बहती रहे, इसके लिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है। ज्ञान सागर परमात्मा ने इस सृष्टि-चक्र के अनेक गुह्य राज़ों का ज्ञान दिया है, जिसके आधार पर हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, उसके लिए यहाँ पर बाबा के द्वारा दिये गये सत्य ज्ञान के कुछ विषय-बिन्दु, जिनका ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है उनका वर्णन किया गया है। बाप समान बनने के लिए निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाबा गुण-कर्तव्यों, विशेषताओं का वर्णन किया गया है और ज्ञान की वास्तविकता को समझने के लिए एवं विचार करने के लिए कुछ आध्यात्मिक प्रश्नों का उल्लेख किया गया है।

उपर्युक्त विषयों के स्पष्टीकरण के लिए अपने विचार तथा साथ में साकार बाबा तथा अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों का उल्लेख अलग-अलग पुस्तिकाओं में किया गया है। साकार बाबा और अव्यक्त बापदादा के महावाक्य ही हमारे जीवन की सफलता और पुरुषार्थ का आधार हैं।

ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन विश्व-नाटक की विविधतापूर्ण, अद्भुतता, सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता, अटल भावी और कर्मों की अटल गुह्य गति को जानकर सदा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प रहकर जीवन के परम सुख को अनुभव करने के लिए है। मृत्यु भी विश्व-नाटक की एक सुखमय, कल्याणकारी और अति आवश्यक क्रिया है, जो अज्ञानतावश दुखदायी अनुभव होती है। क्या होगा, कैसा होगा का चिन्तन न करके जो होगा वह अच्छा होगा - इस सत्य को जानने वाला जीवन के परम सुख को अनुभव करता है।

''गायन है - निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोये। ... बेहद का बाप कहते हैं - हमारी निन्दा तुम बच्चों ने सबसे जास्ती की है, सबसे नजदीक वाले मित्र भी तुम बच्चे ही बनते हो। अपकारी भी तुम बच्चे बनते हो, बाप उपकार भी तुम पर ही करते हैं। यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह बिचार सागर मंथन करने की बातें हैं।''

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

Q. जैसे बाप अपकारी पर उपकार करता है, वैसे हम भी अपकारी पर उपकार कब और कैसे कर सकेंगे? अर्थात् इसके लिए क्या धारणा चाहिए?

हर चेतन आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं परन्तु हरेक की अपनी सीमा है, उस सीमा तक वह अपने हित-अनहित का विचार करती है और उस सीमा तक ही वह इस विश्व के वातावरण को प्रभावित करती है, जिससे उसका प्रभाव अन्य आत्माओं पर होता है। उस अनुसार ही आत्मा सुख-दुख का अनुभव करती है। उस अनुसार ही उसके कर्मों के फल का निर्धारण होता है और वह सुख-दुख भोगती है। परन्तु सुख-दुख का नियम हर आत्मा पर समान रूप से प्रभावित होता है।

यदि विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो किसी भी व्यक्ति को न कोई सज़ा मिलनी चाहिए और न ही किसी की महिमा होनी चाहिए परन्तु ये सुख-दुख, जीत-हार का खेल है, इसलिए ड्रामानुसार सज़ा देने और सज़ा भोगने का भी एक पार्ट है, जिस पार्ट के अनुसार अपराधी को अपराध करना ही है और न्यायाधीश को सज़ा देनी ही है। जिस आधार पर ही ये विश्व-नाटक 5 हजार वर्ष तक अबाध रूप से चलता है।

सारांश

यह विविधिता पूर्ण विश्व-नाटक है, इसमें हर आत्मा के उत्थान और पतन का अपना मार्ग है, विधि-विधान है परन्तु कर्म और फल के अनादि-अविनाशी नियम-सिद्धान्त हर आत्मा पर समान रूप से प्रभावित होते हैं, उनसे कोई छूट नहीं सकता। चिन्तन आत्मा के उत्थान-पतन का मूलाधार है, जो आत्मा परचिन्तन, परदर्शन में अपने समय और शक्ति को व्यर्थ न गँवाकर स्वचिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन में अपने समय और शक्ति को सफल करता है, वही अपने अभीष्ठ लक्ष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् सुर-दुर्लभ ब्राह्मण जीवन के परम सुख को प्राप्त करता है।

चिन्तन ही आत्मा के सुख-दुख का आधार है। सतयुग-त्रेतायुग में आत्मायें प्रकृति की अद्भुत लीला को देख-देख, उसका चिन्तन करके उसका सुख पाती हैं। द्वापर-कलियुग में आत्मायें विभिन्न इन्द्रिय सुखों, विषय सुख, प्रकृति की अद्भुतता, सत्य की खोज में, साधनों की खोज के चिन्तन में रहते और उसमें ही जीवन का सुख-दुख दोनों पाते हैं। संगमयुग पर आत्मायें आत्म-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन करके जीवन के परम सुख को पाती हैं, जो आत्म-कल्याण और विश्व-कल्याण का एकमात्र आधार है।

कलियुग के अन्त में अधिकांश आत्माओं का चिन्तन विषय-वासनाओं के प्रति ही होता है, जो जीवन का निकृष्ट सुख है। वर्तमान दुनिया के वातावरण में विषय-चिन्तन के ही वायब्रेशन अधिक हैं, इसलिए हर मनुष्य की दृष्टि-वृत्ति दैहिक ही रहती है। ऐसे समय पर यदि कोई आत्मा दृढ़ता से पुरुषार्थ नहीं करती है तो उस पर ये विषय-चिन्तन का प्रभाव अवश्य सम्भावी है, जो आत्मा को श्रेष्ठ पुरुषार्थ से वंचित कर देता है, जिसके परिणाम स्वरूप आत्मा श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित हो जाती है।

''यह बड़ी वण्डरफुल नॉलेज है, जिससे हम क्या से क्या बन जाते हैं। ... ऐसी-ऐसी बातों पर तुम बच्चों को विचार करना है। ... तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। ... यह बेहद का खेल है, हर एक एक्टर को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। ... कितनी अच्छी-अच्छी बातें हैं, जिनका सुमिरन करना चाहिए।'' सा.बाबा 14.6.04 रिवा.

चिन्तन-धारा

''तुम बच्चों को यह ज्ञान सुमिरन कर अतीन्द्रिय सुख में रहना है। ... कितनी अच्छी समझानी बाप बच्चों को देते हैं। ... बच्चे अपने ऊपर भी रहम करो और दूसरों पर भी रहम करना है।'' सा.बाबा 5.1.05 रिवा.

''यह अनादि-अविनाशी ड्रामा है। इसमें जीतते भी हैं और फिर हारते भी हैं। अब यह चक्र पूरा हुआ, अभी हमको घर जाना है। ... बाबा हमको रावण पर जीत पहनाते हैं। ऐसी-ऐसी बातें सवेरे-सवेरे उठकर अपने साथ करनी चाहिए।''

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

चिन्तन-धारा बहती जाये, तन-मन को हर्षाये।
जीवन को सुखद बनाये, जीवन में बहार लाये।

''इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं। ... जब दुनिया को बदलना होता है। ... कहते - राम की सीता को चुराई। इन बातों पर विचार किया जाता है। ये सब बहुत समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

चिन्तन चेतन आत्मा का स्वभाव है और आत्मा के उत्थान और पतन कारण है, इसलिए आत्मिक उन्नति के लिए चिन्तन के विषय में यथार्थता को जानना अति आवश्यक है।

परिभाषा

चिन्तन क्या है, उसकी परिभाषा क्या है?

आत्मा एक अदृश्य चेतन सत्ता है, जो मन-बुद्धि और संस्कारों सहित है। मन-बुद्धि-संस्कार तीनों सदा साथ-साथ रहते हैं, जिसके आधार पर आत्मा का अस्तित्व अनुभव में आता है। जब आत्मा जीव के साथ होती है तो आत्मा के निजी संस्कारों और देह के

सम्पर्क से वातावरण के बाह्य प्रकम्पन आत्मा को प्रभावित करते हैं, जिससे आत्मा में नये संकल्प अर्थात् प्रकम्पन उत्पन्न होने लगते हैं। नये प्रकम्पन उत्पन्न होने की ये क्रिया ही चिन्तन कहलाती है। संकल्पों की इस क्रिया की प्रतिक्रिया होती है, जो सतत चलती रहती है।

चिन्तन आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है क्योंकि आत्मा एक चेतन सत्ता है अर्थात् चिन्तन चेतन आत्मा का स्वभाविक गुण है। चिन्तन अर्थात् विचार-सागर मंथन के द्वारा ही आत्मा किसी बात के राज़ को समझने में समर्थ होती है।

चिन्तन अर्थात् जुगाली करना। बाबा हमको जो ज्ञान-घास खिलाता है, जो बुद्धि का भोजन मुरली में देता है, तन-मन के स्वास्थ्य के लिए जो माजून देता है, जो कार्य देता है, उस पर विचार-सागर मंथन करके उसे हजम करना, उसको समझना, उसको धारण करना, उसको सफलतापूर्वक सम्पन्न करना और उससे अन्य आत्माओं को भी लाभान्वित करना हमारा परम कर्तव्य है। ज्ञान के भिन्न बिन्दुओं पर विचार करके ज्ञान के नये-नये राज़ों को समझना ही मनन-चिन्तन कहलाता है। ज्ञान के गुह्य राज़ों को समझने के लिए ये चिन्तन अति आवश्यक क्रिया है, जिसके लिए बाबा नित्य मुरलियों में हम सबको प्रेरित करता रहता है।

चिन्तन-धारा अर्थात् ज्ञान-सागर मंथन

''सब कुछ इन माताओं के अर्पण कर दिया। ... यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। जैसे यह बाबा सवेरे उठकर विचार सागर मंथन करते हैं, बच्चों को भी फॉलो करना है''

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

यदि हम अपने लक्ष्य और कर्तव्य के प्रति जागरूक हैं, उसके महत्व को समझते हैं तो उसमें हमारी रुचि अवश्य होगी और उसकी सिद्धि के लिए हमारा विचार अवश्य चलेगा

कर इस जीवन की और इस ज्ञान की सत्यता को अनुभव करो और उसक सुख अनुभव करो।

Q. अभी के पुरुषार्थ से 21 जन्मों की राजाई कैसे और क्यों मिलती है?

सतयुग की स्थूल राजाई तो होती ही है लेकिन 21 जन्मों तक हम सोल-कान्शस रहते हैं, जिससे आत्मा का अपनी इन्द्रियों पर शासन होता है, जिसके फलस्वरूप प्रकृति भी दासी होती है। ये फल अभी जो सोल-कान्शस रहने का पुरुषार्थ करते, उसका ही फल वहाँ चलता है।

''पुरुषार्थ का समय ही अभी है। दुनिया में किसको पता नहीं है कि 21 जन्मों के लिए राजाई कैसे मिलती है। ... दिन-रात अपनी कमाई का चिन्तन रखना पड़े।''

सा.बाबा 30.12.06 रिवा.

कुछ लोगों का मन्तव्य है कि प्रश्न करना अच्छा नहीं है अर्थात् बाबा जो सुनाता है, उसके सम्बन्ध में कब कोई प्रश्न नहीं करना चाहिए या उठना चाहिए। परन्तु हमारी बुद्धि में इस सत्य का ज्ञान रहे कि प्रश्न भी दो प्रकार के होते हैं। एक होते हैं सन्देह के कारण उठने वाले प्रश्न और दूसरे होते हैं किसी बात या प्वाइन्ट्स को अच्छी रीति समझने के लिए प्रश्न अर्थात् उसके गुह्य रहस्य को स्पष्ट करने के लिए प्रश्न। दोनों में रात-दिन का अन्तर है। किसी बात को समझने के लिए प्रश्न उठना खराब नहीं है परन्तु बाबा के महावाक्यों में सन्देह उत्पन्न होना खराब है। किसी बात को समझने के लिए प्रश्न न पूछना तो अन्धश्रृद्धा हो जाती है, जिसके लिए बाबा सदा मना करते हैं। बाबा कहते हैं - तुमको अन्धश्रृद्धा में नहीं रहना है। हर बात को अच्छी रीति समझेंगे और धारण करेंगे, तब उसका सुख अनुभव होगा। इसलिए हमको इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि हमको क्या प्रश्न करने हैं और क्या नहीं करने हैं।

विभिन्न परिस्थितियों के लिए बाबा की श्रीमत

Q. क्या वर्तमान में यज्ञ-व्यवस्था एक मत की ओर अग्रसर है? यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो क्यों और कैसे? ऐसे में हमारा कर्तव्य क्या है? We are moving towards unity or diversity? or both tendencies going on?

Q. स्वर्ग है वण्डर आफ दि वर्ल्ड, उसको बनाने वाले नरक वाले मनुष्य होंगे या स्वर्ग वाले होंगे?

Q. सतयुग-त्रेता के कर्म-फल-महसूसता और द्वापर-कलियुग के कर्म-फल-महसूसता और संगमयुग के कर्म-फल-महसूसता में क्या अन्तर है?

Q. यथार्थ ईश्वरीय सम्पत्ति क्या है?

Q. निश्चयबुद्धि विजयन्ति का भाव क्या है?

Q. जीवन में सच्चा सुखी कौन है और कौन रह सकता है?

Q. राधे-कृष्ण कब जन्म लेंगे? सतयुग में या संगमयुग पर?

Q. चिन्तन क्यों और क्या? अर्थात् चिन्तन क्यों होता है और चिन्तन किसका करना चाहिए?

Q. क्या परमात्मा कोई चिन्तन करता है या परमात्मा का किसी बात पर चिन्तन चलता है?

Q. निश्चिन्त और शुभ चिन्तन में क्या अन्तर है?

Q. चिन्तनधारा सतत और सही दिशा में बहती रहे, उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

Q. चिन्तन आत्मा का स्वभाव है। मनुष्य के चिन्तन पर किन-किन बातों का प्रभाव होता है और मनुष्य के चिन्तन का जड़-जंगम प्रकृतियों पर क्या प्रभाव होता है?

Q. क्या तुम भविष्य के दिलासे पर जी रहे हो या वर्तमान जीवन की परम-प्राप्तियों की अनुभूतियों में जी रहे हो?

इस सत्य पर विचार करो अर्थात् वर्तमान जीवन और भविष्य जीवन की प्राप्तियों, गुण-धर्मों पर विचार करो। वर्तमान जीवन भविष्य जीवन से पद्मापदम गुणा श्रेष्ठ है और सारे कल्प का फूल है। इस जीवन जैसा सुख त्रिलोक्य और त्रिकाल में कहाँ भी नहीं है। इस सत्य को जानकर इस जीवन का परम सुख अनुभव करो और कराओ। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जिसका यथार्थ ज्ञान और अनुभव अभी ही हो सकता है। मनन-चिन्तन

क्योंकि आत्मा चेतन है, चिन्तन उसका मूल स्वभाव है। यदि मन में शुभ चिन्तन, ज्ञान का चिन्तन नहीं होगा तो अवश्य ही व्यर्थ और अशुभ चिन्तन होगा, जो आत्मा की स्थिति को प्रभावित करेगा और आत्मा जाने-अन्जाने पतन की ओर चली जायेगी। क्योंकि व्यर्थ और अशुभ चिन्तन से आत्मा का पतन होता है और शुभ चिन्तन, ज्ञान चिन्तन से आत्मा की उन्नति होती है अर्थात् आत्मा की चढ़ती कला होती है।

जो भी विचार-सिद्धान्त-बात बाह्य वातावरण से देखने, सुनने, स्पर्श करने से जीवात्मा के अन्दर आती है, उस पर उसका चिन्तन अवश्य चलता है, उसके विषय में बुद्धि सोचती है, निर्णय करती है। उस निर्णय में आत्मा का अपना ज्ञान, निश्चय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यथार्थ निर्णय करने के लिए आत्मा में यथार्थ ज्ञान अर्थात् सत्यता का ज्ञान होना चाहिए। यथार्थ ज्ञान क्या है, वह भी समझ की बात है। यथार्थ ज्ञान वह है, जो ज्ञान सागर परमात्मा की मुरली, श्रीमत से प्रमाणित हो। जो ज्ञान परमात्मा के महावाक्यों अर्थात् मुरली से प्रमाणित होगा, वही आत्मा की उन्नति का आधार होगा अर्थात् आत्मा की चढ़ती कला का आधार बनेंगा।

''ऐसे-ऐसे विचार-सागर मंथन करना है। जो करेंगे सो पायेंगे। खुशी में भी वे ही आयेंगे और दूसरों को भी खुशी में वे ही लायेंगे, जो विचार-सागर मन्थन करते होंगे।... तुम बच्चे जानते हो, यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह भी कोई को याद रहता है, कोई को भूल जाता है। यह भी याद रहे तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। ... जो बहुतों को रास्ता बताते हैं, उनको खुशी बहुत होती है।''

सा.बाबा 15.1.04 रिवा.

''अगर गाय न उगारे, उसका मुख न चले तो समझना चाहिए गाय बीमार है। यह भी ज्ञान का मंथन अगर नहीं करते तो गोया रोगी बीमार हो ... अनहेल्दी हो।''

सा.बाबा 6.12.69 रिवा.

''सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खज़ाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों के प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं। शुभ-चिन्तक अर्थात् सर्व ज्ञान-रत्नों से भरपूर।''

अ.बापदादा 10.11.87

मनुष्य अपने वातावरण की उपज है अर्थात् वह जिस वातावरण में रहता है, उसमें जो वृत्तियां और वायब्रेशन होते हैं, वे उसके मन-बुद्धि को प्रभावित करते हैं, जिससे उसका चिन्तन प्रभावित होता हैं और जैसा मनुष्य का चिन्तन होता है, उसके अनुरूप ही उसका विकास होता है अर्थात् उसका उत्थान या पतन होता है।

मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन के और सामूहिक जगत के उत्थान-पतन में, मनुष्य के सुख-दुख में उसके चिन्तन की अहम् भूमिका है। हमारा जीवन सदा सुखमय हो, उसके लिए हमारा चिन्तन सदा शुभ हो। हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, इसके लिए हमारा लक्ष्य दृढ़ और उसके अनुरूप साधन-सामग्री परमावश्यक है। यदि हम ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वरीय कर्तव्य के महत्व को अनुभव करें तो हमारा चिन्तन सदा शुभ रहेगा और सदा हमारी चढ़ती कला रहेगी। परमात्मा ज्ञान का सागर है और इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, उसने हमको इस विश्व-नाटक के अनेक राज़ों का ज्ञान दिया है, उनके महत्व को समझकर, उनमें नीहित गुह्य रहस्य को समझने के लिए उन पर चिन्तन करना अति आवश्यक है। उन सभी राज़ों पर चिन्तन करके स्वयं भी उनके सुख को अनुभव करना और अन्य आत्माओं के लिए भी मार्ग प्रदर्शन करना, सहयोग करना, उस रहस्य को समझना और समझाना हर ब्राह्मण आत्मा का परम कर्तव्य है।

मनुष्य अपनी स्थूल व सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से जो कुछ ग्रहण करता है, उसका उसके चिन्तन पर गहरा प्रभाव होता है अर्थात् उस पर उसका चिन्तन अवश्य होता है और वह चिन्तन उसके कर्मों को प्रभावित करता है। मनुष्य जो देखता, सुनता, स्पर्श करता, पठन-पाठन करता है, वह उसके अन्त:पटल पर अंकित हो जाता है और बाद में वही उसकी स्मृति में आता है और उस पर उसका जाने-अनजाने चिन्तन होता है, जो उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है। मनुष्य जिस वातावरण में रहता है, उसमें नीहित प्रकम्पन (Vibrations) आत्मा को प्रभावित करते हैं। हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, हमारी सदा चढ़ती कला हो, उसके लिए हम अपने लक्ष्य पर सदा दृढ़ रहें और हर व्यक्ति और

करता है? यदि करता है तो कैसे करता है?

Q. विकार में जाने से पाप-कर्म की प्रक्रिया क्या है, उसका आत्मा पर प्रभाव कैसे होता है?

Q. पवित्रता का भाव-अर्थ क्या है? क्या ब्रह्मचर्य का पालन ही पवित्रता है।

Q. जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है, इसका भाव-अर्थ क्या है?

Q. किस बात की स्मृति रहे तो कोई चिन्ता और व्यर्थ चिन्तन नहीं हो?

Q. अहंकार-हीनता (**Superiority inferiority**) दोनों आत्मा के बड़े शत्रु हैं, इनसे मुक्त होने का साधन क्या है? अहंकार-हीनता है क्या?

Q. आत्मा का अभीष्ठ कर्तव्य क्या है?

Q. बाबा को प्रत्यक्ष करने का आधार क्या है?

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या और क्यों है तथा सबसे निकृष्ट सुख क्या है और क्यों है?

Q. भक्ति से आधा कल्प रात और ज्ञान से आधा कल्प दिन होता है। ज्ञान कब होता है और दिन-रात कब होते हैं?

Q. आलस्य, अलबेलापन और जीवनमुक्ति की निश्चिन्त स्थिति में क्या अन्तर है?

Q. यथार्थ जीवनमुक्ति स्थिति कब, कहाँ, कैसे और क्यों?

Q. परमात्म प्यार और परमात्म वर्सा कब, कहाँ, कैसे और क्यों?

Q. आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के किन अटल सत्यों की धारणा हो तो ये जीवन परमानन्दमय अनुभव हो?

Q. ईश्वरीय विधि-विधान क्या है?

Q. अहंकार क्या है, हीनता क्या है, यथार्थ क्या है?

Q. कैसी स्थिति हो जो ज्ञान की यह सब बातें रियलाइज कर सकें?

Q. संस्कार कितने प्रकार के होते हैं?

Q. निश्चय बुद्धि और सुन्दर-सुखमय मृत्यु का आधार क्या है?

Q. निश्चयबुद्धि और न्याय प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है?

Q. देह से न्यारी स्थिति में स्थित होने और परमधाम तथा स्वर्ग की स्मृति करने में क्या अन्तर है?

Q. क्या दैवी घराने की आत्मायें भी विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा सताई जायेंगी?

Q. समर्पित जीवन की मर्यादा और अन्ध-श्रृद्धा में क्या अन्तर है?

Q. आत्मा पर माया का वार क्यों होता है?

Q. वर्तमान विश्व उन्नति के पथ पर है या पतन के पथ पर है? यदि उन्नति के पथ पर है तो कैये और यदि पतन के पथ पर है तो कैसे?

आरम्भ होता है या सतयुग के लिए यहाँ से हिसाब-किताब बनाकर जाते हैं?

Q. स्वर्ग भारत में ही होता है, इसका अर्थ क्या है?

Q. क्या ये सत्य है या किंवदन्ति है?

1. एक मरने वाले व्यक्ति को कांच के हवा-प्रूफ बॉक्स में बन्द करके रखा और जब वह मरा तो उसकी आत्मा के बाहर निकलने से कांच क्रेक हो गया।

2. जापान के माओ धर्म वालों ने ... परमात्मा का फोटो खीचा, उसमें स्टार आया। - रमेश भाई का लेख मार्च **04**

Q. परमात्मा की यथार्थ याद कब, कहाँ और कैसे अर्थात् परमात्मा को परमधाम में याद करना यथार्थ है या ब्रह्मा तन में याद करना है?

Q. परमात्मा की याद के साथ ब्रह्मा बाबा को याद करना यथार्थ है या नहीं?

Q. अनेक दुर्घटनाओं को हम विचार करें तो प्रश्न उठता है कि क्या परमपिता परमात्मा हमको उन दुर्घटनाओं से बचा सकता है या नहीं या क्यों नहीं बचाया? यदि वह हमको उनसे नहीं बचा सकता है तो हम परमात्मा को क्यों याद करें?

Q. परमात्मा सर्व आत्माओं अर्थात् चाहे वे किसी भी योनि की हों, सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है या केवल मनुष्यात्माओं का ही बाप, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है?

Q. विश्व-स्तरीय शक्ति (**Cosmic energy**) क्या है?

Q. प्राय: कई भाई-बहनें कहते हैं ज्ञान के विस्तार में क्या जाना है, बाबा कहते हैं बाबा को याद करना है, जिससे धारणा अच्छी हो। अब प्रश्न उठता है कि धारणा क्या चीज है, धारणा का भाव-अर्थ क्या है?

Q. बाबा ने कहा है पवित्रता की धारणा अच्छी होगी तो योग अच्छा लगेगा और योग अच्छा होगा तो ज्ञान की धारणा अच्छी होगी, दैवी गुणों की धारणा करनी है। तो धारणा शब्द का अर्थ क्या है?

Q. जो आत्मायें यज्ञ की स्थापना के समय आई और बाद में बेगरी पार्ट आदि के कारण चली गई, वे अधिक भाग्यशाली कही जायेंगी या जो बाद में आई और अन्त तक यज्ञ सेवा में रहेंगी, वे अधिक भाग्यशाली कही जायेंगी?

Q. जीवन की परम-प्राप्ति क्या है?

Q. ये संगमयुगी जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण, परमानन्दमय है, सभी वेद-पुराण, धर्म-ग्रन्थ इसकी गौरव-गाथा से भरे हुए हैं, ये सदा परमानन्दमय अनुभव हो, इसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

Q. क्या विनाश के समय सृष्टि में जलमई होगी?

Q. जीते जी मरने का अर्थ क्या है?

Q. क्या एक आत्मा का संकल्प और वायब्रेशन दूसरी आत्मा के संकल्प और विचारों को प्रभावित

घटना के प्रति हमारा दृष्टिकोण शुभ होना परमावश्यक है। इसके लिए इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान परमावश्यक है। इसके लिए ही परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है।

जैसे नदी की धारा सदा बहती रहती है तो जल शुद्ध रहता है और जब वही जल बहना बन्द हो जाता है तो वह गन्दा हो जाता है। ऐसे ही चिन्तन-धारा सतत बहती रहे और ये सदा शुभ और प्रगतिशील हो, यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ का लक्षण है। पानी पहाड़ों पर बरसता है और वह सतत सागर की तरफ बहता रहता है परन्तु उसको ऊपर चढ़ाने के लिए बांध बांधना पड़ता, पम्प लगाना पड़ता है। ऐसे ही मनुष्य की चिन्तन धारा बहती तो रहती है लेकिन जब तक परमात्मा इस धरा पर न आये और वह इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान न दे तब क वह गिरती कला में होती है। चिन्तन को चढ़ती कला में ले जाने के लिए यथार्थ पुरुषार्थ करना होता है, जिसके लिए ही परमात्मा आकर हमको यथार्थ ज्ञान देते हैं और योग सिखलाते हैं। परमात्मा आकर हमारे चिन्तन की गति बदल देते हैं अर्थात् जो गति पतनोन्मुख थी उसको उत्थानोन्मुख कर देते हैं, चढ़ती कला की ओर कर देते हैं।

''धर्म की स्थापना के लिए धक्के तो खाने ही पड़ते हैं। बुद्धि में यह रहना चाहिए कि अब यह नाटक पूरा होता है, हमको अपने घर वापस जाना है। फिर हमारा नये सिर पार्ट शुरू होगा। यह कमाई है चुपचाप करने की।''

सा.बाबा 30.3.07 रिवा.

चिन्तन का जीवन में महत्व

चिन्तन के लिए बाबा कहते हैं - जैसे गाय उगारती अर्थात् जुगाली नहीं करती तो समझते हैं - गाय बीमार है। ऐसे ही जो ज्ञान का चिन्तन नहीं करते, दूसरों की सेवा नहीं करते, दूसरों को सुनाने से डरते हैं तो बाबा समझते हैं - उनकी बुद्धि में ज्ञान पूरा बैठा नहीं है। ज्ञान को चिन्तन करने से ही नशा चढ़ेगा, खुशी होगी और वह खुशी औरों को भी देने का उमंग आयेगा। इसलिए बाप ने जो ज्ञान दिया है, उसको बार बार चिन्तन करना चाहिए।

जब चिन्तन करेंगे अर्थात् बाप जो ज्ञान दूध देते हैं, उसका मन्थन करेंगे तो उससे मक्खन निकलेगा, जिस मक्खन से आत्मा शक्तिशाली बनेंगी। जब अपनी बुद्धि में ज्ञान अच्छी रीति बैठ जायेगा, तो वह दूसरों को सुनाने के बिना रह नहीं सकेगा।

आत्मा के उत्थान और पतन में उसके चिन्तन का महत्वपूर्ण स्थान है अथवा कहें कि आत्मा के उत्थान और पतन का मूलाधार, उसका चिन्तन ही है। सतयुग से कलियुग अन्त तक आत्मा का चिन्तन भौतिक पदार्थों और देहधारी व्यक्तियों तक ही सीमित रहता है, जो निरन्तर पतनोन्मुख हैं, इसलिए आत्मा का उनके अनुरूप निरन्तर पतन होता रहा है। भक्ति-मार्ग में भी आत्मा अपने जीवन की उन्नति के लिए पुरुषार्थ करती है और अपनी चिन्तन-धारा को आध्यात्मिकता की दिशा में बदलने का पुरुषार्थ करती है परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने के कारण अन्ततः वह भौतिकता में ही बदल जाता है, जिसके फलस्वरूप सतत आत्मिक शक्ति का ह्रास ही होता जाता है। संगम युग पर ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आत्माओं को अपने आत्मिक स्वरूप का, स्वयं का और इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे आत्मा की चिन्तन-धारा परिवर्तित होती है और आत्मा भौतिक चिन्तन से ऊपर उठकर इन परा-भौतिक तथ्यों के चिन्तन का पुरुषार्थ करती है, जो आत्मा के उत्थान का एकमात्र आधार है। इसलिए बाबा सदैव हमको अपने महावाक्यों में प्रेरणा देते हैं कि बच्चे इस ज्ञान का चिन्तन करो, अपने आत्मिक स्वरूप का चिन्तन करो।

कलियुग के अन्त में सारी प्रकृति तमोप्रधान होती है, आत्मा भी देहाभिमान के वश होती है इसलिए आत्मा को अपनी चिन्तन-धारा को बदलने में ये तमोप्रधानता अर्थात् 5 विकार अनेक बाधायें पैदा करते हैं, आत्मा को भ्रमित करते हैं क्योंकि तमोप्रधानता आत्मा के संस्कारों में घर कर गई है। अभी बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसके आधार पर हम जानते हैं और अनुभव करते हैं कि ये तमोप्रधान दुनिया बदलनी ही है और हमारा पुरुषार्थ अवश्य ही सफल होना है, इसलिए इस पुरुषार्थ में कभी भी हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। मनुष्यात्मा अपने दृढ़ संकल्प और सतत पुरुषार्थ से अपनी चिन्तन-धारा को परिवर्तन कर

Q. सुख-दुख का निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है?

Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

Q. यथार्थ पुरुषार्थ का आधार क्या है?

Q. सम्पूर्णता का दर्पण क्या है?

Q. सम्पन्नता का आधार क्या है?

Q. ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा का दर्पण क्या है?

Q. आत्मा का किसी भी रूप में शरीर धारण करने का आधार क्या है?

Q. आत्मा का किसी परिवार विशेष में जन्म लेने का आधार क्या है?

Q. आत्मा का इस धरा पर प्रथम बार किसी परिवार में जन्म लेने का आधार क्या है?

Q. आत्मा परमधाम से जब सतयुग में आयेगी तो वहाँ स्थिति क्या होगी और क्यों होगी?

Q. इस परम दुख की दुनिया में क्या स्मृति रहे, जिससे जीवन में परम सुख की अनुभूति हो?

Q. सुख-शान्ति हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है। सुख-शान्ति का आधार क्या है और सुख-शान्ति का दर्पण क्या है?

Q. ऐसा क्यों, जबकि सभी धर्म वाले पहले पावन फिर पतित बनते हैं?

Q. जीवन की परम-प्राप्ति क्या है?

Q. बाबा बच्चों से क्या चाहता है?

Q. बाबा हमारे जीवन में परिवर्तन चाहते हैं परन्तु परिवर्तन क्या, क्यों और कैसे हो? क्या हमारे परिवर्तन से परमात्मा का कोई स्वार्थ है? परिवर्तन हुआ, उसकी पहचान क्या है?

Q. ड्रामा को समझते हुए भी क्या है, क्यों है, ऐसी घटनायें क्यों होती है, ऐसे प्रश्न क्यों उठते हैं?

Q. यथार्थ योग की स्थिति क्या है?

Q परमात्मा को याद की आवश्यकता क्यों?

Q. जीवन की सफलता और सुखमय जीवन का सहज मार्ग क्या है?

Q. अमरत्व का क्या तात्पर्य है और काल पर जीत कैसे पायी जा सकती है?

Q. बेहद के बाप परमपिता परमात्मा की यथार्थ में प्रापर्टी क्या है? ईश्वरीय वर्सा क्या है और कब प्राप्त होता है?

Q. दुख-अशान्ति से छूटने का यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

Q. किस सत्य का ज्ञान रहे तो हमारे सम्बन्ध सदा मधुर रहें?

Q. किस सत्य का ज्ञान रहे तो पुरुषार्थ सदा तीव्रगति से चलता रहे?

Q. हम सारा हिसाब-किताब समाप्त करके परमधाम जाते हैं और सतयुग से नया हिसाब-किताब

Q. सेवा हमारे जीवन का मुख्य अंग है, सेवा में मनवांच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

Q. क्या शास्त्र लिखने वालों ने परमात्मा से सम्मुख में ये ज्ञान सुना होगा?

Q. बाबा कहता ज्ञान में चलने वाले अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया खा लेती है - इसका कारण क्या है?

Q. बाबा ने जो ज्ञान दिया है, रास्ता दिखाया है, वह मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव कराने वाला है, फिर भी चाहते हुए भी वह अनुभव क्यों नहीं कर पाते हैं?

Q. यथार्थ आध्यात्मिकता क्या है?

Q. आध्यात्मिक शक्ति का स्वरूप क्या है?

Q. जीवन में दुख-अशान्ति का कारण क्या है और दुख-अशान्ति की प्रक्रिया आत्मा पर कैसे प्रभावित होती है? दुख-अशान्ति की पहेली का हल क्या है? दुख-अशान्ति की पहेली का हल क्या है?

Q. मृग-मरीचिका या रुण्य के पानी का हमारे ब्राह्मण जीवन से क्या भाव-अर्थ या तुलना है?

Q. बाबा हमारे जीवन में परिवर्तन चाहते हैं परन्तु परिवर्तन क्या, क्यों और कैसे हो? क्या हमारे परिवर्तन से परमात्मा का कोई स्वार्थ है? परिवर्तन हुआ, उसकी पहचान क्या है?

Q. पावन बनने का भाव-अर्थ क्या है?

Q. क्या हमारा ज्ञान मनोविज्ञान है?

Q. मनोविज्ञान और आध्यात्मिकता में क्या अन्तर है?

Q. क्या ये कहा जा सकता है कि हमारे जैसा ही ज्ञान दूसरे धर्मशास्त्रों, धर्मों में भी है या हमारा ज्ञान भी दूसरे धर्मों, धर्मशास्त्रों जैसा है?

Q. अच्छे पुरुषार्थी की निशानी क्या है, उसका कर्तव्य क्या है?

Q. वर्तमान विश्व की चकाचौंध और यज्ञ में भी साधन और सत्ता की दौड़ को देखते हुए एक अच्छे पुरुषार्थी का क्या कर्तव्य है?

Q. सुख-शान्ति आनन्द कहा जाता है? तो आनन्द क्या है, उसकी अनुभूति क्या है और कब-कहाँ होती है?

Q. क्या हम परमात्मा की कोई मदद करते हैं या परमात्मा को हमसे किसी मदद की आपेक्षा है?

Q. एवर-रेडी का भाव-अर्थ क्या है, वह स्थिति क्या है?

Q. फॉलो फादर क्या है और कैसे?

Q. स्थापना-विनाश की प्रक्रिया का दर्पण क्या है?

Q. विनाश कब और कैसे? विनाश को देखने के लिए कैसे शक्ति धारण करें?

सकता है अर्थात् पतनोन्मुख से उत्थानोन्मुख कर सकता है। दृढ़ संकल्प से पुरुषार्थ करने वाले अपने पुरुषार्थ में सफल अवश्य होते हैं।

अपनी आत्मिक उन्नति के अभिलाषी आत्मा को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि उसका चिन्तन सदा शुभ हो। इसके लिए आत्मा को दृढ़ निश्चय से अपने जीवन व्यवहार, पठन-पाठन, वातावरण, संग आदि का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

चिन्तन एक मानसिक क्रिया है, जो औषधि का भी काम करती है अर्थात् जिससे जीवात्मा के अनेक रोगों का निदान होता है, तो एक मानसिक रोग भी है अर्थात् जीवात्मा में अनेक रोग उत्पन्न कर दुख का कारण भी बनता है। स्वस्थ चिन्तन जीवात्मा के लिए एक औषधि का काम करता है, जिससे जीवात्मा के अनेक रोगों का निदान होता है। जब आत्मा यथार्थ ज्ञान होता है तो उसका चिन्तन स्वस्थ होता है और आत्मा सुख का अनुभव करती है। ऐसे ही व्यर्थ-चिन्तन, पर-चिन्तन एक मानसिक रोग है, जो दैहिक रोगों को भी जन्म देता है। इस सत्य को विचार करने के बाद ऐसे ही कहेंगे कि शुभ-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन अमृत है, जो आत्मा को अमृत्व प्रदान करता है और पर-चिन्तन, व्यर्थ-चिन्तन विष है, जो आत्मा के मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय का कारण बनता है।

जब आत्मा अज्ञानतावश देहाभिमान में होती है तो उसमें अनेक मानसिक रोग पैदा हो जाते हैं, जिसके कारण उसका चिन्तन रोगी हो जाता है अर्थात् जीवात्मा में व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन, विषय-चिन्तन आदि मानसिक रोग पैदा हो जाते हैं, जिसके कारण आत्मा आत्मिक स्वरूप में और दैहिक स्वरूप में दिनोंदिन रोगी और महा-रोगी बनती जाती है और वह पतनकारी चिन्तन उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है और आत्मा को परम सुख से वंचित कर उसके परम दुख का कारण बन जाता है क्योंकि आत्मा में अनेकानेक दैहिक और मानसिक रोग पैदा हो जाते हैं।

परमात्मा को वैद्यराज भी कहा जाता है, वह संगमयुग पर आकर यथार्थ ज्ञान देकर आत्माओं की चिन्तन-धारा को बदल देते हैं अर्थात् व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन, विषय चिन्तन से मन-बुद्धि को हटाकर आत्म-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन में लगा देते हैं, जिससे आत्मा पुन: स्वस्थ हो जाती है और परम सुख, परम शान्ति एवं परमानन्द का अनुभव करती है।

परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान, गुण, शक्तियों का चिन्तन हमारे आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए परमावश्यक है परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि हमारी अन्तिम मंजिल कर्मातीत स्थिति अर्थात् चिन्तन-मुक्त स्थिति है, जिसका अभ्यास भी परमावश्यक है। हमको अपने कार्य-व्यवहार में व्यस्थ होते समय या ज्ञान आदि के चिन्तन के समय बीच-बीच में निर्संकल्प स्थिति अर्थात् बिन्दुरूप स्थिति अर्थात् बीजरूप स्थिति अर्थात चिन्तन-मुक्त स्थिति में स्थित होने का अभ्यास भी अवश्य करना चाहिए। पुरुषार्थ ऐसा करना है कि उस समय हमारा ज्ञान का भी चिन्तन न चले। इसके लिए ही बाबा मुरलियों बिन्दुरूप स्थिति के अभ्यास के लिए प्रेरणा देता है। अव्यक्त बापदादा भी कभी मुरली के बीच में और कभी मुरली के अन्त में बिन्दु रूप स्थिति का अभ्यास कराता है और एक सेकेण्ड में उस स्थिति में स्थित होने की ड्रिल कराता है। इस ड्रिल के महत्व को समझना और उसका सतत अभ्यास करना भी अति आवश्यक है।

''मन को यह ड्रिल करानी है। एक सेकेण्ड में आवाज़ में आना और एक सेकेण्ड में आवाज से परे हो जाना। एक सेंकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आयें और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित हो जायें। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है।''

अ.बापदादा 16.10.69

''न्यारे तब हों सकेंगे जब जो कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटेचमेन्ट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटेच नहीं हो सकेंगे।... क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपनी तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे।... अगर इस सब्जेक्ट में नम्बर कम हैं तो

Q. क्या भौतिक साधन-सम्पत्ति आत्मा को स्थाई सुख-शान्ति दे सकते हैं?

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या है?

Q. विनाश की प्रक्रिया कब, क्यों और कैसे?

Q. क्या आप चाहते हैं कि समय से पहले जल्दी विनाश हो?

Q. बाबा ने कहा पहले आये वे ही पहले घर जायेंगे - इस सत्य को समझ कर विचार करो कि ये सब कब और कैसे होगा? कब एटमिक वार होगी?

Q. क्या ड्रामा के यथार्थ ज्ञान से कोई पुरुषार्थी पुरुषार्थहीन हो सकता है?

Q. जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति क्या है?

Q. क्या हम किसी को ये कह सकते हैं कि अभी परमात्मा ने हमको ये बात नहीं बताई है?

Q. यथार्थ योग की स्थिति क्या है?

Q. ज्ञान-योग से पुराने स्वभाव-संस्कार, विकर्मों का बोझ खत्म होता है? यदि हाँ तो कहाँ तक और कैसे, यदि नहीं तो क्यों?

Q. मुक्ति-जीवनमुक्ति आत्मा की मूलभूत प्यास और हर आत्मा के जीवन का अभीष्ठ लक्ष्य है परन्तु मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कब, कहाँ और कैसे सम्भव है?

Q. पवित्र आत्मा की क्या पहचान है अर्थात् पवित्रता की यथार्थ धारणा क्या है?

Q. समय और संकल्प आत्मा के श्रेष्ठ खजाने हैं, उन खजानो को जमा करने की विधि क्या है और सिद्धि क्या है?

Q. अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र हैं, दोनों के सन्तुलन वाले की जीवन रूपी गाड़ी सफलतापूर्वक अपनी मंजिल पर पहुँच सकती है परन्तु ये संतुलन स्थिर कैसे हो?

Q. अहंकार और हीनता आत्मा के बड़े शत्रु हैं, जो जाने-अन्जाने आत्मा को पतन के गर्त में गिरा देते हैं परन्तु किस सत्य की स्मृति और धारणा हो तो जीवन में अहंकार और हीनता न आये?

Q. तीनों लोकों और तीनों कालों में सबसे सुन्दर, सुखमय, मन-भावन समय और स्थान कौनसा है, क्यों है और कैसे है?

Q. क्या सतयुग में सतो-रजो-तमो तीनों गुण होते हैं?

Q. आत्मायें इस रंगमंच पर आकर पार्ट बजाती हैं। पार्ट बजाने के लिए देह की आवश्यकता होती है तो आत्माओं को पार्ट बजाने के लिए देह धारण करने की कितनी विधियां हैं, जिनसे आत्मा पार्ट बजाने के लिए देह धारण करती है?

Q. परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के सर्व रहस्य हमारे सामने प्रत्यक्ष हैं, उन सब पर विचार करके अपने को चेक करो कि वे सब हमारे अनुभव, निश्चय और धारणा में हैं? यदि हैं तो हमारी अवस्था कैसी होनी चाहिए?

Q. बाप को प्रत्यक्ष करने का आधार क्या है?

Q. क्या जो यहाँ सर्व सुखों का अनुभव नहीं करता, इस जीवन से परेशान है, वह भविष्य जीवन में या सतयुग में सर्व सुखों का अनुभव कर सकता है?

Q. शुभ-भावना और शुभ-कामना तथा न्याय-प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है?

Q. क्या समर्थ और उत्तरदायी आत्मा को किसी आत्मा को पाप कर्म करते हुए देखकर, जानकर उसको साम-दाम-दण्ड-भेद से रोकना ही शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य है या करने देना शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य-पालन है?

Q. किन्ही दो व्यक्तियों के द्वारा किसी समान या समकक्ष पाप कर्म, विकर्म करने पर उनको समान दण्ड देना यथार्थ है या बड़े-छोटे, नये-पुराने, अपने निकट या दूर का भेद करके न्याय करना न्याय है?

Q. किसी पाप कर्म करने पर शुभ भावना, शुभ कामना, ड्रामा समझ कर छोड़ देना न्याय है या संगठन के हित को देखकर दण्ड देना न्याय है?

Q. यदि कोई न्याय अयुक्त प्रतीत होता है तो आवाज उठाना उचित है या ड्रामा समझकर आंखे बन्द कर लेना न्याय है, उचित है?

Q. प्राय: हम किसी भी बात को न जानते, न समझते हुए भी उसके विषय में अपना निर्णय दे देते हैं। वह निर्णय अपने मन में हो या शब्दों में हो - ये कहाँ तक यथार्थ है?

Q. सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की परख क्या है अर्थात् हमको जो ज्ञान मिला है, वही सत्य है, वह कैसे समझ सकते या किसको सिद्ध कर सकते हैं?

Q. मन्सा सेवा एवं मन्सा भोगना का स्वरूप क्या है?

Q. कैसी स्थिति हो जो ज्ञान की यह सब बातें रियलाइज कर सकें?

Q. ज्ञान की इन सब बातों को कौन धारण कर सकेंगे? क्या धारणा हो, जो ज्ञान की सब बातों की धारणा कर सकें?

Q. ज्ञान की हर प्वाइन्ट्स को शक्ति या शस्त्र के रूप में धारण करने के लिए क्या पुरुषार्थ है?

Q. इस पुरुषार्थी जीवन में सबसे अच्छी अवस्था क्या है?

Q. सतयुग में प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होगी तो वहाँ मनुष्यों की दिनचर्या क्या होगी?

Q. जीवन का प्रयोजन क्या है और ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन क्या है?

Q. यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

Q. यथार्थ पुरुषार्थ का आधार क्या है?

Q. सतोप्रधान पुरुषार्थ ज्ञान में आने के प्रारम्भिक काल में होता है या अन्त में शरीर छोड़ते समय?

Q. जीवन की सर्वोच्च सुख की स्थिति कब, कहाँ और कैसे है?

Q. क्या भारत या विश्व प्रजातन्त्र में सुखी-शान्त रह सकता है?

फाइनल नम्बर में आगे नहीं आ सकेंगे।'' अ.बापदादा 16.10.69

Q. चिन्तन क्या करना है और क्यों करना है?

चिन्तन चेतन आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है। मन में अच्छा या बुरा चिन्तन सदा चलता ही रहता है। वर्तमान जगत में देहाभिमान के वशीभूत आत्माओं का चिन्तन अधिकतर अशुभ अर्थात् बुरा ही चलता है, जिससे आत्मा कर्म भी अशुभ या विकर्म ही होते हैं, जिससे आत्मा की कलायें गिरती जाती है। अच्छे और चढ़ती कला के चिन्तन के लिए आत्मा को पुरुषार्थ करना पड़ता है, जो अभी कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर चलता है, जब आत्मा को परमात्मा द्वारा अपने आत्मिक स्वरूप का, परमात्मा के स्वरूप का और सृष्टि-चक्र का सत्य ज्ञान मिलता है, जिससे आत्मा की चढ़ती कला होती है। चिन्तन से ही आत्मा में ज्ञान की धारणा होती है, ज्ञान के नये-नये राज़ बुद्धि में स्पष्ट होते हैं और आत्मा में शक्ति आती है। शुभ चिन्तन से आत्मा को आन्तरिक खुशी होती है। चिन्तन से वे विचार तरंगों के रूप में वातावरण में प्रसारित होते हैं, जो अन्य आत्माओं को भी प्रभावित करते हैं और वे भी उसका सुखद अनुभव करते हैं। शुभ चिन्तन चिन्तक को इस जीवन में खुशी प्रदान करता है और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति भी प्रदान करता है, जिससे उसका भविष्य भी श्रेष्ठ बनता है। श्रेष्ठ चिन्तन अन्य आत्माओं को भी खुशी-शक्ति का अनुभव कराता है। शुभ चिन्तन से आत्मा अनेक प्रकार के व्यर्थ चिन्तन से बच जाती है। इसलिए परमात्मा की हम आत्माओं को मुख्य शिक्षा है - बच्चे, सदा स्व-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन, ज्ञान के चिन्तन में रहो। पर-चिन्तन पतन की जड़ है, स्व-चिन्तन उन्नति की सीड़ी है। पर-चिन्तन का त्याग कर, मन को स्व-चिन्तन में लगाओ।

ज्ञान के चिन्तन से आत्मा को ज्ञान के सत्य राज़ बुद्धि में स्पष्ट होते हैं, उनकी धारणा होती है, जिससे आत्मिक शक्ति का विकास होता है, आत्मा में निर्भयता आती है, आत्मा को खुशी की अनुभूति होती है और आत्मा को उन सत्यों को अन्यों के आगे स्पष्ट करने की शक्ति आती है, उसके लिए उमंग-उत्साह आता है। इसलिए बाबा कहते हैं - धन होगा तो दान देने का उमंग आयेगा,

वह दान करने के बिना रह नहीं सकेगा। जिसका दान करने का लक्ष्य होगा तो उसको दान करने का अवसर अवश्य मिलेगा। जिसके पास धन होता है और दान करने की इच्छा होती है तो वह गरीबों को ढूंढकर भी दान देता है।

विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो आत्मा को किसी भी प्रकार के चिन्तन या चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं है, कोई कारण नहीं है क्योंकि विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियमानुसार जो हुआ उसे टाला नहीं जा सकता है और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता है। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, जो हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसीलिए गायन है - बनी बनाई बन रही अब कछु बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये। परन्तु बिडम्बना यह है कि देहाभिमान के वशीभूत आत्मा चिन्तन और चिन्ता के बिना एक सेकेण्ड भी रह नहीं सकती है।

''पहले-पहले जब आत्मायें आती हैं तो पवित्र होने के कारण उनकी आत्मा वा शरीर को दुख मिल न सके क्योंकि उन पर कोई पाप है नहीं। ... हर एक बात पर विचार करना होता है। ... तुम जब यहाँ बैठते हो तो रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का स्वदर्शन चक्र फिराना चाहिए।'' सा.बाबा 29.9.04 रिवा.

''यह खेल है, इसमें एक सेकेण्ड का भी फर्क नहीं हो सकता है। ... बाप कहते हैं - चक्रवर्ती राजा बनना है तो चक्र फिराते रहो। इसमें सारा बुद्धि से काम लेना है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। ... जो सुना, उस पर मनन-चिन्तन करना है।''

सा.बाबा 30.9.04 रिवा.

इस विश्व-नाटक की यथार्थता को देखते हुए चिन्तन की कोई आवश्यकता नहीं है परनतु व्यर्थ चिन्तन तथा चिन्ता मुक्त होने के लिए, यथार्थ ज्ञान की धारणा के लिए आत्मा को चिन्तन करना अति आवश्यक है क्योंकि ड्रामानुसार आत्मा अपने मूल स्वरूप को भूल

कारण जिस मात-पिता के पास जन्म लेना है, उसके आधार पर बनते हैं?

Q. जो भी धर्मपिता ऊपर से आते हैं, उस समय उन्होंने गर्भ से जन्म तो लिया नहीं, जैसे ब्रह्मा बाबा का पहले से ही सूक्ष्म शरीर है तो उसका साक्षात्कार होता है, ऐसे धर्मपिताओं का साक्षात्कार कैसे होता है। जैसे मोहम्मद के लिए कहते हैं कि कोई फरिश्ता आता था और कुरान की आयतें सुनाकर जाता था?

Q. क्या परमपिता परमात्मा का स्वरूप परिवर्तन होता है, कभी प्यार का सागर हो, कभी न हो, कभी धर्मराज के रूप में हो ...? अर्थात् क्या उसका रूप परिवर्तन होता है या वह सदा एकरस है, हमको अपनी भावना और कर्मों अनुसार अनुभव होता है?

Q. क्या साधन-सम्पत्ति, पद की प्राप्ति ही जीवन की सफलता, जीवन का चरमोत्कर्ष है?

Q. क्या विश्व में सर्व आत्माओं को एक समान साधन-सम्पत्ति, सुविधायें प्राप्त होना सम्भव है? या किसको अधिक और किसको कम प्राप्त होना ये विविधता इस विश्व-नाटक में पक्षपातपूर्ण है?

Q. संगमयुगी ब्राह्मण जीवन सर्वोत्कृष्ट जीवन है, इसका क्या आधार और विशेषतायें क्या हैं?

Q. क्या ये ब्राह्मण जीवन इन्द्रिय सुखों और साधन-सम्पत्ति के संग्रह के लिए है?

Q. विश्व में अनन्त साधन-सुविधायें हैं। हमारे लिए क्या आवश्यक है, हमको क्या रखना चाहिए, क्या नहीं रखना चाहिए, हमारे लिए क्या कृत्य है और क्या अकृत्य है ... उसका निर्णायक बिन्दु क्या है?

Q. कर्मातीत स्थिति और विकर्माजीत स्थिति में क्या अन्तर है?

Q. मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

Q. क्या विनाश के समय हर योनि की कुछ आत्मायें बीज रूप में बचेंगी या मनुष्य और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही बचेंगी? या

Q. क्या सतयुग में हर योनि की आत्मायें बीजरूप में होगी या मनुष्यात्मायें और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही होंगी?

Q. क्या गीता का भगवान किसी लौकिक न्यायालय में सिद्ध होगा? या ये भी पुरुषार्थ की एक विधि है,जिसके द्वारा बाबा पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे सर्व को बाप का सन्देश मिले ?

Q. क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज ये निर्णय कर सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है?

Q. क्या वह समय आयेगा जब कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी लौकिक दुनिया में किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में जज बनेगा और उसके सामने गीता ज्ञान के विषय में केस हो और वह निर्णय दे कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार परमपिता परमात्मा शिव है?

Q. चाहते हुए भी स्व-परिवर्तन क्यों नहीं होता है?

Q. बाप को प्रत्यक्ष कौन करेंगे?

Q. हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या कोई व्यक्ति, सेन्टर, यज्ञ, परमात्मा हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी है? क्या हमको उनके ऊपर आधारित रहना चाहिए? या किसी दुख-दर्द के लिए उनको उत्तरदायी ठहराना चाहिए?

Q. क्या विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता किसी आत्मा को दोष दे सकता है?

Q. हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है, हमको इस जीवन में और क्या चाहिए?

Q. ब्राह्मण जीवन क्या है और क्यों है?

Q. विचार करो बाबा ने हमको क्या दिया है, हमारे पास क्या है और अब हमारा कर्तव्य क्या है? हम क्या कर सकते हैं और हमको क्या करना चाहिए? समय की पुकार क्या है और हम क्या कर रहे हैं?

Q. ये विश्व-नाटक क्या है, इसकी यथार्थता को जानते हुए हमारा कर्तव्य क्या है? क्या हमारे हाथों में है?

Q. क्या ये जीवन इन्द्रिय सुख-साधनों की प्राप्ति, उनके संग्रह, उनके उपभोग, उनकी प्राप्ति की खुशी मनाने के लिए ही है? क्या उनकी प्राप्ति की ये खुशी हमको अपने अभीष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति करायेगी?

Q. क्या विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता किसी आत्मा को दोष दे सकता है?

Q. ब्राह्मण जीवन को चोटी क्यों कहा गया है, इसका आधार क्या है?

Q. सारे ज्ञान का सार क्या है?

Q. क्या सतयुग में ये ज्ञान रहेगा कि मैं आत्मा भृकुटी में रहती हूँ?

Q. मृत्यु-विजय अर्थात् स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है?

Q. प्राय: संसार का हर प्राणी पुरानी देह का त्याग करने में भयभीत होता है। जब कि आत्मा अविनाशी है, जन्म और मृत्यु एक वस्त्र बदलना है, फिर जीवन के प्रति मोह क्यों, मृत्यु से भय क्यों?

Q. अभी स्वेच्छा से शरीर छोड़ने का पुरुषार्थ करते और सतयुग में स्वेच्छा से शरीर छोड़ते। उस समय अर्थात् सतयुग में शरीर छोड़ने के समय की स्थिति का निर्णायक बिन्दु **(Critaria)** क्या है?

Q. देह धारण करना और देह का त्याग करना जीवन की अपरिहार्य घटनायें हैं, जो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए अनिवार्य है फिर भी आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय क्यों?

Q. देह से न्यारे होने की प्रक्रिया क्या है, उसका अनुभव क्या है?

Q. क्या सभी जन्मों के सूक्ष्म फीचर्स, नेगेटिव फार्म में सूक्ष्म वतन में रहते हैं?

Q. परमधाम शान्ति की दुनिया से आत्मा को इस साकार लोक में लाने का आधार क्या है? परमधाम से आने वाली आत्मा के पहले जन्म के फीचर्स किस आधार पर बनते हैं। क्या सूक्ष्म शरीर जो परमधाम जाते समय होता है, वह सूक्ष्म वतन में विद्यमान रहता है, उसके आधार पर या संस्कार-स्वभाव के

देहाभिमान के वशीभूत हो गई है। परमात्मा को चिन्तन की कोई आवश्यकता नहीं है और न वह कभी चिन्तन करता है क्योंकि वह ज्ञान का सागर है, इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है। ब्रह्मा बाबा ने साकार में चिन्तन कर ज्ञान की धारणा की ओर अपने सम्पूर्ण स्वरूप अर्थात् फरिश्ता स्वरूप को पा लिया है, इसलिए अभी जब ब्रह्मा बाबा फरिश्ता स्थिति में है, उस स्थिति में उनको भी चिन्तन की कोई आवश्यकता नहीं है। हमको भी बाप के समान चिन्ता और चिन्तन मुक्त बनना है, उसके लिए हमको इस विश्व-नाटक के विभिन्न राज़ों को समझने और उनको धारण करने के लिए, आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए, बाप समान फरिश्ता बनने के लिए ज्ञान का, अपने आत्मिक स्वरूप का, परमात्मा के स्वरूप का चिन्तन करना ही पड़ेगा और करना ही चाहिए। चिन्तन ही ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा का एकमात्र आधार है। आत्मा की कर्मातीत स्थिति चिन्ता और चिन्तनमुक्त स्थिति है परन्तु उसको पाने के लिए चिन्तन परमावश्यक है। जब हम मुरली को ध्यान से पढ़ते हैं तो हमको पता चलता है कि ब्रह्मा बाबा का चिन्तन कैसा सतत और सदा प्रगतिशील था, जिसके आधार से उन्होंने कर्मातीत स्थिति को पाया। ऐसे ब्रह्मा बाप समान चिन्तन कर फॉलो फादर कर चिन्तन और चिन्ता मुक्त बनना ही संगमयुग का परम पुरुषार्थ है। ड्रामानुसार सतोप्रधान अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आता है और उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है इसलिए सतोप्रधान आत्मा को न चिन्तन करना पड़ता है और न उसको कोई चिन्ता होती है। इसलिए सतयुग-त्रेता युग में आत्मा चिन्ता और चिन्तन से मुक्त जीवनमुक्त है।

भगवानोवाच्य - पंखे फिरते हैं तो वातावरण को शीतल करते हैं, सबको सुख देते हैं। ऐसे ही तुम स्वदर्शन चक्रधारी होकर बैठते हो या रहते हो तो वातावरण को शुद्ध करते हो, जिससे खुद भी खुशी अनुभव करते हो और सबको खुशी देते हो।

हमारे पुरुषार्थ के आदर्श प्यारे ब्रह्मा बाबा हैं, जो सदा ज्ञान के चिन्तन में रहते थे और चिन्तन से मक्खन निकाल कर सब बच्चों को खिलाते थे,

मुरली में सुनाते थे। विष्णु को शेष-शैय्या पर टांग पर टांग रखकर लेटे हुए चिन्तन में मगन दिखाते हैं। वर्तमान में भी दादी जानकी जी को देखें तो उनको सदा ज्ञान के चिन्तन में देखते हैं और उनको सदा अपने चिन्तन की बात सबको सुनाने के उमंग में देखते हैं, जो उनके स्वस्थ और श्रेष्ठ जीवन का आधार है।

जीवन के स्थाई सुख-शान्ति के लिए हमारा चिन्तन सदा शुभ होना चाहिए। अपने लक्ष्य को सामने रख और ड्रामा की यथार्थता को जानकर हर दृष्य को पास करते जाना ही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है। अंशमात्र भी व्यर्थ चिन्तन न चले। चिन्तन सदा अपने अभीष्ठ लक्ष्य का ही हो परन्तु उसकी भी चिन्ता न हो, तब ही इस जीवन के सच्चे सुख का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं - तुमको अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं होना चाहिए अर्थात् स्वभाविक अटेन्शन रहे।

''बाबा के साथ ऐसी-ऐसी बातें करना चाहिए। तुम्हारी यह प्रैक्टिस होगी रात को जागने से। ... विचार सागर मंथन करके ज्ञान की प्वाइन्ट्स निकालते हैं। इस प्रैक्टिस से विकर्म भी विनाश होंगे, तन्दुरुस्त भी बनेंगे। जो पुरुषार्थ करेंगे, उनको फायदा होगा। ... विचार-सागर मंथन नहीं करेंगे, बाप को याद नहीं करेंगे, सिर्फ कर्म करते रहेंगे तो रात को भी वही ख्यालात चलेंगे।''

सा.बाबा 11.12.04 रिवा.

आत्मा का चिन्तन का आधार तो उसके अपने संस्कार और पूर्व संचित कर्म ही हैं परन्तु यह जगत परिवर्तनशील है, जगत की हर वस्तु परिवर्तनशील है। ऐसे ही भल आत्मा का स्वरूप परिवर्तन नहीं होता परन्तु उसमें निहित स्वभाव-संस्कार सतत परिवर्तशील हैं। परिवर्तन की ये गति सतोप्रधानता से तमोप्रधानता और तमोप्रधानता से सतोप्रधानता की ओर सतत गतिशील रहती है। आत्मा के ये स्वभाव-संस्कार ही आत्मा के चिन्तन का बीज हैं, जिनके आधार ही आत्मा किसी परिवार में जन्म लेती, किसी वातावरण या व्यक्तियों के मध्य रहने के लिए बाध्य होती है। इस स्वभाव-संस्कार को बदलने के लिए

प्रभाव पीने वाले के ऊपर अवश्य पड़ता है। तो क्या जानवरों का दूध पीने से उनके स्वभाव-संस्कारों का प्रभाव मनुष्यों पर नहीं होगा?

Q. किसी अचानक घटना या दुर्घटना आदि में किसी की मृत्यु होती है तो क्या वे सभी आत्मायें भटकती हैं?

Q. क्या द्वापर-कलियुग में भी कोई की अकाले मृत्यु होती है? यदि हाँ तो अकाले मृत्यु क्या है और कैसे?

Q. देवतायें जरा-मृत्यु से मुक्त होते हैं, मृत्यु उनके लिए वस्त्र बदलना होता है - तो मृत्यु या वस्त्र बदलने का निर्णायक बिन्दु क्या होता है और उसका निर्णय कैसे करते हैं?

Q. संगमयुग का समय कब से कब तक है अर्थात् कितना है?

Q. ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण (Charm) है या ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण है, जिसके कारण मनुष्य का जीवन में इतना मोह है कि असाध्य रोगों से ग्रसित, मृत्यु-शैय्या पर पड़ा हुआ व्यक्ति भी शरीर छोड़ना नहीं चाहता? क्या मौज से खाना-पीना, रहना, साधन-सम्पत्ति का संग्रह करना यही जीवन का आकर्षण है या इस जीवन का कोई और प्रयोजन है?

Q. सतयुग में स्वर्ण-मुद्रा का प्रचलन होगा या वस्तु-विनिमय की आवश्यकतानुसार स्वतन्त्र प्रथा होगी?

Q. क्या बिना शरीर के आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है?

Q. सूक्ष्म वतन क्या है, वहाँ कौन सा तत्व है, जिसके आधार पर सूक्ष्म वतन का अस्तित्व है?

Q. किस बात में फेल होंगे, जिससे कोई चन्द्रवंशी बनेंगे?

Q. सतयुगी देवी-देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे या सम्पूर्ण पवित्र कब कहे जायेंगे?

Q. आत्मा के शरीर में आने से ही कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं और जब कलायें कम हो गई तो सम्पूर्ण पवित्र कैसे कहेंगे? फिर प्रश्न उठता है कि सम्पूर्णता कब और कहां?

Q. कोई तुम से पूछे - तुम पावन हो या पतित हो तो क्या उत्तर देंगे?

Q. मानव जीवन में खाता जमा करने की क्या प्रक्रिया है? अर्थात् **Plus-minus 0 or Plus-minus Plus or Plus-minus Minus ?**

Q. आत्मा के पावन बनने और खाता जमा करने में कोई अन्तर है या एक ही बात है?

Q. क्या विकल्प से पाप लगता है?

Q. क्या अभी के पुरुषार्थ का फल भविष्य में ही मिलेगा या अभी भी कोई प्राप्ति है। यदि अभी भी प्राप्ति है तो वह क्या है?

Q. सन्यासियों और देवताओं की पवित्रता में क्या अन्तर है, जिससे देवताओं के मन्दिर बनते, सन्यासियों के नहीं?

अर्थात् अपवाद के रूप में होगी?

Q. क्या नैसर्गिक संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है?

Q. विधवा का यथार्थ अर्थ क्या है, सतयुग-त्रेता में स्त्रियां विधवा होंगी या नहीं?

Q. क्या स्थूल रतनों (पत्थरों) से आत्माओं की ग्रहचारी उतर सकती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों? आत्मा पर वास्तविक ग्रहचारी है क्या?

Q. क्या परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में बैठी आत्मा पर किसी प्रेतात्मा या रिद्धि-सिद्धि वाले का प्रभाव हो सकता है? यदि हाँ तो क्यों और कैसे?

Q. क्या कर्म का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या कोई भेद है?

Q. कर्म-फल के निर्णय में प्रधानता कर्म के स्वरूप की होती है या करने वाले भावना की?

Q. क्या कोई आत्मा, किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का कारण हो सकती है? यदि हाँ तो कैसे और कितना?

Q. क्या वहाँ ऐसे समझेंगे कि हम अगले जन्म के कर्मों के अनुसार राजा, प्रजा, दास-दासी बने हैं? यदि राजा, प्रजा, दास-दासी की ये फीलिंग होगी और कर्मों का ये ज्ञान होगा तो दुख की फीलिंग क्यों नहीं होगी?

Q. क्या हर आत्मा अपने ही कर्म से सुखी-दुखी होती है? कैसे कहें कि हर आत्मा अपने कर्मानुसार सुखी-दुखी होती है?

Q. क्या कोई कर्म अकर्म होता है, यदि हाँ तो कैसे और कब होता है और नहीं तो क्यों और कैसे? अकर्म कौनसा कर्म है?

Q. कर्म और पुरुषार्थ में क्या अन्तर है? या दोनों एक ही बात है?

Q. मनुष्यात्माओं और अन्य योनियों की आत्माओं में क्या अन्तर है? क्या वे भी मन-बुद्धि-संस्कार सहित हैं? यदि वे आत्मायें हैं तो क्या वे आत्मायें भी परमधाम में जायेंगी या नहीं? यदि नहीं तो क्यों?

Q. क्या जानवरों और अन्य योनि की आत्माओं के भी कर्मों का हिसाब-किताब होता है, उनके सुख-दुख का आधार क्या है?

Q. क्या लक्ष्मी-नारायण सतयुग में प्रतिदिन नई ड्रेस पहनेंगे? ये जो गायन है कि लक्ष्मी-नारायण रोज नई ड्रेस पहनते हैं, इसका भाव-अर्थ क्या है?

Q. क्या सतयुग में जानवरों का दूध पियेंगे? यदि पियेंगे तो क्यों? सतयुग में जानवरों का दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी? यदि होगी तो क्या स्वाद के लिए पियेंगे या स्वास्थ्य लाभ के लिए? जब सतयुग में सभी स्वस्थ होंगे, तो जानवर के दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी?

Q. ये प्रकृति का नियम है कि जो जिसका दूध पीता है तो उसके संस्कार-स्वभाव, गुण-धर्मों का

पुरुषार्थ करना आत्मा का कर्तव्य है, चिन्तन ही उसका साधन है। ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको अनेक ज्ञान के प्वाइन्ट्स, गुण, शक्तियों का अखुट भण्डार दिया है, जिन पर हमारा चिन्तन सतत चलता रहे तो ये ब्राह्मण जीवन सदा सुख-शान्ति और आनन्दमय अनुभव होगा, जीवन में खुशी का सागर सदा लहराता रहेगा और हम इस संगमयुगी जीवन से कब ऊबेंगे नहीं। सदा मन-बुद्धि में रहेगा कि ये संगमयुगी जीवन और भी लम्बा हो। परमात्मा ने तो हमको चिन्तन के लिए अखुट भण्डार दिया है, उस ज्ञान भण्डार से अर्थात् उस ज्ञान के आधार पर चिन्तन के लिए कुछ विषय-वस्तु का यहाँ वर्णन कर रहे हैं।

''धारणा करनी है। विचार-सागर मन्थन करना है। ... सवेरे-सवेरे आत्मा रिफ्रेश होती है। बार-बार अभ्यास करने से आदत पड़ जायेगी। अभी जो करेगा, वह ऊंच पद पायेगा। निश्चयबुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति।... इन ज्ञान रत्नों से बड़ा प्यार होना चाहिए।'' सा.बाबा 21.4.07 रिवा.

''ये बड़ी गुह्य रमणीक बातें हैं। जो श्रीमत पर चलने वाले हैं, वे इनको धारण कर औरों को भी करा सकते हैं। ... तुमको सब प्वाइन्ट्स नोट करनी है और उनको बुद्धि में धारण करना है। तुमको कागज देखकर भाषण नहीं करना है। जैसे शिवबाबा ज्ञान का सागर, पतित-पावन है, वैसे तुम बच्चों को भी बनना है।''

सा.बाबा 21.4.07 रिवा.

''विचार सागर मन्थन करने से, यह बेहद का ड्रामा बुद्धि में रहने से देह का भान टूट जायेगा। ... ऐसे-ऐसे अच्छी रीति रात को विचार सागर मन्थन करो तो दिन में बहुत मदद मिलेगी।'' सा.बाबा 14.4.07 रिवा.

''ऊंच से ऊंच नॉलेजफुल बाप तुमको पढ़ाते हैं तो नोट्स जरूर लेने चाहिए क्योंकि फिर रिवाइज़ करना होता है। नहीं तो माया ऐसी है, जो बहुत सी प्वाइन्ट्स भुला देती है। ... कभी-कभी बहुत अच्छी प्वाइन्ट्स याद आयेंगी, फिर वहाँ की वहाँ ही गुम हो जायेंगी क्योंकि यह ज्ञान है नया।'' सा.बाबा 7.4.07 रिवा.

चिन्तन का आधार और कारण

चिन्तन आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है। आन्तरिक संस्कार या अन्तर्निहित स्मृति या बाह्य दृष्य, श्रवण, व्यवहार के आधार पर मन में संकल्प उठते ही रहते हैं, बुद्धि उन पर विचार करती है और उसके विषय में निर्णय करती है, जिसके अनुसार आत्मा कर्म करती है और उस क्रिया की प्रतिक्रिया होती रहती है, जिसका फल आत्मा को सुख या दुख के रूप में भोगना पड़ता है। सतयुग-त्रेतायुग में आत्मा पावन होती है, इसलिए उसमें आत्मिक शक्ति होती है, जिससे आत्मा का शरीर पर पूरा नियन्त्रण होता है। आत्मा परमशान्ति की दुनिया ब्रह्मलोक से इस धरा पर आती है, इसलिए आत्मा को शान्ति की आकर्षण रहती है, जिससे उसके संकल्प कम, चिन्तन कम, निर्णय यथार्थ होता है। कार्य-व्यवहार भी कम होता है क्योंकि आत्मा की इच्छायें-आशायें बहुत कम अर्थात् नाममात्र होती हैं और जो होती हैं, वे तुरन्त पूरी हो जाती हैं, इसलिए आत्मा को किसी प्रकार के चिन्तन की कोई आवश्यकता नहीं होती है। उस समय चिन्तन भी बहुत कम होता है। वहाँ प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होती है, आत्मा में कोई इचछा-आकांक्षा नहीं होती। आत्मा की हर आवश्यकता समय पर स्वत: पूरी हो जाती है। जब इच्छा-आकांक्षा ही नहीं तो चिन्तन और चिन्ता का तो प्रश्न ही नहीं उठता, इसलिए वहाँ आत्मिक शक्ति का ह्रास बहुत कम होता है। द्वापर-कलियुग में देहाभिमान के कारण इच्छायें-आशायें अधिक और प्राप्तियां दिन प्रतिदिन प्रति व्यक्ति कम होती जाती हैं, देहाभिमान की वृद्धि के साथ विकारों की वृद्धि होने के कारण राग-द्वेष, भय-चिन्ता बढ़ती जाती है, जिससे चिन्तन अधिक और अधिक चिन्तन के कारण आत्मिक शक्ति का ह्रास अत्याधिक होता जाता है। आत्मिक शक्ति की कमी के कारण निर्णय अयथार्थ और निर्णय अयथार्थ होने से कर्म अयथार्थ अर्थात् विकर्म होते जाते हैं और विकर्मों के फलस्वरूप आत्माओं को दुख-अशान्ति की महसूसता दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है।

संगमयुग पर परमात्मा का अवतरण होने से आत्मा का परमात्मा के साथ सम्बन्ध, देह और देह की दुनिया से न्यारे होने का पुरुषार्थ, आत्मिक स्वरूप में स्थिति, विश्व-नाटक का ज्ञान, कर्म और फल का ज्ञान, लक्ष्य सही, यथार्थ ज्ञान और परमात्मा

Q. क्या सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में सूक्ष्मवतन होगा? यदि हाँ तो उसका स्वरूप क्या होगा और यदि नहीं तो क्यों?

Q. क्या सूक्ष्मवतन सदा रहता है या केवल संगम में ही पार्ट है या साक्षात्कार मात्र है?

Q. क्या धर्मराजपुरी अलग है? यदि है तो कहाँ है और धर्मराज कौन बनेंगा तथा धर्मराज द्वारा सजायें कैसे मिलेंगी?

Q. दिव्यदृष्टि क्या है? उसकी चाबी किसके हाथ में है? यदि परमात्मा के हाथ में है तो वह उसे अपने मन से प्रयोग करता है या ड्रामानुसार प्रयोग होती है?

Q. क्या शंकर या परमात्मा विनाश कराता या विनाश की प्रेरणा देता है?

Q. क्या सतययुग-त्रेतायुग में जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की आयु एक समान ही होगी या अन्तर होगा?

Q. सतयुग के प्रथम जन्म की आयु और सतयुग अन्त के जन्म की आयु में अन्तर होगा या नहीं, यदि होगा तो क्या अन्तर होगा?

Q. सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की कितनी गद्दियाँ चलेंगी? त्रेता में राम-सीता की कितनी गद्दियाँ चलेंगी?

Q. सतयुग की आठ गद्दियां और त्रेता युग की 12 गद्दियों का भाव-अर्थ क्या है? वे कैसे होंगी? सतयुग की 8 गद्दियों से त्रेतायुग में 12 गद्दियां कैसे होंगी? ये गद्दियां एक ही समय समानान्तर (Horizontal) क्रम में होंगी या एक के बाद एक (Vertical) क्रम में होंगी?

Q. सतयुग में 8 जन्म और 8 ही गद्दियाँ होंगी या दोनों की समय-गणना अलग-अलग है?

Q. सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक कितनी राजाई चलेंगीं?

Q. अष्ट रतन, 8 युगल हैं या 8 आत्मायें अर्थात् 4 युगल हैं?

Q. अष्ट रतनों का निर्णय समानान्तर वालों से होगा या क्रमानुसार जो चक्रवर्ती होंगे, उनमें से होगा?

Q. सतयुगी सृष्टि में ऊंच पद किसका होगा अर्थात् जो यहाँ नियम-संयम, त्याग-तपस्या कर सादा जीवन व्यतीत करते हैं और यज्ञ सेवा में रहते हैं या जो कूटनीति से साधन-सम्पत्ति, सुख-साधनों का उपभोग करते हुए यज्ञ सेवा कर रहे हैं और शासन करने का प्रयत्न करते हैं?

Q. इसी सन्दर्भ में ये विचारणीय बात है कि गद्दी पर बैठने वाले राजायें ऊपर से नई आत्मायें आयेंगी या जो पहले जन्म ले चुके, उनमें से ही पुनर्जन्म लेकर मुख्य गद्दी पर बैठेंगे?

Q. क्या ब्रह्मा बाबा किसी समय राम भी बनता है?

Q. सतयुग में एक ही समय मनुष्यात्माओं की आयु में अन्तर होगा या नहीं? युगुलों में स्त्री-पुरुष की आयु में अन्तर होगा या नहीं? यदि होगा तो किस क्रम में?

Q. लिंग परिवर्तन की प्रक्रिया होगी या नहीं? यदि होगी तो वह Normal होगी या abnormal

Q. यदि किसी आत्मा को विशेष पार्ट (हीरो पार्ट) मिला है और किसी को साधारण या निकृष्ट पार्ट मिला है - यह इस विश्व नाटक में पक्षपात है, गलत है या इसमें कोई न्यायपूर्ण समानता है?

Q. क्या ये फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले से ही शूट हुई है? यदि अभी हो रही है तो कैसे? यदि पहले से शूट हुई है तो अभी हमारा क्या कर्तव्य है?

Q. ये ड्रामा अच्छा है तो क्यों है? यदि नहीं तो क्यों?

Q. इस ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है? यह भूलना अच्छा है या खराब?

Q. ये विश्व-नाटक हर क्षण नया लगता है, क्यों अर्थात् विश्व-नाटक की नवीनता का क्या रहस्य है?

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसी को कोई दोष दिया जा सकता है?

Q. जब ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो हमारा कर्तव्य क्या है?

Q. क्या ड्रामा के यथार्थ ज्ञान से कोई पुरुषार्थी पुरुषार्थहीन हो सकता है?

Q. विश्व-नाटक की **5000** वर्ष की गणना का आधार-वर्ष क्या है अर्थात् सौर-वर्ष या चन्द्र-वर्ष?

Q. सृष्टि-चक्र के आदि-अन्त का केन्द्र-बिन्दु क्या है अर्थात कल्प की गणना कब से कब तक?

Q. संगमयुग की गणना कब से कब तक होगी?

Q. सतयुग के **1250** वर्ष की गणना कब से कब तक होगी?

Q. ब्रह्मलोक है क्या?

Q. क्या ब्रह्मलोक और सूक्ष्म वतन, भूमण्डल या आकाश तत्व के चारो ओर है या भूमण्डल के ऊपर एक तरफ है?

Q. क्या आत्मायें ब्रह्माण्ड में शिवबाबा के आसपास चारो ओर समस्त ब्रह्माण्ड में रहती हैं या ब्रह्माण्ड के एक विशेष भाग में ही रहती हैं ?

Q. मूलवतन में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है, जैसा चित्रों में दिखाया है या ये समझाने के लिए नक्शेमात्र है। इस चित्र और परमधाम की वास्तविकता में कोई अन्तर है?

Q. सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का क्या अस्तित्व है? क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा विष्णु शंकर की तीन आत्मायें ब्रह्मलोक में है, जैसे ब्रह्मलोक के चित्र में आत्माओं के झाड़ में दिखाई गई हैं - यथार्थ क्या है?

Q. क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर की अपनी आत्मायें हैं?

Q. सूक्ष्म वतन में सभी के सूक्ष्म शरीर हैं या केवल एक ब्रह्मा बाबा का ही है?

Q. क्या सूक्ष्म शरीर से किये गये कर्मों का प्रभाव भी आत्मा पर पर पड़ता है और उसकी शक्ति में कोई परिवर्तन होता है?

Q. क्या सभी आत्मायें सूक्ष्म शरीर धारण कर सूक्ष्म वतन में जायेंगी?

की याद से निर्णय यथार्थ, घर जाने के लक्ष्य से आत्माओं की इच्छायें और आशायें कम होने के कारण आत्मा का व्यर्थ चिन्तन कम होता जाता है, जिससे आत्मिक शक्ति का विकास होता है और आत्मा की व्यक्तिगत तथा विश्व की सामूहिक चढ़ती कला होती है। बाबा ने जो ज्ञान दिया और जो सेवा के कार्य की जिम्मेवारी दी, जिससे आत्मा व्यर्थ चिन्तन से मुक्त हो उस चिनतन में लग जाती है, जिससे भी आत्मा की आत्मिक शक्ति बढ़ती जाती है। ज्ञान के चिन्तन और सेवा के चिन्तन के नियन्त्रण के लिए भी बाबा ड्रिल कराते हैं। बाबा कहते हैं जब बाबा की याद में स्थित होते हो तो ज्ञान का चिन्तन और सेवा का चिन्तन भी न चले।

द्वापर से आत्मा देहाभिमान के कारण लोभ-मोह और ईर्ष्या-राग-द्वेष के कारण अपने जीवन में कोई न कोई कमी अनुभव करने लगती है, इसलिए आत्मा का उस विषय का चिन्तन चलता है। द्वापर से दुख-अशान्ति होने लगती है, जिससे मुक्त होने के लिए आत्मा आत्म-कल्याण के लिए आत्म-चिन्तन का पुरुषार्थ करती है और भक्ति का आरम्भ होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इसलिए आत्म-चिन्तन के साथ-साथ आत्मा पर पर-चिन्तन, व्यर्थ-चिन्तन ही प्रभावित होता जाता है। संगमयुग पर ही जब ज्ञान सागर परमात्मा आत्माओं यथार्थ ज्ञान देते हैं तब ही आत्मा यथार्थ रीति आत्मा-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन में सफल होती है, जिससे आत्मा व्यर्थ-चिन्तन और पर-चिन्तन से मुक्त होती है और आत्मा की और विश्व चढ़ती कला होती है अर्थात् विश्व का कल्याण होता है।

व्यर्थ-चिन्तन में आत्मा के संकल्पों की गति तीव्र होती है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास तीव्रता से होता है। ज्ञान-चिन्तन, स्व-चिन्तन, सेवा के चिन्तन में संकल्पों की गति धैर्यवत् होती है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास कम होता है और उससे विश्व का अर्थात् आत्माओं का कल्याण होता है, जिससे उनकी दुआयें मिलती हैं, जिसके परिणामस्वरूप आत्मिक शक्ति का विकास होता है। इसलिए अन्तिम परिणाम में आत्मा का आत्मिक

शक्ति का विकास ही होता है अर्थात् प्लस और माइनस के बाद प्लस का पलड़ा भारी रहता है।

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, इसलिए उनको चिन्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनकी बुद्धि और वाणी में समय आवश्यकतानुसार ज्ञान की हर प्वाइन्ट स्वत: आती है। ब्रह्मा बाबा को चिन्तन करना होता है क्योंकि वे शिवबाबा के द्वारा दिये ज्ञान को धारण कर मास्टर ज्ञान के सागर बनते हैं। मुरली को हम ध्यान से देखें तो देखेंगे कि ब्रह्मा बाबा चिन्तन के सागर है। कैसे हर क्षण बाबा का चिन्तन चलता था, जो बाबा की मुरली से स्पष्ट हो जाता है। मुरली शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों के महावाक्यों का सागर है, उसमें दोनों के गुण-धर्मों का समावेश है, जो हमारे चिन्तन का आधार है अर्थात् मुरली को ध्यान से पढ़ेंगे तो हमारा चिन्तन अवश्य चलेगा और उन ज्ञान-गुण-शक्तियों की हमारे में धारणा होगी।

चिन्तन का प्रभाव और उसके विभिन्न प्रकार

चिन्तन का प्रभाव अनेक प्रकार से अन्य आत्माओं और प्रकृति पर पड़ता है और अन्य आत्माओं के चिन्तन और वातावरण का प्रभाव अपने ऊपर पड़ता है। चिन्तन के अनेक प्रकार हैं, उनका ज्ञान भी हमको होना अति आवश्यक है।

Q. एक चिन्तन स्वत: चलता है और एक चिन्तन पुरुषार्थ कर चलाना होता है - दोनों में क्या अन्तर है?

आत्मा मन-बुद्धि-संस्कार सहित एक चेतन्य सत्ता है, उसमें नीहित संस्कारों के आधार पर हर आत्मा का चिन्तन स्वभाविक चलता ही है, जिसका आधार भूतकाल के कर्म-संस्कार और आत्मा में भूतकाल की नीहित स्मृतियां होती हैं तथा उनके आधार पर जो चिन्तन चलता है, वह वर्तमान के चिन्तन और कर्म-संस्कारों को का आधार बनता है और वे वर्तमान के चिन्तन और कर्म-संस्कार उसके भविष्य के कर्म और संस्कारों को प्रभावित

Q. परमात्मा आकर भक्ति का फल देते हैं। भक्ति का फल क्या है और परमात्मा कब, कहाँ और कैसे वह फल देते हैं?

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है?

Q. संकल्प भी एक प्रकार का कर्म है तो क्या परमधाम में कर्म हो सकता है?

Q. क्या इस साकार तन में आने से पहले सूक्ष्मवतन में संकल्प हो सकता है?

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है और वहाँ से किसी की मनोकामनायें पूरी करता है या ये सारा खेल ड्रामा अनुसार ही चलता है और संगमयुग पर ही परमात्मा का पार्ट चलता है जब आत्माओं को ज्ञान देकर पावन बनाने का समय होता है?

Q. क्या परमात्मा को किसी दुखी को देखकर उसके दुख-दर्द की अनुभूति होती है?

Q. परमात्मा सर्वशक्तिवान है और वह सदा अच्छा ही सोचता और करता है परन्तु क्या वह जो चाहे सो कर सकता है?

Q. क्या परमात्मा किसको अधिक देता है और किसको कम? या उसका भण्डारा समान रूप से सब के लिए खुला रहता है, जो जितना चाहे उतना ले?

Q. विनाश के बाद कीट-पतंगो, पशु-पक्षी, जानवरों की आत्मायें कहाँ जायेंगी?

Q. भगवानोवाच्य आत्मा में ही खाद पड़ती है - आत्मा में कौनसी खाद पड़ती है और कैसे खाद पड़ती है?

Q. ड्रामा हू-ब-हू रिपीट होता है तो क्या अणु और परमाणु के साथ रिपीट होता है या केवल मानव पार्ट रिपीट होता?

Q. क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक की कभी रचना की है? अथवा क्या ये कभी रचा गया है? यदि हाँ, तो कब और कैसे?

Q. ड्रामा कहने का अधिकारी कौन हो सकता है?

Q. क्या ड्रामा में किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ, तो कैसे और यदि नहीं, तो क्यों?

Q. क्या ये ड्रामा बीती हुई बात पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर? क्या पुरुषार्थ से पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे? यदि नहीं तो जीवन में
पुरुषार्थ का क्या महत्व है?

Q. क्या ये नाटक सुख-दुख का है? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे?

Q. इस ड्रामा में हम कुछ परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? यदि नहीं तो क्यों और कैसे? इसमें आत्माओं को दुख क्यों भोगना पड़ता है?

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है और किसी को साधारण? यदि ऐसा है तो क्यों और कैसे?

का पुरुषार्थ करना, परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करना ही समर्पित जीवन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करना है?

Q. निश्चय और विजय में क्या सामन्जस्य है अर्थात् दोनों में क्या सम्बन्ध है?

Q. देवताओं और मनुष्यों की पहचान क्या है, स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा क्या है? मनुष्य, देवताओं को पूजते हैं, उसका कारण या आधार क्या है अर्थात् पूज्य और पुजारी की सीमा रेखा क्या है?

Q. योगबल और भोगबल से जन्म का स्वरूप क्या है? सतयुग मे सन्तानोत्पत्ति की प्रक्रिया जैसे बाबा ने पपीता, मोर, मुख के प्यार का उदाहरण दिया, उस तरह से कोई भिन्न होगी या वर्तमान स्वरूप का ही सतोप्रधान स्वरूप होगा?

Q. क्या विषय-भोग स्वभाविक है और जीवन के लिए आवश्यक क्रिया है?

Q. सतयुग में अकाले मृत्यु नहीं होती है, इसका भाव-अर्थ क्या है?

Q. क्या परमात्मा सृष्टि का रचता है, यदि वह रचता है तो किसका और कैसे?

Q. जड़-जंगम और चेतन प्रकृतियों के गुण-धर्म क्या हैं और तीनों में अन्तर क्या है?

Q. क्या जैसे चेतन मे अपनी प्रजाति को बढ़ाने की होड़ होती है, वैसे जंगम में होती है?

Q. क्या मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज है?

Q. क्या त्रेता के अन्त और द्वापर के आरम्भ में भी कोई बड़े भूकम्प आदि आते हैं, उथल-पथल होती है, मनुष्य दर-बदर होते हैं या काल-चक्र की गति के अनुसार समय के साथ स्वत: परिवर्तन होता है? यदि भूकम्प आदि होता है तो उसका स्वरूप और प्रभाव क्या होता है?

Q. क्या त्रेता के बाद नेचुरल केलेमिटीज होंगी? यदि होंगी तो उनका स्वरूप क्या होगा, उनका मानव जीवन पर क्या प्रभाव होगा? क्योंकि वहाँ कोई विकर्म तो किया नहीं, तो मनुष्य को दुख कैसे हो सकता है?

Q. दैवी सभ्यता द्वापर से भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण विलीन होगी या 25 सौ वर्षों में प्रकृति के अनादि-आदि नियमानुसार सभ्यता और साधनों में स्वत: परिवर्तन होगा?

Q. द्वापर में परिवर्तन, अर्थ-क्वेक आदि क्यों होगी?

Q. क्या परमधाम में संकल्प उठ सकता है?

Q. क्या परमात्मा को परमधाम में संकल्प उठता है? क्या उनको यहाँ आते समय संकल्प आता है कि मैं अब जाऊं?

Q. क्या परमात्मा परमधाम में रहकर कोई कार्य कर सकता है या करता है?

Q. क्या कोई भी आत्मा आकाश तत्व में स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना रह सकती है?

Q. क्या शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा को ये संकल्प उठता है या उठ सकता है कि इस दुखी दुनिया का जल्दी विनाश हो? इस विषय में आपका संकल्प और भावना क्या है अर्थात् जल्दी विनाश हो?

करता है, जो उसके भविष्य के चिन्तन का आधार बनते हैं।

दूसरा चिन्तन चलाना होता है अर्थात् विचार करना होता है, चिन्तन के लिए पुरुषार्थ करना होता है। आत्मा जीवन में जिस किसी कार्य या लक्ष्य को निर्धारित करता है तो उसकी सिद्धि के लिए उसके अनुरूप कर्म करने के लिए चिन्तन स्वत: भी चलता है और चलाना भी होता है, जिससे अभीष्ठ लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। दोनों ही प्रकार का चिन्तन मनुष्य जीवन में किसी कार्य की सफलता और जीवन में सुख-दुख का आधार है।

चिन्तन का प्रभाव

मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है और उसके चिन्तन का प्रभाव जड़-जंगम-चेतन तीनों पर पड़ता है। मनुष्य जो भी चिन्तन करता है, उसके प्रकम्पन वातावरण में प्रसारित होते हैं और वे जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियों को प्रभावित करते हैं। चिन्तन जितना गहरा होता है, उसका प्रभाव उतना ही गहरा और दीर्घकालिक होता है। किसी मनुष्य के चिन्तन से जितने चेतन प्राणी प्रभावित होते हैं, उनको सुख या दुख प्राप्त होता है, उसके अनुरूप अच्छा या बुरा फल उस कर्ता मनुष्य को अवश्य मिलता है। इस सत्य को जानकर हर मनुष्य को अपने चिन्तन पर ध्यान रखना चाहिए, जिससे उसके प्रभाव से किसी प्राणी को दुख न हो, हर प्राणी को सदा सुख मिले। गायन भी है - सुख दोगे सुख पाओंगे, दुख दोगे तो दुख पाओगे। परन्तु बिडम्बना ये है कि वर्तमान कलियुग के समय सुख की इच्छा रखने वाले व्यक्ति का भी देहाभिमान के वशीभूत व्यर्थ, अशुभ चिन्तन ही अधिक चलता है, जिससे उसको तथा अन्य प्राणियों को दुख ही मिलता है और उसकी व्यक्तिगत और सामूहिक विश्व की उतरती कला ही होती है। संगम पर जब परमात्मा आकर सत्य ज्ञान देते हैं और आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप और विश्व-नाटक की यथार्थता को जानती है और अपने आत्मिक कल्याण के प्रति जागृत होती है, तब ही उसका चिन्तन शुभ चिन्तन चलता है, स्व के लिए और सर्व के लिए कल्याणमय होता है। यथार्थ ज्ञान से अनभिज्ञता और भौतिक जगत के आकर्षण और उसके चिन्तन के कारण सतयुग से कलियुग अन्त तक

आत्मा की और सामूहिक विश्व की उतरती कला ही होती है। अशुभ चिन्तन का प्रभाव उसके कर्मों पर पड़ता और अपने अच्छे या बुरे कर्मों के फलस्वरूप आत्मा उसके अच्छे या बुरे परिणाम को सुख-दुख के रूप में अनुभव करती है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है तो उसकी वृत्ति सर्व आत्माओं के कल्याण की होती है, जिससे उसका चिन्तन शुभ होता है। जिसके फलस्वरूप आत्मा सुख का अनुभव करती है और आत्मा की आत्मिक शक्ति का निरन्तर विकास होता है।

आत्मा जिसका चिन्तन करता है, उसकी छाप उसके अन्त:पटल पर छप जाती है, जो बाद में स्मृति के रूप में आती रहती है। जितनी छाप गहरी, स्मृति भी उतनी ही अधिक और उस स्मृति के आधार पर वह छाप और गहरी होती जाती है। जैसे देह चिन्तन से काम वासना की उत्पत्ति होती है। मनुष्य जितना ही गहराई से किसी की देह को, अंग विशेष को देखता है, उतना ही उसका गहरा चिन्तन होता है, वह उतना ही बाद में स्मृति के रूप में अधिक आता है और वह क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धान्त के अनुसार और गहरा होता जाता है, उसका प्रभाव शारीरिक ग्रन्थियों पर पड़ता है, जिसके फलस्वरूप काम वासना अपना काम करती है। इसीलिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि जब मन में ऐसा कोई संकल्प आये, बुरी दृष्टि किसी के प्रति जाये तो उस स्थान से हट जाना चाहिए। ऐसे ही किसी व्यक्ति के अशुभ व्यवहार के चिन्तन से क्रोध की उत्पत्ति होती है। किसी साधन-सम्पत्ति के चिन्तन से लोभ की उत्पत्ति होती है। अन्य विकारों की भी ऐसी ही प्रक्रिया और प्रभाव होता है।

जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी ऐसी ही प्रक्रिया है। विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान करने वालों का या किसी अन्य विषय के क्षेत्र वालों का भी ऐसा ही होता है और संगम पर आध्यात्मिक पुरुषार्थ में भी ऐसा ही विधि-विधान है। परमात्मा के द्वारा हमको अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है तो हमारी लगन उसके साथ लग जाती है, उसके द्वारा प्राप्त होने वाला सुख मन को आकर्षित करता रहता है, उसका चिन्तन स्वत: होता रहता है, उसकी याद स्वत: आती रहती है,

D. *आध्यात्मिक प्रश्नावली*

बाबा ने हमको मुरली में अनेक प्रकार के प्रश्न दिये हैं और कहा है तुम उन पर विचार करो। ऐसे विचारणीय कुछ प्रश्न यहाँ दे रहे हैंङ

विचारणीय आध्यात्मिक प्रश्न

अपने इस संगमयुगी श्रेष्ठ जीवन का परमानन्द अनुभव करने और दूसरों को भी कराने के लिए इस ईश्वरीय ज्ञान की धारणा अति आवश्यक है। इस आध्यात्मिक जीवन में अपने अन्दर से और वाह्य जगत के व्यक्तियों की तरफ से अनेक प्रकार के प्रश्न हमारे सामने आते हैं, उन सब प्रश्नों का यथार्थ उत्तर अपनी बुद्धि में होना अति आवश्यक है। इसलिए ऐसे आने वाले कुछ आध्यात्मिक प्रश्नों का यहाँ वर्णन करते हैं, मनन-चिन्तन कर उनका यथार्थ उत्तर निकालना और अनुभव करना और अपने उत्तर को बाबा की मुरली से मिलाना अति आवश्यक है। हम जो उत्तर निकालें, वह साकार बाबा या अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों से भी प्रमाणित होना चाहिए। जब ये सब हमारी बुद्धि में स्पष्ट होगा तब ही हम समय पर किसी भी व्यक्ति के प्रश्नों का यथार्थ और सहज उत्तर दे सकेंगे और स्वयं भी उसका सुख अनुभव करेंगे। वास्तविक सत्य तो ये है कि जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है और ज्ञान-सागर परमात्मा की मधुर स्मृति में होती है तो पहले तो कोई उसके सामने प्रश्न ही नहीं करता है और ज्ञान के रहस्य को समझने के लिए करता भी है तो उस समय उसका यथार्थ उत्तर स्वयं ही बुद्धि में आ जाता है अर्थात् ज्ञान सागर परमात्म उसको मदद करता है परन्तु उस आत्मिक स्थिति और परमात्मा की मधुर स्मृति में स्थित होने के लिए भी चिन्तन करना ही पड़ता है और करना ही पड़ेगा।

बाबा मुरली में भी अनेक प्रश्न हमको देता है और उन पर विचार करके उत्तर निकालने के लिए काम देता है। ऐसे कुछ प्रश्नों को यहाँ लिख रहे हैं।

Q. एक अच्छे गॉडली स्टूडेण्ट का क्या अधिकार और कर्तव्य है?

Q. समर्पित जीवन का अर्थ क्या है? क्या समर्पित जीवन का अर्थ बुद्धि को ताला लगा देना अर्थात् अन्धश्रद्धा से हर बात को स्वीकार करते जाना है या आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान पर निश्चय रखकर ईश्वरीय महावाक्यों पर पूर्ण श्रद्धा-भावना रखते हुए ईश्वरीय ज्ञान के रहस्यों को समझने

तुम लकी सितारे हो, तुम जगत को रोशन करते हो, तुम्हारे रोशन होने से जगत रोशन होता है।
तुम बेहद सन्यासी हो।
तुम स्वदर्शनचक्रधारी, ब्राह्मण कुल भूषण हो।
तुम बच्चे ही त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हो।
तुम सर्वश्रेष्ठ सत्य ज्ञान की अथॉर्टी हो।
तुम पुरुषोत्तम युगी सर्वोत्तम ब्राह्मण हो।
तुम जगत के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हो।
तुम इस जगत के जगमगाते सितारे हो, तुम्हारे आत्म-प्रकाश से जगत प्रकाशित होता है।
तुम इस ब्राह्मण कुल के दीपक हो।
तुम परमात्म की ऑखो के तारे हो।
परमपिता परमात्मा तुम्हारा सर्व सम्बन्धी है।
खुदा तुम्हारा दोस्त है।
तुम परमात्मा के बगीचे के खुशबूदार फूल हो,

तुम परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे हो।
तुम गॉड फादरली स्टूडेण्ट हो।
तुम पण्डे हो, सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताने वाले हो।
तुम पैगम्बर हो, बाप का पैगाम सबको देना है।
तुम ईश्वरीय कुल के हो।
तुम सच्चे सच्चे वैष्णव हो।
तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो।
तुम ही गोपी वल्लभ के गोप-गोपियाँ हो। बाप के साथी हो।
तुम पाण्डव हो, परमात्मा से प्रीत बुद्धि हो। पाण्डवों की विजय निश्चित है।
तुम विजयमाला के मणके हो, विजय तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।
तुम परमात्मा के नयनों के नूर हो।
तुम परमात्मा के शोकेश के शो-पीस हो।

जो हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता लाती है। सोते-जागते, स्वप्न आदि में भी उसका चिन्तन होता रहता है, जो उसके स्वयं के जीवन के साथ और अन्य मनुष्यात्माओं के साथ, जड़-जंगम को भी प्रभावित करता है।

हमारे चिन्तन का प्रभाव कैसे जड़-जंगम और चेतन प्रकृति पर पड़ता है और हमारे चिन्तन को कैसे जड़-जंगम और चेतन प्रकृति प्रभावित करती है, एक-दूसरे का प्रभाव कैसे हमारे भविष्य के सुख-दुख का कारण बनता है, उसके सारे गुण-धर्म, कारण और प्रभाव (Cause and Effect) हमारी बुद्धि में होंगे, हमारे अनुभव में होंगे तब ही बुरे चिन्तन से बचने और अच्छे चिन्तन का यथार्थ पुरुषार्थ कर सकेंगे और अपने जीवन को सुख-शान्तिमय बना सकेंगे।

''तुम जानते हो हम पढ़ रहे हैं, हम गॉडली स्टूडेण्ट हैं। यह सिमरण करते रहो तो रोमांच खड़े हो जायेंगे। तुमको बाबा ज्ञान का गर्भ धारण करा रहे हैं, फिर तुम यह भूल क्यों जाते हो।'' सा.बाबा 16.5.07 रिवा.

''तुम्हारे में कुछ भी मांगने की तमन्ना नहीं होनी चाहिए।... अभी तुम बच्चों की उपराम अवस्था रहनी चहिए। कोई भी छी-छी चीज में ममत्व नहीं रहना चाहिए। अपने शरीर में भी ममत्व न रहे, इतना योगी बनना है।... तुम जितना सतोप्रधान बनते जायेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ता जायेगा।... यहाँ जितनी खुशी रहेगी, फिर यही खुशी साथ में ले जायेंगे। अन्त मती सो गति कहा जाता है ना। यह बहुत विचार सागर मंथन करना होता है।'' सा.बाबा 30.7.04 रिवा.

मनुष्य के चिन्तन का प्रभाव

मनुष्य के चिन्तन का प्रभाव उसके अपने जीवन पर और विश्व के हर क्षेत्र पर होता है, जिसमें मुख्यतया -

उसके अपने ही शरीर पर

मनुष्य जिस वस्तु, व्यक्ति, विषय का चिन्तन करता है, उस अनुसार उसके शरीर की ग्रन्थियाँ काम करती है। दूषित चिन्तन से शरीर की ग्रन्थियों से अनावश्यक रसों का स्राव होता है, जिससे उसके ही शरीर में अनेक प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और उसके मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों का कारण बनती है। ग्रन्थियों से ऐसा ही स्राव काम-वासना का कारण बनता है। जिस प्रकार अशुभ चिन्तन अनेक व्याधियों का कारण बनता है, उसी प्रकार शुभ चिन्तन से अनेक शारीरिक और मानसिक व्याधियों का निदान भी होता है।

''यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में टपकना चाहिए, तब तुमको खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे, उनकी बुद्धि में ऐसी-ऐसी बातें चलती रहेंगी। ... इसमें कोई थकावट नहीं होती है परन्तु सारा समय उस अवस्था में नहीं रह सकते, फिर माया के तूफान आते हैं जो थका भी देते हैं। ... बाकी बाप को याद करते रहेंगे, टॉपिक आदि निकालते रहेंगे तो उसमें और ही माथा भरपूर हो जायेगा। यह बाबा का अनुभव है।''

सा.बाबा 23.1.07 रिवा.

''दूर से ही जान जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार है। अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो, ऐसा बनकर जाना है। वह तब होगा जब मनन और मग्न दोनों का अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 19.4.71

आत्मा का अपने ऊपर

चिन्तन से ही आत्मा में श्रेष्ठ गुणों की धारणा होती है तो व्यर्थ और अशुभ चिन्तन से गुणों का ह्रास भी होता है और आत्मा का मानसिक पतन हो जाता है। परमात्मा, परमात्मा के ज्ञान, परमात्मा के ज्ञान-गुण-शक्तियों के चिन्तन से आत्मा की शक्ति का विकास होता है और आत्मा की चढ़ती कला होती है। आत्मा की आत्मिक शक्ति का पतन भी उसके अशुभ चिन्तन से होता है तो उसका विकास भी उसके शुभ चिन्तन से होता है। बाबा हमको अनेक प्रकार का ज्ञान दिया है, जिसके चिन्तन से आत्मा अपनी आत्मिक शक्ति

सर्व धर्मों का आदि पिता
मानवता के आदि पिता
साकार में होते अव्यक्त रूप का और अव्यक्त होते भी साकार के समान मिलन का अनुभव कराने वाले
सदा समर्थ बन मेहनत से मुक्त होकर, सर्व को समर्थ और मेहनत से मुक्त बनाने वाले
परमात्मा पिता के साथ रुद्र ज्ञान यज्ञ के रचता
रुद्र ज्ञान यज्ञ के प्रथम ब्राह्मण अर्थात् रक्षक
अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से वायब्रेशन और वायब्रेशन से वायुमण्डल बनाने वाले
प्रभावशाली प्रतिभा वाले अर्थात् प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले
साधन होते भी साधना के जाग्रत स्वरूप में रहने वाले
परमात्मा के वारिस बनने के राज़ को समझकर, परमात्मा पिता के पूरे वर्से के वारिस बनने वाले
परमात्मा के विश्व-परिवर्तन के कार्य में सदा सहयोगी
स्थापना के कार्य में सदा परमात्मा के सहयोगी
सर्वशक्तिवान बाप पर पूरा बलिहार होकर बलवान बनने वाले
गीता ज्ञान के प्रत्यक्ष स्वरूप

C.

पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा द्वारा दिये गये स्वमान और वरदान

परमात्मा ने आत्माओं के प्रति अभी संगमयुग पर जो महावाक्य उच्चारे, जो वरदान दिये, जिन उपाधियों से सम्बोधित किया वे केवल महिमा मात्र, आश्वासन मात्र या केवल उत्साहित करने के लिए नहीं हैं बल्कि शत प्रतिशत सत्य हैं भले ही अभी हम उनको अनुभव न करें परन्तु समय आयेगा जब उनकी हमको अनुभूति होगी। जो समय से पहले उनको अनुभव करके, उन पर निश्चय करके, उनका लाभ उठा लेंगे, उनको जीवन की सच्ची सफलता की अभी भी अनुभव होगी और भविष्य भी सफल होगा। जैसे -

तुम बच्चे बाप समान मास्टर ज्ञान के सागर हो,
तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो।
तुम बच्चे विश्व के कल्याणकारी हो।
तुम जगत के लिए लाइटहाउस-माइट हाउस हो।
तुम स्वराज्य अधिकारी सो विश्व के राज्य अधिकारी हो।
तुम विश्व के सहारे दाता हो।
तुम सर्व आत्माओं के पूर्वज हो।

इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में
सदा अपने अभीष्ठ लक्ष्य पर मन-बुद्धि से एकाग्र रखने वाले अर्जुन
सदा अपने धर्म-पथ पर अडिग रहने वाले धर्मराज युधिष्ठिर
सदा सर्व उत्तरदायित्व को निभाते भी विदेही स्थिति में स्थित विदेही जनक
सर्वात्माओं की परमपिता परमात्मा के साथ सगाई अर्थात् सौदा कराने वाले दलाल
शिवबाबा को अपना रथ देने वाले भागीरथ,
ईश्वरीय पढ़ाई के क्लास के सफल मानीटर
सदा इन्द्रियजीत
निरन्तर चिन्तनशील
सर्वस्व सफल कर सफलतामूर्त बनने वाले और दूसरों को भी सफल करने की प्रेरणा देने वाले प्रेरणा स्रोत
बाप पर बलिहार होकर विजय माला के प्रथम विजयी रतन
सदा लव एण्ड लॉ के बैलेन्स से बच्चों की पालना करने वाले
सदा न्यारे और प्यारेपन के बैलेन्स वाले अर्थात् कमलासनधारी
स्वयं को इस दुनिया में मेहमान समझकर महान बनने वाले
कर्मातीत स्थिति के अनुभव में रहने और दूसरों को भी कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराने वाले
वाणी और मन्सा सेवा साथ-साथ वाले
सदा स्वयं को तन-मन से स्वस्थ अनुभव करने और दूसरों को भी ऐसी ही महसूसता देने वाले
सदा निष्पक्ष भाव धारण कर सर्व को निष्पक्षता का अनुभव कराने वाले
निर्संकल्प स्थिति के सफल अभ्यास से सदा निर्विकल्प स्थिति में रहने वाले
परमात्मा के बगीचे के सर्वश्रेष्ठ सुगन्धित फूल और सफल माली
सदा दर्शनीय मूर्त
आलराउण्ड पार्टधारी
सदा दुआयें देने और दुआयें लेने वाले दुआओं के अखुट भण्डार
सदा सागर के समान गम्भीर अर्थात् सब बातों को समाने वाले
सदा धैर्य से विघ्नों का सामना कर सर्व को विघ्नमुक्त बनाने वाले
मृत्यु पर विजय पाकर अमरत्व को पाने वाले
यथार्थ पुरुषार्थी जीवन के एग्जाम्पुल
त्याग से मिले भाग्य का भी त्याग करने वाले
स्थूल और अविनाशी ज्ञान-रतनों के सफल जौहरी
सदा बाप, टीचर, सत्गुरु के आज्ञाकारी अर्थात् फरमान बरदार, वफादार
ईश्वरीय ज्ञान के प्रत्यक्ष प्रमाण
विश्व के स्नेही और विश्व के सहयोगी

का विकास कर सकती है।

''ख्याल करो - यह है बेहद का नाटक। गायन है - बनी बनाई बन रही .. होये। ... बाप ऐसे नहीं कहते कि भक्ति खराब है। नहीं, यह तो ड्रामा जो अनादि है, वह समझाया जाता है।'' सा.बाबा 08.9.04 रिवा.

''पतित-पावन बाप का बच्चा बनकर बाप को मदद देते हैं। ... हम योग बल से भारत को पवित्र बनाने के निमित्त हैं। ... अन्दर यह ज्ञान का सिमरण चलता रहे तो सदा मुस्कराते रहें।'' सा.बाबा 5.5.07 रिवा.

''रात को जागकर विचार-सागर मन्थन करो तो खुशी में आ जायेंगे। उस समय ही खुशी का पारा चढ़ता है। ... हिम्मते बच्चे मदद दे बाप तो है ही। सदा अपने ऊपर बहुत अटेन्शन रखो।'' सा.बाबा 24.3.07 रिवा.

''बाबा तुमको सत्य सुनाते हैं और तुम ब्राह्मणों को जाकर सबको सच्ची गीता सुनानी है। सब एक जैसा नहीं समझा सकते हैं। यह नम्बरवार राजधानी बन रही है। सब एक जैसा पढ़ न सकें। धारणा कर फिर उस पर विचार-सागर मन्थन करना है। ... जब धारणा हो तब नशा चढ़े और किसको यह ज्ञान इन्जेक्शन लगा सकें।''
सा.बाबा 16.2.07 रिवा.

''भारतवासी यह नहीं जानते कि हम सब पावन श्रेष्ठाचारी थे ... ये बड़ी वण्डरफुल बातें हैं, इनको सुमिरण करते रहो तो खुशी भी रहे।'' सा.बाबा 21.2.07 रिवा.

''रात-दिन यही फिकरात रहे कि मुझे सतोप्रधान बनना है और सृष्टि-चक्र की नॉलेज भी बुद्धि में रहनी चाहिए। ... जो अच्छी रीति सारा दिन सुमिरन करते और कराते होंगे, खुशी भी उनको रहेगी।'' सा.बाबा 25.12.06 रिवा.

अन्य आत्माओं पर

आत्मा के चिन्तन से जो प्रकम्पन वातावरण में प्रसारित होते हैं, वे उस वातावरण का निर्माण करते हैं और उसके अनुरूप ही उसका प्रभाव अन्य आत्माओं पर भी पड़ता है और अन्य आत्मायें भी उसके कारण सुख-दुख का अनुभव करती हैं। इसीलिए कहा

गया कि मनुष्य अपने वातावरण की उपज है। ऐसे ही अन्य आत्माओं के चिन्तन से निर्मित वातावरण का प्रभाव अपने ऊपर होता है। इसलिए स्व-कल्याण और विश्व-कल्याण की अभिलाषी आत्मा को अपने चिन्तन पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। इस चिन्तन के आधार आत्माओं के परस्पर सुख-दुख के सम्बन्ध बनते हैं।

मनुष्य के चिन्तन से निर्मित वातावरण का प्रभाव न सिर्फ मनुष्यात्माओं पर होता लेकिन अन्य योनि की आत्माओं पर भी होता है। एक बस्ती में रहने वाले जानवरों के स्वभाव-संस्कार और जंगल में रहने वाले जानवरों के स्वभाव-सस्कारों में बहुत अन्तर होता है।

''ऐसी बाप समान सर्वशक्तियों की अनुभूति वाली ज्ञानी-योगी आत्मायें तैयार करो।... विश्व-परिवर्तन के लिए बहुत सूक्ष्म शक्तिशाली स्थिति वाली आत्मायें चाहिए, जो अपनी वृत्ति द्वारा, श्रेष्ठ संकल्प द्वारा अनेक आत्माओं को परिवर्तन कर सकें। ... बेहद की सेवा अपनी शक्तिशाली मन्सा शक्ति द्वारा शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा होती है। '' अ.बापदादा 1.4.92

वातावरण पर

किसी स्थान या वातावरण में रहने वाली आत्माओं का जैसा चिन्तन होता है, उस अनुरूप प्रकम्पन वातावरण में प्रसारित होते हैं और उस अनुसार ही वहाँ का वातावरण बन जाता है। जैसे युद्ध के मैदान का वातावरण मरने और मारने का ही होता है। सतसंग का वातावरण शान्ति का, भक्ति-भावना का होता है, तीर्थ पर वातावरण भक्ति-भावना और पवित्रता से ओतप्रोत होता है, जो अपेक्षाकृत आज भी साधारण स्थानों से भिन्न होता है।। शमशान का वातावरण वैराग्य की भावना से प्रभावित होता है।

जड़-जंगम प्रकृति पर

मनुष्य का जैसा चिन्तन होता है, उसके विचार होते हैं, उसका प्रभाव जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियों पर पड़ता है। इसीलिए बाबा कहते हैं - तुम्हारे योग के वायब्रेशन जड़ प्रकृति को भी पावन बनायेंगे। भौतिक साइन्स वाले भी कहते हैं - मनुष्य के संकल्प

साक्षात् बाप समान अर्थात् बाप का साक्षात्कार कराने वाले
कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होयेगी बहुरि करोगे कब - के प्रत्यक्ष स्वरूप
दृष्टि से ही आत्माओं के भाग्य को परखने वाले सफल पारखी
भृगु ऋषि के समान सर्व की जन्म-पत्री को देखने वाले सच्चे भृगु ऋषि
अचानक के पेपर में सदा पास होने वाले
परमात्म-प्रेमी और सर्व को परमात्म-प्रेमी बनाने वाले
दूसरे के दुख-दर्द को अपना समझकर सर्व के दुख दूर करने के संकल्प वाले
अपने स्वमान में रहते सर्व के प्रति सम्मान रखने वाले
गिरे हुओं और गरीबों को भी गले लगाकर गरीब-निवाज को प्रत्यक्ष करने वाले
गुणग्राही और गुणों का दान करने वाले
सदा सर्व की विशेषताओं को देखने और उनकी विशेषताओं को सेवा में लगाने वाले
जाति-पांति, धर्म, भाषा भेद से ऊपर सर्व प्रति समान दृष्टि और सर्व को गले लगाने वाले
विश्व-नाटक के ज्ञान को यथार्थ रीति धारण कर सर्व के प्रति निर्दोष दृष्टि वाले
सर्व के दिलों को जीतने वाले मास्टर-दिलाराम
निस्वार्थ और निष्काम सेवाधारी
निन्दक को भी गले लगाने वाले अर्थात् अपकारी पर भी उपकार करने वाले
अथक पुरुषार्थी, अथक सेवाधारी और निद्राजीत
गुप्त पुरुषार्थी
कर्मयोगी जीवन के प्रत्यक्ष स्वरूप
कर्म में सदा एक्यूरेट एवं पुरुषार्थ में सदा अलर्ट
दूरांदेशी बुद्धि वाले
सदा संकल्प, दृष्टि-वृत्ति, संग से देह और देह की दुनिया से न्यारे, सदा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने और कराने वाले।
स्वयं भी सदा मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रह औरों को भी उस स्थिति का अनुभव कराने वाले
सर्व पर दया करने वाले
स्वयं धारणा कर दूसरों को शिक्षा देने वाले अर्थात् योग्य शिक्षक
स्वयं भी देह से न्यारे परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में स्थित और दूसरों को भी उस स्थिति का अनुभव कराने वाले
नाम, मान, शान के भिखारीपन से सदा मुक्त
सदा आशावान
सदा सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्ट और प्रसन्नता की स्थिति में स्थित

सदा निर्भय और निश्चिन्त
अदम्य साहसी
धैर्यवान और समय की धैर्य से प्रतीक्षा करने वाले परन्तु पुरुषार्थ में निरन्तर सतर्क
निर्मानता से निर्माण के कर्तव्य में निरन्तर संलग्न
सदा निमित्त और निर्मान भाव वाले
दृष्टि में दिव्यता, कर्मों में कुशलता, वाणी में मधुरता की धारणा-मूरत
विद्यार्थीपन और शिक्षकपन के बैलेन्स के धारणा-स्वरूप
तपस्या का निरन्तर जाग्रत स्वरूप अर्थात् निरन्तर तपस्वीमूर्त
त्याग-तपस्या और सेवा के प्रतिमूर्ति
निरन्तर चढ़ती कला की स्थिति में
रूप में सादगी और चलन में दिव्यता, भरपूरता और शालीनता
सदा विश्व-महाराजन बनने का नशा और विश्व-सेवाधारीपन की निर्मानता और कर्तव्य का बैलेन्स रखने वाले
मान-अपमान, निन्दा-स्तुति .. में सदा एकरस
न काहू से दोस्ती, न काहू से वैर की यथार्थ धारणा वाले निर्भय और निर्वैर
सर्व के प्रति रहमदिल
अपकारी पर भी उपकार करने वाले
मुख द्वारा सदा वरदानी बोल बोलने वाले
माया के युद्ध में सफल योद्धा
प्यार के अखुट भण्डार
कर्मभोग में भी कर्मयोग का अनुभव करने और कराने वाले
कर्मयोग अर्थात् योगबल से कर्मभोग पर विजय पाने वाले
सर्व के प्रति सम-दृष्टि, सम-भावना रखने वाले
सहनशीलता और प्रेम की प्रतिमूर्ति

सदा सर्व के प्रति कल्याण की भावना वाले
विघ्नों को भी परीक्षा समझकर पार करने और पास करने वाले
पुराने स्वभाव-संस्कार का एक धक से सम्पूर्ण परिवर्तन करने वाले
अपने जीवन के लिए आवश्यक समय, शक्ति, साधन भी सेवा में लगाने वाले
गभ्भीरता - रमणीकता का सन्तुलन रख निरन्तर एकान्तवासी स्थिति में स्थित
सदा एक के अन्त में खोये हुए एकान्तवासी स्थिति में रहने वाले
सदा सर्वशक्तिवान बाप को अपने जीवन से प्रत्यक्ष करने वाले

जंगम प्रकृति को प्रभावित करते हैं।

जड़-जंगम प्रकृति का चेतन आत्मा के सुख-दुख से गहरा सम्बन्ध है। दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं और एक-दूसरे के सहयोगी हैं। मनुष्य के चिन्तन का प्रभाव जड़-जंगम प्रकृति पर भी पड़ता है। वातावरण में जैसे प्रकम्पन होते हैं, उस अनुसार पेड़-पौधों का भी विकास होता है, तो ह्रास भी होता है, उनमें भी उस अनुरूप क्रिया-प्रक्रिया होती है। ऐसे ही जैसी जड़-जंगम प्रकृति के सम्पर्क में जीवात्मा रहती है, उसके अनुसार उसका जीवन होता है, उसको सुख-दुख की अनुभूति होती है।

ये विश्व-नाटक जड़-जंगम और चेतन के सहयोग से बना हुआ है और तीनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। इनमें मनुष्य चेतन प्राणी है और उसकी मन-बुद्धि अन्य चेतन प्राणियों से विशेष है, वह अन्य प्राणियों से अधिक चिन्तनशील है, इसलिए उसका चिन्तन जड़-जंगम को अधिक प्रभावित करता है।

''सेवा के लक्ष्य में ज्ञानी-योगी तू आत्माओं के तरफ अटेन्शन ज्यादा चाहिए। ऐसी आत्माओं की वृद्धि आवश्यक है। ... भावुक नहीं बनो, ज्ञानी भी बनो। प्रकृति के भी ज्ञानी बनो, सिर्फ आत्मा का ज्ञान नहीं। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का भी ज्ञान। उसमें ड्रामा भी आ जाता है।'' अ.बापदादा 1.4.92

चिन्तन के विभिन्न प्रकार

मनुष्य का चिन्तन अनेक प्रकार का होता है, जिससे आत्मा की चढ़ती और उतरती कला होती है। अध्ययन के दृष्टिकोण से विभिन्न प्रकार के चिन्तनों को निम्नलिखित रूप से विभाजित किया जा सकता है -

(अ)

1. **स्वस्थ चिन्तन** अर्थात् जिसमें आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला हो। जिसमें-
आत्म-चिन्तन अर्थात् स्व-चिन्तन
परमात्म-चिन्तन,

ज्ञान-चिन्तन,
शुभ-चिन्तन आदि

2.**अस्वस्थ चिन्तन,** जिसमें आत्मा की और विश्व की उतरती कला हो। जिसमें -
व्यर्थ-चिन्तन,
अशुभ-चिन्तन,
पर-चिन्तन,
साधन-सम्पत्ति का चिन्तन
विषय-चिन्तन आदि

3. **सामान्य चिन्तन,** जिसमें -
व्यवहारिक जीवन के विषय में चिन्तन
विद्या अध्ययन, पठन-पाठन आदि
दुनिया के सामान्य विषयों का चिन्तन

(ब)
कल्याणकारी चिन्तन अर्थात्
आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन

अकल्याणकारी चिन्तन अर्थात्
पर-चिन्तन,
विषय-चिन्तन

संक्षेप में हम विचार करें तो चिन्तन दो प्रकार का ही होता है।
एक है **चढ़ती कला का चिन्तन** और दूसरा है **उतरती कला का चिन्तन**

ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा को अपने तन में धारण करने वाले ज्ञान-मानसरोवर, भागीरथ
शिवबाबा की मुरली से अगाध प्यार और बच्चों में भी मुरली के प्रति प्यार जाग्रत करने वाले
निरन्तर स्टूडेण्ट लाइफ में
एक भरोसा, एक बल, एक आश-विश्वास की प्रतिमूर्ति
नष्टोमोहा - स्मृति स्वरूप के स्तम्भ अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई
एक धक से विनाशी कमाई को सच्ची अविनाशी कमाई में परिवर्तन करने वाले
तन-मन-धन को ट्रस्टी बन सम्भालने और कार्य में लगाने वाले
तन-मन-धन को परमात्मा के पास पूरा इन्श्योर करके पूरा राज्य-भाग्य पाने वाले
निर्संकल्प होकर तन-मन-धन सब परमात्मा को विल करके विल पॉवर धारण करने वाले
सत्यता और शालीनता **(Reality Royality)** की प्रतिमूर्ति अर्थात् प्रत्यक्ष स्वरूप
योग की निरन्तर शक्तिशाली स्थिति में स्थित रहने वाले
सदा बाप के स्नेह में समाये हुए
सदा सर्व को सहयोग करने वाले
सदा दाता बन सर्व को खुशी, ज्ञान-धन, सहयोग, स्नेह, शक्ति ... देने वाले
निराकारी - निर्विकारी - निरहंकारी स्थिति के प्रत्यक्ष स्वरूप
सदा निराकारी - आकारी - साकारी स्थिति के सहज अभ्यासी
बेहद की वैराग्य वृत्ति के प्रतिमूर्त
दृढ़ संकल्प एवं दृढ़ प्रतिज्ञ
सदा बालकपन और मालिकपन का बैलेन्स रखने वाले
पहले आप का पाठ पक्का रखकर सदा बच्चों को आगे बढ़ाने वाले
मन्सा-वाचा-कर्मणा अखण्ड महादानी
सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ जोड़ने और जुड़ाने वाले
एक बाप के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभवों में रह सर्व को अनुभव कराने वाले
सर्वात्माओं की परमपिता परमात्मा के साथ सगाई अर्थात् सौदा कराने वाले दलाल
पवित्रता की धारणा के चरमोत्कृष्ट स्वरूप
पूर्वजपन के स्वरूप से विश्व-प्रेम की भावना सदा जाग्रत रखने वाले
बच्चों को माइक बनाकर आगे करके पीछे से माइट बन शक्ति देने वाले
सत्यता की शक्ति का स्तम्भ **(Authority of Reality and Truth)**
सत्यता को सभ्यता और प्रेम से सिद्ध करने वाले
सम्पूर्णता और सम्पन्नता की प्रतिमूर्ति
प्रेम और शक्ति के बैलेन्स में स्थित
रमणीकता और गम्भीरता के बैलेन्स के साकार स्वरूप

सर्व के कल्याणाकारी
गीता ज्ञान दाता
विश्व-नाटक के साक्षी-दृष्टा
अन्तर्यामी, जानी-जाननहार
अयोनि

(ii) साकार बाप के गुण-कर्तव्य और विशेषतायें

ब्रह्मा बाप को फॉलो करने के लिए ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्य-विशेषताओं से कुछ का अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर यहाँ विचार किया है।

फॉलो-फादर में नम्बरवन
शिवबाबा के सपूत बन सबूत देने वाले
तुरत दान महापुण्य के प्रत्यक्ष स्वरूप
तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क से सम्पूर्ण समर्पण कर समान बनने वाले
सदा आत्मिक स्वरूप में स्थित
साकार लोक में साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप
पहले मानव जो पुरुषार्थ करके मानव से फरिश्ता बने
सर्व प्रकार के अनुभवों के सागर
नव-विश्व के रचता अर्थात् नव-विश्व के रचता परमात्मा के साथ नव-विश्व की रचना में सहयोगी
निश्चयबुद्धि विजयन्ति के प्रत्यक्ष स्वरूप
सदा एक परमात्मा पिता की श्रीमत पर चलने वाले
अटल निश्चय और दृढ़ विश्वास रखने वाले
सर्वंश एवं सर्वस्व त्यागी
त्याग में भाग्य की अनुभूति करने वाले
सदा सारथी बनकर कर्मेन्द्रियों को चलाने वाले स्वराज्य अधिकारी
साक्षी और साथीपन की निरन्तर अनुभूति में रहने वाले
साक्षी और ट्रस्टी स्थिति वाले
ड्रामा के पट्टे पर अटल-अचल, निश्चयबुद्धि
आदि से अन्त तक एकरस स्थिति में रहने वाले अर्थात् जीवन में उतार-चढ़ाव से मुक्त सदा एकरस चढ़ती कला में रहने वाले
विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा के जाग्रत स्वरूप से 'नथिंग न्यू' का पाठ पक्का करके सदा निश्चिन्त
ज्ञान की पराकाष्ठा और निर्मानता के स्तम्भ

1. स्वस्थ चिन्तन,

स्वस्थ चिन्तन अर्थात् जिससे आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला हो, अपना और दूसरों का कल्याण हो। स्वस्थ चिन्तन में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, ईश्वरीय ज्ञान का चिन्तन है। आत्मा के गुण-धर्मों का चिन्तन करने से उसका स्वरूप बन जाते हैं। परमात्मा के गुण-धर्मों-शक्तियों का चिन्तन करने से, उनकी हमारे में धारणा होती है। ज्ञान के भिन्न-भिन्न प्वाइन्ट्स का चिन्तन करने से उनके गुह्य रहस्य हमारी बुद्धि में स्पष्ट होते हैं, उनका सुख हमको अपने जीवन में अनुभव होता है, उनके अनुसार हमारे कर्म-बोल होते हैं, जिससे हमारा भविष्य कल्याणमय होता है। जब ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट होता है, तब ही हम दूसरों को उसके विषय में स्पष्ट कर सकते हैं। इसमें -

''यह ब्रह्मा भी तुम्हारे साथ है। वह भी सफेद पोशधारी स्टूडेण्ट है। ... बाबा प्रदर्शनी आदि देखते हैं तो ख्यालात चलते रहते हैं। ... जो अच्छे पुरुषार्थी हैं, उनकी बुद्धि में ज्ञान टपकना चाहिए। बाबा को टपकता रहता है ना। बुद्धि में सारा ज्ञान रहेगा तो बाबा की याद भी रहेगी, उन्नति को पाते रहेंगे।''

सा.बाबा 17.5.04 रिवा.

''सवेरे उठकर बाबा से बातें करो। बाबा आपकी तो कमाल है ... हम तो बिल्कुल घोर अंधियारे में थे। हम आपकी शिक्षा पर जरूर चलेंगे। ... हम आपकी मदद के लिए हाज़िर हैं ... जैसे यह बाबा पुरुषार्थ करते हैं, वह बच्चों को सुनाते हैं।''

सा.बाबा 23.5.07 रिवा.

आत्म-चिन्तन अर्थात् स्व-चिन्तन

अभी परमपिता परमात्मा हमको आत्मा यथार्थ ज्ञान दिया है, जिससे आत्मा के गुण-धर्म-शक्तियों का ज्ञान हमारी समझ में आया है कि आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्द स्वरूप है अर्थात् आत्मा का मूल स्वरूप सर्व गुणों, सर्व शक्तियों, सर्व प्राप्तियों से परिपूर्ण परमात्मा के समान ही सम्पन्न है। अपने उस स्वरूप को अनुभव करने के लिए आत्मा को गहराई से आत्म-चिन्तन करना चाहिए। जैसे-जैसे आत्मा अपने स्वरूप का चिन्तन करती है, उसके गुण-धर्म प्रगट होते जाते हैं, उनकी अनुभूति आत्मा को होती है, आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है,

जिससे आत्मा पवित्रता, सुख-शान्ति का अनुभव करती है। जैसे-जैसे हम अपने आत्मिक स्वरूप का चिन्तन करते हैं, वैसे-वैसे वे गुण-शक्तियाँ जाग्रत होती हैं और आत्मा की वह स्थिति और भी सुदृढ़ होती जाती है, उनकी अनुभूति स्वयं को भी होती है और दूसरे भी हमारे सानिध्य से उनको अनुभव करते हैं।

जब हमारी मन-बुद्धि अपनी आत्मा पर एकाग्र होगी, हम स्व-दर्शन में रहेंगे, तब ही हमारा स्व-चिन्तन होगा और स्व-चिन्तन का यथार्थ पुरुषार्थ होगा, तब ही हमारी आत्मिक स्थिति होगी और हम आत्मिक सुख का अनुभव कर सकेंगे। संक्षेप में कहें तो स्व-चिन्तन का आधार है स्व-दर्शन।

''अभी यह अन्तिम जन्म है ... ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करो। बाप कहते हैं - अभी तुम देही-अभिमानी बनो। वापस घर लौटना है। ... बाप अब नई रचना रच रहे हैं। हम वर्सा शिवबाबा से लेते हैं। ऐसी-ऐसी अपने साथ बातें करके पक्का कर देना है।''

सा.बाबा 18.4.07 रिवा.

''अपने आपसे रियलाइज़ करो कि हर बात अनुभव में है? अनुभव किया है या सिर्फ नॉलेज के आधार से सोचते हैं, सुनते हैं, वर्णन करते हैं? बापदादा ने देखा है चाहे देश में चाहे विदेश में हर प्वाइन्ट के अनुभव में डीप में जाना - यह थोड़ा अटेन्शन कम है, सुनने-सुनाने का अटेन्शन अच्छा है।'' अ.बापदादा 15.2.07

परमात्म-चिन्तन

परमात्मा ज्ञान, गुण, शक्तियों का अखुट भण्डार सच्चिदानन्द का सागर है। जब आत्मा परमात्मा के द्वारा अपने विषय में दिये ज्ञान का, उसके स्वरूप का, उनके गुणों, शक्तियों का चिन्तन करती है तो योग के विधि-विधान के अनुसार वह ज्ञान, वे गुण और शक्तियाँ आत्मा में आती जाती हैं, जिससे आत्मा मास्टर ज्ञान का सागर, सर्वगुण सम्पन्न, मास्टर सर्वशक्तिवान बन जाती है। परमात्मा के चिन्तन से आत्मा की शक्ति बढ़ती है, जिससे आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है।

जब हमारी बुद्धि दुनिया के सम्बन्धों से विरक्त् होगी, नष्टोमोहा होगी और हमको परमात्मा के साथ हमारे सर्व सम्बन्ध होंगे,

(i) निराकार बाप के गुण-कर्तव्य

फॉलो फादर के लिए परमात्मा ने श्रीमत दी है। फॉलो फादर करने के लिए निराकार और साकार दोनों बाप के विषय में जानना अति आवश्यक है। दोनों के गुण-कर्तव्य और विशेषातायें हमारी बुद्धि में रहें, इसके लिए दोनों के मुख्य-मुख्य गुण-कर्तव्य, विशेषताओं का वर्णन यहाँ कर रहे हैं।

निराकार ज्ञान-सागर परमात्मा शिव बाप के मुख्य गुणों-कर्तव्य और विशेषतायें :-

ज्ञान के सागर
प्यार के सागर
सर्वशक्तिवान
सर्व आत्माओं के अनादि पिता अर्थात् परमपिता परमात्मा
सर्व आत्माओं के पतित पावन
सर्व आत्माओं के मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता
सर्व आत्माओं के बाप, शिक्षक, सत्गुरु
सदा मुक्त
सदा पावन
सदा पूज्य
सदा निराकार, विदेही अर्थात् अशरीरी
सदा निर्भय-निर्वैर-निर्संकल्प
अयोनि
सदा निष्काम कर्म करने वाले
धर्मराज - न्यायकारी, समदर्शी
सदा अभोक्ता-असोचता
अभोक्ता अर्थात् कर्म करते भी कर्म-फल के प्रभाव से मुक्त
सुख-दुख दोनों से न्यारे
सर्व आत्माओं को दुख से मुक्त कर सुख देने वाले सर्व के दुखहर्ता-सुखकर्ता
सृष्टि के बीज रूप
सृष्टि-चक्र के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर
सदा न्यारे और सर्व के प्यारे
निन्दा-स्तुति, मान-अपमान से परे अर्थात् दोनों में समान
निन्दक को भी गले लगाने वाले
आनन्द के सागर
सत्-चित्-आनन्द स्वरूप

डबल ताज और सिंगल ताज का राज़
आपघात - महापाप का राज़
आपघात और जीवघात के भेद का राज़
विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी का राज़
धर्म-सत्ता और राज-सत्ता का राज़
धर्म और कर्म का राज़
अन्त:वाहक देह का राज़
देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का राज़
करन-करावनहार का राज़
जो है, जैसा है का राज़
सूर्य-चांद के ग्रहण का राज़
व्यभिचारी और अव्यभिचारी याद का राज़

B. मुक्ति-जीवनमुक्ति के सफल अभ्यास के लिए फॉलो फादर

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है और हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध है। उन दोंनों ही लक्ष्यों की प्राप्ति और अनुभव के अभ्यास लिए निराकार और साकार बाप हमारे सामने उदाहरण और आदर्श स्वरूप हैं। दोनों के गुण, कर्तव्यों और विशेषताओं को जानकर, उनका अनुसरण करके ही हम वर्तमान संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का परमसुख सहज अनुभव कर सकते हैं। वर्तमान संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से पदमगुणा श्रेष्ठ और यथार्थ है। उन गुण-कर्तव्यों और विशेषताओं की धारणा के लिए उन पर मनन-चिन्तन अति आवश्यक है, जिसके लिए ही उस अथाह सागर में से कुछ का यहाँ वर्णन अपनी शक्ति और सामर्थ के अनुसारन कर रहे हैं।

उसके साथ सर्व सम्बन्धों का अनुभव होगा तब ही हम परमात्म-चिन्तन में रह सकेंगे और जब परमात्म-चिन्तन होगा, तब ही हमको परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों की अनुभूति होगी, उनके साथ हमारे सर्व सम्बन्ध होंगे और दुनिया के सम्बन्धों से बुद्धि विरक्त हो, हम नष्टोमोहा बन सकेंगे।

''उमंग-उत्साह सदा इमर्ज रहे, अभी कभी-कभी मर्ज हो जाता है। सारा संगमयुग ही आपका उत्सव है। ... सदा मन में खुशी से नाचते रहो। ... इस नाचने में थकने की तो कोई बात ही नहीं है। चाहे लेटे हो, चाहे काम कर रहे हो ... खुशी की डांस तो कर ही सकते हो और बाप के प्राप्तियों का गीत भी गा सकते हो।''

अ.बापदादा 3.3.07

''खुशी की डांस तो कर ही सकते हो और बाप के प्राप्तियों का गीत भी गा सकते हो। ... बाप के प्राप्तियों का, बाप के गुणों का गीत तो सबको आता है ना। ... यही दो काम हैं - नाचो और गाओ।''

अ.बापदादा 3.3.07

''अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो? ... विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेगमपुर के बादशाह।''

अ.बापदादा 3.10.75

ज्ञान-चिन्तन,

परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, वह हमारे जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है, इसका अनुभव होगा, तब ही ज्ञान-चिन्तन में रह सकेंगे और ज्ञान-चिन्तन से ही उसका महत्व अनुभव होगा।

चिन्तन ही ईश्वरीय ज्ञान की सत्यता को अनुभव करने और धारण करने का एकमात्र आधार है, साधन है। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसके भिन्न-भिन्न प्वाइन्ट्स का चिन्तन कर उसके गुण-धर्मों, प्रभाव (Fact and figures, Cause and effects) को जानने और अनुभव कर धारण करने से ही आत्मा सम्पन्न बनती है, उसका सुख अनुभव करती है। ईश्वरीय ज्ञान परम सुख को देने वाला है। आत्मिक स्वरूप

सच्चिदानन्द मय है, परमात्मा सच्चिदानन्द सागर है, ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। जो आत्मा इनके रहस्यों को जानकर, अनुभव कर, निश्चय कर, धारण कर सम्पन्न बनती है, वही इनके सुर-दुर्लभ परम-सुख को, परमानन्द को अनुभव करती है। ये ब्राह्मण जीवन कल्प का फूल है और परमानन्दमय है। इसका फल परम सुखमय है। चिन्तन ही इस सबको अनुभव करने और धारण करने का एकमात्र आधार है।
सृष्टि-चक्र के विषय में चिन्तन अर्थात् सृष्टि-चक्र के नियम-सिद्धान्तों का चिन्तन, सृष्टि की अद्भुतता-दिव्यता का, सत्यता, न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता का चिन्तन करना और अनुभव करना। विश्व-नाटक के कर्म और फल के सिद्धान्त, विधि-विधान का चिन्तन कर अनुभव करना। इसीलिए बाबा सदा कहता है - बच्चे, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। स्वदर्शन चक्र सदा फिरता रहे तो माया कब आ नहीं सकती, माया का गला कट जायेगा।

ये विश्व-नाटक परम सुखमय है, जो आत्मा इस नाटक की यथार्थता को जानकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर पार्ट बजाती है, वह इसके परम सुख को अनुभव करती है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान ही आत्मा को साक्षी बनने का एकमात्र आधार है। विश्व-नाटक की इस सत्यता को अनुभव करने के लिए सृष्टि-चक्र के गुण-धर्मों, विधि-विधान का चिन्तन करना अति आवश्यक है।
''सिर्फ बाप की याद में बैठी हो या और भी कुछ याद है? बाप की याद से तो विकर्म विनाश होंगे, और क्या याद करती हो? यह बुद्धि का काम है ना। हम आत्माओं को अपने घर जाना है तो घर को भी याद करना है। क्या घर में जाकर बैठ जाना है! विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखाते हैं ना। तो वह चक्र भी फिराना पड़े।''

सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने हमको ज्ञान के अनेक राज बताये हैं, जो सदा हमारी बुद्धि में जाग्रत रहेंगे तो बुद्धि सदा भरपूर रहेगी, आत्मा सदा सम्पन्नता का अनुभव करेगी, आत्मा सदा साक्षी स्थिति में रहेगी और सदा सुख-शान्ति-आनन्द का अनुभव करेगी,

विल पॉवर और विल पॉवर को प्राप्त करने का राज़
संकल्प और दृढ़-संकल्प का राज़
समय का ज्ञान और उसके महत्व का राज़
ब्राह्मण और शूद्रों का राज़
इच्छामात्रम् अविद्या का राज़
समस्याओं और उनके समाधान का राज़
सर्वशक्तियां और उनकी धारणा का राज़
पैगम्बर-मैसेन्जर का राज़
आत्मा, परमात्मा और वातावरण का राज़
नारद का राज़
सुदामा का राज़
और संग तोड़, एक संग जोड़ का राज़
द्रोपदी, द्रोपदी के चीर हरण का राज़
सीता, सीता हरण का राज़

गार्डन आफ अल्लाह, खुदा के बगीचे का राज़
ज्ञान की सम्पूर्णता का राज़
समर्थ और असमर्थ स्थिति का राज
व्यर्थ और समर्थ का राज़
अव्यक्त बापदादा के सूक्ष्म वतन की दिनचर्या का राज़
कमल पुष्प सम जीवन का राज़
वरदानों का राज़
ईश्वरीय वरदानों का राज़
मोहजीत राजा का राज़
स्थूल और सूक्ष्म भोजन का राज़
जीवन में घाटे-फायदे का राज़
आत्म-विश्वास का राज़
विवाह और गन्धर्वी विवाह का राज़
आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति का राज़
सृष्टि-रचनात्मक शक्ति **(Cosmic Energy)** का राज़
सुखी जीवन जीने की कला का राज़
कछुआ, सर्प, भ्रमरी आदि के कर्मों और गुणों का राज़

आध्यात्मिक जीवन की सफलता का राज़
परमात्मा, ड्रामा और प्राकृतिक आपदाओं का राज़
ओम् और ओम् शान्ति का राज़
ईश्वरीय गवर्मेन्ट का राज़
अचानक के पेपर का राज़
एवर रेडी स्थिति का राज़
बालकपन और मालिकपन का राज़
परमार्थ और व्यवहार की सिद्धि का राज़
मास्टर सर्वशक्तिवान का राज़
मास्टर ऑलमाइटी अथॉर्टी का राज़
निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति का राज़
निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति को प्रखर करने का राज़
मास्टर नॉलेजफुल और पॉवरफुल का राज़

बाप समान बनने और बनाने का राज़
बापदादा की बच्चों से आशायें और उन आशाओं को पूरा करने का राज़
दाता-विधाता-वरदाता का राज़
परमात्मा और उनके द्वारा आत्म-कल्याण का राज़
साधारणता में महानता का राज़
कम खर्च बालानशीन का राज़
एकनाम-एकॉनामी का राज़
सच्ची दिल और कुशल दिमाग का राज़
सच्ची दिल पर साहेब राज़ी का राज़
परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार का राज़
दुआयें लेने और दुआयें देने का राज़
परमात्मा की दुआयें लेने का राज़
अविनाशी ज्ञान रतनों के महत्व का राज़
अन्नोन बट वेरीवेल नोन वारियर्स का राज़
सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म का राज़
मर्यादा पुरुषोत्तम का राज़
ईश्वरीय मर्यादायें, ब्राह्मण कुल की मर्यादायें और आसुरी कुल की मर्यादाओं का राज़
इच्छा-शक्ति और दृढ़ इच्छा-शक्ति का राज़

खुशी का पारा सदा चढ़ा रहेगा क्योंकि ज्ञान धन सर्वश्रेष्ठ धन है और ज्ञान धन से सम्पन्न आत्मा ही सम्पूर्णता अर्थात् सम्पन्नता अर्थात् सन्तुष्टता का अनुभव कर सकती है। इन सब राज़ों को जानने और अनुभव करने के लिए आत्म-स्थिति में स्थित होकर, ज्ञान-सागर परमात्मा के साथ बुद्धियोग स्थिर करके उन राजों का मनन-चिन्तन करेंगें, विचार-सागर मंथन करेंगें तब ही उनका गुह्य रहस्य अनुभव होगा और आत्मा उनका सुख अनुभव करेगी। ये ज्ञान के गुह्य रहस्य परम धन है क्योंकि जैसे धन से सुख की अनुभूति होती है, ठीक उसी तरह ज्ञान के गुह्य रहस्यों के अनुभव करने से भी आत्मा सुख का अनुभव करती है। इन गुह्य रहस्यों को समझना, धारण करना और कराना ही ब्राह्मण जीवन का परम कर्तव्य है। इसीलिए बाबा ने कहा - अनुभव सबसे बड़ी अथॉर्टी है, अनुभवी कब धोखा नहीं खा सकते।

''जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आंख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा रूहानी नज़र में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करता रहता हैं।'' अ.बापदादा 2.5.74

Q. ज्ञान सागर बाबा ने हमको क्या-क्या राज़ समझाये हैं और वे राज़ हमारी खुशी में कैसे वृद्धि कर सकते हैं तथा वह खुशी स्थाई कैसे रह सकती है?

ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, जो आत्मा उन राज़ो को जानकर, उन पर मनन-चिन्तन कर, उनको जीवन में धारण करती है, वह इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखती है और इसके परमानन्द को अनुभव करती है, इसलिए ही परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक के विभिन्न राज़ों का ज्ञान दिया है।

उन विभिन्न राज़ों से कुछ का विषय-वस्तु में पेज नम्बर ... पर वर्णन किया गया है।

''भक्ति और ज्ञान का राज़ अभी तुम बच्चों ने समझा है। सीढ़ी और झाड़ में यह सब समझानी है। ... फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। गति कहा जाता है शान्तिधाम को और सद्गति होती है यहाँ।

सद्गति के अगेन्स्ट होती है दुर्गति। ... अभी तुम बाप और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।'' सा.बाबा 27.7.04 रिवा.

''मुरली मिस कर देते हैं। बाप कहते हैं - कितनी गुह्य-गुह्य बातें तुमको सुनाता हूँ, जो सुनकर धारणा करना है। धारणा नहीं होगी तो कच्चे रह जायेंगे। बहुत बच्चे भी विचार सागर मंथन कर अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं।... तुमको तो अथाह खुशी होनी चाहिए।'' सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

Q. ज्ञान सागर बाप आकर हमको कौन-कौन से राज़ समझाते हैं, जिसके कारण हमारी चढ़ती कला होती है और जिसके लिए ही आधा कल्प हम बाप को याद करते हैं?

ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के सभी राज़ों का ज्ञान दिया है और उनमें स्थित होने की प्रक्रिया बताई है। जब तक वे राज़ हमारी बुद्धि में स्पष्ट नहीं होंगे और उनमें स्थित होने की प्रक्रिया का सफल अभ्यास नहीं होगा तब तक इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा अविनाशी सुख अनुभव नहीं कर सकेंगे। साथ ही बाबा ने इस सत्य का भी ज्ञान दिया है कि ये ज्ञान एक सेकेण्ड का भी है अर्थात् 'अपने को आत्मा समझ एक बाप दूसरा न कोई' की स्थिति में स्थित आत्मा के सारे कार्य परमात्मा सिद्ध करता है और वह आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि हमारी इस स्थिति की परीक्षा भी होगी और माया हमारी बुद्धि को परमात्मा से हटाने का पूरा प्रयत्न करेगी। रुस्तम से माया भी रुस्तम होकर लड़ती है।

''आर्टिस्ट जो इस ज्ञान को समझते हैं, उनकी बुद्धि में रहेगा - ऐसे-ऐसे चित्र बनायें, जो बहुतों का कल्याण हो जाये। रात-दिन बुद्धि इस बात में लगी रहे। ... तुमको अब अन्धों की लाठी बनना है। जो खुद ही सज्जे नहीं हैं, वे फिर औरों की लाठी क्या बनेंगे!'' सा.बाबा 17.4.07 रिवा.

''गहराई में नहीं जाते तब घबरा जाते हैं। अगर गहराई में जायें तो कभी भी कितना भी बड़ा हलचल वाला पेपर हो या बात हो लेकिन गहराई में जाने वाले घबरा नहीं सकते।... सागर के तले में जाने वाले बहुत माल लेकर आते हैं। बापदादा यह नहीं कहते कि बातें नहीं आयेंगी।

नॉलेज इज सोर्स ऑफ इन्कम का राज़
गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट का राज़
पढ़ाई और परीक्षा का राज़
फाइनल पेपर में पास होने का राज़
परीक्षा और पश्चाताप का राज़
देह से न्यारा होकर परमानन्द को अनुभव करने का राज़
न्यारा और प्यारा बनने का राज़
विश्व-शान्ति का राज़
सालवेन्ट - इन्सालवेन्ट स्थिति का राज़
तीन बाप का राज़
निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति का राज़
वर्तमान और भविष्य जीवन के सम्बन्ध का राज़

रुहानियत और रुहानी स्नेह का राज़
रुहानी सेना का राज़
हम सो, सो अहम् का राज़
सच्ची कमाई और झूठी कमाई का राज़
सच्चे त्याग का राज़
त्याग और भाग्य का राज़
त्याग-तपस्या और सेवा का राज
हद और बेहद का राज़
हद-बेहद के वैराग्य वृत्ति का राज़
वैराग्य और सन्यास का राज़
हद और बेहद के सन्यास का राज़
वानप्रस्त का राज़
निवृत्ति मार्ग और प्रवृत्ति मार्ग का राज़
पवित्र प्रवृत्ति मार्ग और पतित प्रवृत्ति मार्ग का राज़
सर्व के माननीय बनने का राज़
क्रिमिनल आई और सिविल आई का राज़
आत्मा और परमात्मा की रूह-रुहान का राज़
बाप और दादा की रूह-रुहान का राज़
ब्रह्मचर्य जीवन और दैवी-जीवन का राज़

अपकारी पर भी उपकार करने का राज़
सप्ताह का राज़
वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति और राहू की दशा का राज़
वर्णों का राज़
बाजोली का राज़
आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन मेले का राज़
विराट स्वरूप का राज़
सच्ची तपस्या का राज़
चार सब्जेक्ट ज्ञान-योग-धारणा-सेवा के **Aim Object** और फल का राज़
दैवी, आसुरी और ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान और उनके आत्मा पर प्रभाव का राज़
ब्राह्मण और देवताओं का राज़ और उनके परस्पर सम्बन्धों का राज़
शुभ भावना, शुभ कामना का राज़
लगन में मगन स्थिति का राज़

सागर मंथन का राज़
स्वाध्याय, पठन-पाठन का राज़
चिन्तन का राज़
मनन-चिन्तन का राज
स्व-चिन्तन और पर-चिन्तन का राज़
शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक का राज़
चिन्तन और चिन्ता का राज़ तथा चिन्तन और चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति का राज़
निर्भय और निश्चिन्त जीवन का राज़
भय और चिन्ता का राज़
बेफिकर बादशाह बनने का राज़
बेग़मपुर के बादशाह का राज
विघ्न और विघ्न-विनाशक स्थिति का राज़
निर्विघ्न जीवन बनाने का राज़
लाइट-हाउस, माइट-हाउस और सर्च-लाइट स्थिति का राज़
लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट का राज़
गंगा, जमुना आदि नदियों की महिमा का राज़
बाप के हाथ और साथ का राज़
ईश्वरीय इज्जत, दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत का राज़

नहीं, जितना आगे जायेंगे, उतनी सूक्ष्म बातें आयेंगी क्योंकि पास विद् ऑनर होना है ना। ... बापदादा को कम्बाइण्ड अनुभव करो तो पहाड़ भी रुई बन जायेगा।''

अ.बापदादा 17.3.07

''बच्चों का विचार करना चाहिए कि यह सतयुग में लक्ष्मी-नाराण राजा-रानी तथा प्रजा कहाँ से आये, उन्होंने यह राज्य कैसे लिया? अब तो कोई राजाई है नहीं। फिर सूर्यवंशियों से चन्द्रवंशियों ने कैसे राज्य लिया। लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक थे ना, उनकी 8 गद्दियां चलीं।... अब फिर नई दुनिया की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होगी।''

सा.बाबा 16.3.07 रिवा.

शुभ-चिन्तन

शुभ-चिन्तन अर्थात वह चिन्तन जिससे अपना और अन्य आत्माओं के कल्याण हो अर्थात् स्वयं को भी सुख की अनुभूति हो और अन्य आत्माओं को भी सुख की अनुभूति हो। भगवानुवाच - शुभ चिन्तक बनो और शुभ चिन्तन में रहो। शुभ चिन्तक ही शुभ चिन्तन कर सकता है और शुभ चिन्तन वाला ही शुभ चिन्तक बन सकता है। शुभ चिन्तन वाले की व्यर्थ चिन्तन, अशुभ चिन्तन से स्वत: ही बुद्धि हट जाती है। सार रूप में यही कहेंगे कि शुभ-चिन्तन का आधार है शुभ-दर्शन अर्थात् हम सदा ही शुभ देखें। किसी अशुभ दृश्य को देखते भी उसमें नीहित शुभ ही देखें क्योंकि इस विश्व-नाटक के हर दृश्य में, हर घटना में कुछ न कुछ शुभ अवश्य समाया हुआ है।

शुभ-चिन्तन का आधार है शुभ दर्शन। हमारा कोई संकल्प, बोल, कर्म ऐसा होगा, जिससे दूसरों का व्यर्थ चिन्तन चलेगा तो वह हमारा शुभ-चिन्तन चलने नहीं देगा। वह हमारे चिन्तन को सूक्ष्म में अवश्य प्रभावित करेगा। जब हम अपने ऊपर ऐसा ध्यान रखते हैं और सदा शुभ-चिन्तन में रहते हैं तो हमको परमात्मा पिता की और सर्वात्माओं की दुआयें मिलती हैं, जो हमारे सुखमय भविष्य का आधार बनती हैं।

यदि हम दूसरों का दोष देखेंगे, देखकर वर्णन करेंगे तो वह हमारा शुभ-चिन्तन चलने नहीं देगा। दूसरे का दोष देखने की हमारी आदत होगी तो वह आदत हमारे शुभ-चिन्तन को चलने नहीं देगी।

वह हमको घड़ी-घड़ी अशुभ-चिन्त की ओर खींच ले जायेगी।

शुभ-चिन्तन से आत्मा उन्नति को पाती है, अपने में शक्ति भरती है और शुभ-चिन्तक बनने से ही अन्य आत्माओं की सेवा कर सकते हैं, उनकी दुआयें मिलती है। इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए इन दोनों बातों की धारणा अति आवश्यक है। ज्ञान सागर बाप ने शुभ-चिन्तन के लिए अखुट खजाना दिया है, जो उस ज्ञान, गुण, शक्तियों के सदा चिन्तन में रहता है, वही अन्य आत्माओं के प्रति शुभ-चिन्तक बन सकता है अर्थात् शुभ-चिन्तन वाला ही शुभ-चिन्तक होता है। जो ईश्वरीय ज्ञान, गुण-शक्तियों से सदा सम्पन्न है, उसकी शुभ-चिन्तक की भावना कभी कम हो नहीं सकती। शुभ चिन्तन से ही आत्मा शक्तिशाली बनती है।

''आज बापदादा दो चीजें सौगात में दे रहे हैं - सदा शुभ चिन्तक और शुभ चिन्तन। शुभ चिन्तन से अपनी स्थिति बना सकते हो और शुभ चिन्तक बनने से अनेक आत्माओं की सेवा करेंगे।'' अ.बापदादा 22.1.70

''जो सरलचित्त बनता है, उसका प्रत्यक्ष में गुण क्या देखने में आता है? मधुरता। उसके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। ... आपके शुभचिन्तक बनने से सभी की चिन्तायें मिटती हैं। आप सभी की चिन्ताओं को मिटाने वाले शुभचिन्तक हो।'' अ.बापदादा 23.3.70

''होली मनाना अर्थात् सदा के लिए आज के दिन से बीती सो बीती का पाठ पक्का करना। यही होली मनाना है। ... अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में न लाना और चित्त में भी न रखना। एक होता है चित्त में रखना, दूसरा होता है चिन्तन में लाना और तीसरा होता है वर्णन करना।'' अ.बापदादा 23.3.70

''शुभ-चिन्तक सदा रहें, इसका विशेष आधार है - शुभ-चिन्तन। जिसका शुभ-चिन्तन सदा रहता है, वह अवश्य ही शुभ-चिन्तक है। ... सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खजाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों को प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं।'' अ.बापदादा 10.11.87

''शुभ-चिन्तक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी में रह सकते हैं। ... तुम रुहानी पर्सनॉलिटी

सतयुग-त्रेता की राजाई स्थापन होने और परिवर्तन होने का राज़
सतयुग-त्रेता की राज़ाई का राज़
सतयुग-त्रेता की राजाई के विधि-विधान का राज़
सतयुग के 8 जन्म और 8 गद्दियों का राज
8 गद्दियों और अष्ट रतनों का राज़
राजा-रानी, दास-दासी और साहूकार प्रजा बनने का राज़
विश्व महाराजा-महारानी बनने का राज़
बाहुबल, योगबल और विश्व की एकछत्र राजाई का राज़
दान-पुण्य का राज़
दान-पुण्य के विधि-विधान का राज़
दान और अविनाशी ज्ञान रतनों के दान का राज़
दान और गुप्त-दान का राज़
दानी, महादानी और वरदानी का राज़

नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करने का राज़
सफल कर सफलता मूर्त बनने का राज़
सफलता के सितारों का राज़
यज्ञ में बीज बोने का राज़
ईश्वरीय सेवा, उसके महत्व और उसमें सफलता का राज़
यज्ञ सेवा का राज़
आलराण्डर सेवाधारी का राज़
मन्सा सेवा का राज़
मन्सा सेवा के विधि-विधान और उसके महत्व का राज़
यथार्थ सोशल सर्विस का राज़
खुदाई खिज़मतगार का राज़
निर्विकारी और विकारी जीवन का राज़
वसुधैव कुटुम्बकम् का राज़
शिव और सालिग्राम का राज़
परमात्मा के साथ पार्ट बजाने का राज़
दोस्त और दुश्मन का राज़
खुदा दोस्त का राज़
दुश्मन को भी दोस्त बनाने का राज़

सत्य ज्ञान, उसकी कसौटी और उसके अनुभव का राज़
परमात्मा को पहचानने और उनका बनने का राज़
परमात्मा के गोद लेने और प्रवेश होने **(Adoptation and Re-incarnation)** का राज़
परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का राज़
भगवान, भाग्य और भाग्य-विधाता का राज
त्याग और भाग्य का राज़
भगवान बाप और भगवान को बच्चा बनाने का राज़
बाप और वर्से अर्थात् बाप का वारिस बनने और बनाने का राज़
परमात्मा की छत्रछाया का राज़
आत्मा का परमात्मा के साथ हिसाब-किताब का राज़
एक का हजारगुणा प्राप्ति के विधि-विधान का राज़
विश्व के इतिहास और भूगोल **(H. & G. of the World)** का राज़

धर्म और राज की स्थापना का राज
ज्ञान की धार्मिकता और राजनैतिकता का राज़
पवित्रता और प्रकृति के सम्बन्ध का राज़
यात्रा और मुसाफिर का राज़
तीर्थ, तीर्थ यात्रा और याद की यात्रा का राज़
भक्ति और ज्ञान के सम्बन्ध का राज़
नवधा भक्ति और उनके इष्ट के साक्षात्कार के सम्बन्ध का राज़
अव्यभिचारी भक्ति और व्यभिचारी भक्ति का राज़
ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का राज़
ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के रीति-रिवाजों का राज़
संगमयुग की रीति-रिवाज़, सतयुग की रीति-रिवाज़ और कलियुग की रीति-रिवाज़ों का राज
भक्ति मार्ग में देवताओं को पीठ न दिखाने का राज़
भक्ति के विभिन्न कर्म-काण्डों का राज़
भक्ति में बलि की प्रथा और ज्ञान मार्ग में बलि का राज़
काशी कलवट का राज़
ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा और लकी ज्ञान सितारों का राज़
'घट में ही सूरज ... 9 लाख तारे' का राज़
ग्रहण का राज़
आत्मा के घर से आने और घर वापस जाने का राज़

वाले सिर्फ गायन योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजन योग्य भी बनते हो।''

अ.बापदादा 10.11.87

''दो शब्द याद रखो। एक शुभ चिन्तन और दूसरा सभी के प्रति शुभ चिन्तक। शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक दोनों का सम्बन्ध है। अगर शुभ चिन्तन नहीं तो शुभ चिन्तक भी नहीं बन सकते। ... शुभ चिन्तक बन शुभ वायब्रेशन दो तो बदल जाते हैं।''

अ.बापदादा 18.1.96

''उनको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी। वे शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखेंगे तो और संकल्प आयेंगे ही नहीं। ... मंथन करने के लिए तो बहुत खजाना है। ... समय की कौन सी तेजी देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट नहीं करता है? ... ड्रामा में जो बात बीती, जिस रूप से बीती, वह फिर से रिपीट नहीं होगी। फिर 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगी।''

अ.बापदादा 26.1.70

2. अस्वस्थ चिन्तन

अस्वस्थ चिन्तन अर्थात् वह चिन्तन जिससे आत्मा का अपना और विश्व के पतन का कारण होता है, जिससे प्रकृति और प्राकृतिक वातावरण दूषित होता है। जिसके परिणाम स्वरूप आत्मायें दुख-अशान्ति का अनुभव करती हैं। जो आत्मा के पतन का मूल कारण है। जिससे शारीरिक एवं मानसिक रोग बढ़ते हैं। इसके अन्तर्गत मुख्यता -

व्यर्थ-चिन्तन

अहंकार और अहंकार के वश मान-अपमान, निन्दा-स्तुति की फीलिंग के कारण आत्मा व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन के जाल में फंस जाती है, जिससे उसका दिनोदिन पतन होता जाता है। एक बार व्यर्थ चिन्तन में फंसने के बाद उससे निकलना बहुत कठिन होता है, उसकी आदत पड़ जाती है।

हर वर्तमान घटना भविष्य घटना का आधार है और ड्रामा के सफल मंचन के लिए अति आवश्यक है,

इसलिए उसको टाला नहीं जा सकता है। परमात्मा भी उसके लिए कुछ नहीं कर सकता है क्योंकि वह ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है और जानता है कि इसके आधार पर ही ये विश्व-नाटक पांच हजार वर्ष तक चलने वाला है। इसलिए वह ड्रामा की हर घटना को साक्षी-दृष्टा होकर देखता है। वही आकर इस विश्व-नाटक का ज्ञान हम आत्माओं को देता है और हमको भी इसका साक्षी-दृष्टा बनाता है, जिससे हम आत्मायें व्यर्थ चिन्तन से मुक्त होकर, चढ़ती कला में जाती हैं। इस विश्व-नाटक की किसी भी घटना को देखकर उसके लिए चिन्तन करना, दुखी होना व्यर्थ है और वह अज्ञानता का परिचायक है।

अनेक बार देखा गया है कि अशुभ की कोई सम्भावना न होते हुए भी आत्मायें अशुभ की परिकल्पना करके भी अनेक प्रकार के व्यर्थ चिन्तन में अपना समय, शक्ति और संकल्प गँवाती हैं और कभी-कभी ऐसे कार्य और घटनायें, दृश्य,व्यक्ति, जिनसे उसका कोई लेना-देना नहीं होता, उसकी परिकल्पना करके उसके विषय में चिन्तन करता रहता है, जिससे अनेक प्रकार की मानसिक और शारीरिक व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। व्यर्थ चिन्तन स्वत: में एक मानसिक व्याधि है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है और वह आत्मा को दुखी बना देती है। व्यर्थ चिन्तन आत्मिक शक्ति का संचित खाता खत्म कर देता है और आत्मा के द्वारा अनेक प्रकार विकर्म कराकर आत्मा को गिरती कला में अवश्य ले जाता है। वे विकर्म आत्मा के अनेक प्रकार के दुखों का कारण बनते हैं।

व्यर्थ-चिन्तन का कारण है व्यर्थ-दर्शन अर्थात् जब हम कुछ न कुछ व्यर्थ देखते हैं, तब ही हमारा व्यर्थ चिन्तन चलता है या व्यर्थ देखे हुए की स्मृति हमारी मन-बुद्धि में संचित है, तब व्यर्थ-चिन्तन चलेगा।

इस प्रकार हम विचार करें तो जिस बात से हमारा कोई सरोकार नहीं, लेना-देना नहीं, उसके विषय में संकल्प करना, उसका चिन्तन करना भी व्यर्थ चिन्तन है।

जिसके लिए हम कुछ कर नहीं सकते, हमारे अधिकार एवं कर्तव्य क्षेत्र से परे है, हमारी शक्ति-सामर्थ से बाहर है, उसके विषय में चिन्तन करना भी व्यर्थ

ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के साक्षात्कार के अन्तर का राज़
देवता और असुरों का राज़
दैवी चलन और आसुरी चलन का राज़
दैवी गुणों और आसुरी गुणों का राज़
ईश्वरीय गुण, दैवी गुण और आसुरी गुणों के अन्तर का राज़
असुर से ब्राह्मण, ब्राह्मण से फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता बनने का राज़
देवताओं की महानता का राज़
जीवन की पहेली का राज़
यथार्थ जीवन जीने का राज़
सफल जीवन-व्यवहार का राज़
कर्मेन्द्रियजीत और इन्द्रियों के वशीभूत का राज़
स्वराज्य अधिकारी का राज़
स्वमान और सम्मान का राज़

अहंकार-हीनता और उससे मुक्त होने का राज़
अधिकार और कर्तव्य का राज़
रुहानी रोयालिटी और पर्सनॉलिटी का राज़
स्नेह और शक्ति के सन्तुलन (Balence) का राज़
साधन और साधना के सन्तुलन का राज़
बैलेन्स से ब्लेसिंग्स का राज़
जियो और जीने दो अर्थात् अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन का राज़
सच्ची स्वतन्त्रता का राज़
देह और देह की दुनिया से न्यारे अर्थात् 5 तत्वों से पार स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखने का राज़
उत्थान और पतन, सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का राज़
चढ़ती कला, उतरती कला अर्थात् सीढ़ी चढ़ने और उतरने का राज़
आत्मा की उतरती कला और चढ़ती कला का राज़
साइलेन्स और साइन्स का राज़ तथा उनके परस्पर सम्बन्ध का राज़
वायसलेस (Voiceless) और वाइसलेस (Viceless) स्थिति का राज़
प्रकृतिजीत बनने का राज़
प्रकृति का सहयोग और प्राकृतिक आपदाओं का राज़
पुरुष और प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध का राज़

ब्रह्मा भोजन का राज़
इन्द्र, इन्द्र-सभा और उसके विधि-विधान का राज़
ज्ञान वर्षा और इन्द्र का राज़
ज्ञान के तीसरे नेत्र और कुण्डलिनी जागरण का राज़
देवताओं के तीसरे नेत्र का राज़
त्रिनेत्री और त्रिकालदर्शी पन का राज़
सत्य नारायण की सच्ची कथा, अमर कथा, तीजरी की कथा का राज़
हिम्मते बच्चे मददे बाप का गुह्य राज़
सर्वशक्तिवान बाप की मदद का राज़
परमात्मा की मदद लेने और देने का राज़
बाप के साथ सर्व सम्बन्ध, सम्बन्ध निभाने और सर्व सम्बन्धों से सर्व प्राप्तियों का राज़
परमात्मा के साथ बाप, टीचर, सत्गुरु, सजनी-साजन, सखा आदि सर्व सम्बन्धों का राज़
आत्मा का आत्मा को शक्ति देने और लेने का राज़
गोबर्धन पर्वत को उठाने में अंगुली के सहयोग का राज़

''एक बल, एक भरोसा'' और एकरस स्थिति का राज़
हिंसा और अहिंसा का राज़
काम महाशत्रु है और उसके दुष्परिणाम का राज़
समर्पणता का राज़
सम्पूर्णता का राज़
सम्पूर्णता और समर्पणता के सम्बन्ध का राज़
सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता और उनके सम्बन्ध का राज़
सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान बनने का राज़
सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनने का राज़
ईश्वरीय प्राप्तियों का राज़
मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति का राज़
साक्षी स्थिति का राज़
साक्षात्कारमूर्त स्थिति का राज़
सच्चे सत्संग और सत्संग का जीवन में महत्व का राज़
निद्राजीत का राज़
योग-निद्रा का राज़
साक्षात्कार, दिव्य-दृष्टि एवं दिव्य-बुद्धि का राज़

चिन्तन ही है। उससे आत्मा का समय और शक्ति व्यर्थ जाता है।

हम अपनी दिनचर्या पर विचार करें और चेक करें तो देखेंगे अनेक बार हम रास्ता चलते भी अनेक बातों पर व्यर्थ ही सोचते रहते हैं, अनेक बातों का चिन्तन करते रहते हैं, जिनका हमारे से कोई सम्बन्ध नहीं हैं, जिसकी हमको कोई आवश्यकता नहीं है।

अशुभ-चिन्तन

किसी व्यक्ति के विषय में अशुभ सोचना, किसी के अशुभ की परिकल्पना करना, किसको दुख देने की सोचना, योजना बनाना, अशुभ कार्यों के विषय में सोचना, अशुभ पदार्थों के विषय में सोचना, विचार करना अशुभ चिन्तन है, जो एक प्रकार का विकर्म है और वह आत्मिक शक्ति का तीव्रता से ह्रास करता है और वह आत्मा को तीव्रता से गिरती कला में ले जाने वाला है। कलियुग अन्त में मनुष्य ऐसे अशुभ चिन्तन में अपना समय और शक्ति गँवाते हैं और गिरते जाते हैं।

अशुभ-चिन्तन का कारण है अशुभ-दर्शन। यदि हमारा अशुभ चिन्तन चलता है तो हमने कहाँ न कहाँ अशुभ देखा अवश्य है। इसलिए अशुभ चिन्तन के प्रभाव को बुद्धि में रखते हुए अशुभ देखने की प्रवृत्ति को त्याग देना है।

पर-चिन्तन

देह और देह के सम्बन्धों, दैहिक पदार्थों, सांसारिक बातों के विषय में सोचना अर्थात् चिन्तन करना, दैहिक बीमारी आदि के विषय में चिन्तन करना पर-चिन्तन है क्योकि आत्मा के लिए ये देह भी पर है अर्थात् आत्मा से अलग है। बाबा ने कहा है - परचिन्तन आत्मा के पतन की जड़ है। इस पर-चिन्तन के कारण ही सतयुग में आत्मा की सतोप्रधान स्थिति होते भी देह-भान और दैहिक पदार्थों के सम्बन्ध में आने से गिरती कला में जाती है। द्वापर से जब देहाभिमान आता है तो ये परिचिन्तन की स्थिति और तीव्र हो जाती है, जिससे आत्मा को गिरती कला में में तीव्रता आ जाती है है। इस सत्य को भी स्मृति में रखना है

कि सतयुग-त्रेतायुग में आत्मा में आत्मिक शक्ति होने के कारण आत्मा का देह पर पूर्ण नियन्त्रण होता है, जिससे आत्मा में विकारों की प्रवेशता नहीं होती, जिससे उसके कर्म विकर्म नहीं होते फलस्वरूप आत्मा दुख-अशान्ति से मुक्त रहती है। प्रकृति के अटल विधान के अनुसार आत्मिक शक्ति का सतत ह्रास होने के कारण द्वापर से देहाभिमान, आत्मा पर प्रभावित हो जाता है जिससे विकारों की प्रवेश्ता होती है, जिससे आत्मा का चिन्तन विकारों के वशीभूत हो जाता है, जिससे आत्मा के द्वारा अनेक प्रकार के विकर्मो होते है और उसके फल स्वरूप आत्मा दुख-अशान्ति को प्राप्त होती है। इसलिए किसी भी वस्तु या व्यक्ति के विषय में चिन्तन करना या उनके विषय में सोचना पर-चिन्तन है, आत्मा को तीव्रता से गिरती कला में ही ले जायेगा। इस प्रकार के पर-चिन्तन का मूल राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा आदि हैं।

स्व-चिन्तन और पर-चिन्तन का राज़

पर-चिन्तन पतन की जड़ है और स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है। सतयुग में आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, देवतायें स्वभाविक आत्माभिमानी होती हैं, इसलिए उनको आवश्यकतानुसार भौतिक वस्तु और व्यक्तियों की ही याद होती है। उनको यथार्थ रूप से न आत्मा की और न परमात्मा की याद होती है, इसलिए उनकी आत्मिक शक्ति का निरन्तर पतन होता है क्योंकि देह में आते ही आत्मा को यथार्थ ज्ञान भूल जाता है। यदि यथार्थ आत्माभिमानी होते अर्थात् यथार्थ रूप से आत्मा का ज्ञान भी होता तो परमात्मा की याद अवश्य ही होती और आत्मा की गिरती कला नहीं होती। ज्ञान सागर परमात्मा संगम पर ही सत्य ज्ञान देते हैं, तब ही मनुष्य आत्माभिमानी बनते और परमात्मा की याद आती है, आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन होता है। स्व-चिन्तन आत्मा का संगमयुग पर ही होता है और सारे कल्प में पर-चिन्तन ही होता है क्योंकि आत्मा के अतिरिक्त जो भी चिन्तन है, वह पर-चिन्तन ही है। यह देह भी पर है। परन्तु देवताओं में आत्मिक शक्ति होने के कारण उनकी सर्व आवश्यकतायें स्वत: पूरी होती हैं, इसलिए उनको किसी बात का चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं होती है। फिर भी जो थोड़ा भी संकल्प या स्मृति होती

लक्ष्मी-नारायण और सीता-राम का राज़
रुद्र माला और वैजन्ती माला का राज़
9 रतन का राज़
वैजन्ती माला का दाना बनने का राज़
रुद्र ज्ञान-यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ का राज़
रुद्र ज्ञान-यज्ञ और विनाश के सम्बन्ध का राज़
शिव की बारात का राज़
अशोक वाटिका और शोक वाटिका का राज़
शिव-शक्ति सेना और उसके युद्ध का राज़
भक्ति मार्ग के विभिन्न संगमों का राज़
होलिका दहन का राज़ - विनाश और कल्प परिवर्तन का राज़
परमात्मा और देवताओं को भोग अर्पण का राज़
अन्न और संग तथा उनके प्रभाव का राज़
खान-पान का जीवन पर प्रभाव का राज़
खान-पान के विधि-विधान का राज़

परमात्म प्यार का राज़
परमात्म-प्यार के विधि-विधान का राज़
परमात्म प्यार और पालना का राज़
आशुक-माशुक का राज़
शमा और परवाने का राज़
लव एण्ड लॉ का राज़
लव एण्ड लॉ के बैलेल का राज़
दधीचि ऋषि के समान स्थिति का राज़
राजा जनक के समान विदेही स्थिति का राज़
राजा जनक के समान ट्रस्टी स्थिति का राज़
भागीरथ का राज़
ईश्वरीय परिवार और विश्व-बन्धुत्व की भावना का राज़
ईश्वरीय परिवार, दैवी परिवार और आसुरी परिवार का राज़
आसुरी परिवार से ईश्वरीय परिवार में आने का राज़
ईश्वरीय परिवार और दैवी परिवार के परस्पर सम्बन्धों का राज़
शिवबाबा के भण्डारे का राज़

रामायण और महाभारत का राज़
महाभारत युद्ध का राज़
वेद-पुराणों का राज़
जड़-जंगम और चेतन प्रकृति का राज़
जड़ तत्वों के पावन होने का राज़
मेहमान और महानता का राज़
देह में रहते, देह से न्यारे अर्थात् अशरीरी होने का राज़
जन्म-मृत्यु और पुनर्जन्म का राज़
मृत्यु और अमरत्व का राज़
शिवालय-वेश्यालय का राज़
क्षीर सागर और विषय-सागर का राज़

जीते जी मरने का राज़
अमृत और विष का राज़
अमरलोक और मृत्युलोक का राज़
मृत्यु और मृत्यु-विजय का राज़
मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और उनसे मुक्त होने का राज़
अकाले मृत्यु का राज़
सुखद जन्म, सुखद जीवन और सुखद मृत्यु का राज़
अन्त मति सो गति का राज़
गर्भ-जेल और गर्भ-महल का राज़
शिव और शंकर का राज़
देवियों और उनकी अनेक भुजाओं का राज़
विष्णु और विष्णु के अलंकारों का राज़
शिव-जयन्ति, गीता-जयन्ति, रक्षा-बन्धन, दीपावली तथा अन्य त्योहारों का राज़
विभिन्न पर्वों और उत्सवों का राज़
श्रीकृष्ण और श्रीनारायण का राज़
राधे-कृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का राज
श्रीकृष्ण के जन्म का राज़
मुरलीधर की मुरली का राज़
गोपी-वल्लभ और गोप-गोपियों का राज़
गोप-गोपियों और मुरली का राज़

है, वह भौतिक वस्तु या व्यक्तियों की ही होती है।

राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, अहंकार, लोभ-मोह, इच्छा-आकांक्षा, अपने-पराये का भेद आदि आदि पर-चिन्तन के मूल कारण हैं और पर-चिन्तन के कारण आत्मा संगमयुग का देव-दुर्लभ सुख, परमानन्द अनुभव करने से वंचित हो जाती है क्योंकि ये सब आत्मा को स्व-स्वरूप में और परमात्मा की याद में स्थित होने नहीं देते हैं। स्व-स्वरूप में स्थित आत्मा परमानन्द का अनुभव करती है, जो आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है।

''मुख्य तौर पर तो पहली स्टेज - 'स्व-चिन्तक' कहाँ तक बने हैं? इस पर ही तीनों सब्जेक्ट्स का रिज़ल्ट आधारित है। सारे दिन में चेक करो कि स्व-चिन्तक कितना समय रहते हैं? जैसे विश्व-परिवर्तक बनने के कारण विश्व-परिवर्तन के प्लेन्स बनाते रहते हो, समय भी निश्चित करते ही रहते हो, ...ऐसे ही स्व-चिन्तक बन, सम्पूर्ण बनने की विधि हर रोज़ नये रूप से, नई युक्तियों से सोचते हो?''

अ.बापदादा 1.2.75

''शुभ-चिन्तक अर्थात् ज्ञान-रतनों से भरपूर। ... शुभ-चिन्तन वाला सदा अपने सम्पन्नता के नशे में रहता है। ... पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन वाला सदा खाली होने के कारण अपने को कमजोर अनुभव करेगा।'' अ.बापदादा 10.11.87

विषय-चिन्तन

वर्तमान जगत में विषय वासनाओं का बाजार अति गर्म है। हर आत्मा विषय-वासनाओं के वशीभूत है और विषय-वासनाओं के वशीभूत व्यक्ति जो कुकृत्य इस जगत में कर रहे हैं, उनको देखकर, उनको सुनकर, उनको पढ़कर इस दुनिया से घृणा आती है परन्तु विश्व-नाटक का ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है, जिस कारण हम ये भी जानते हैं कि इस विश्व-नाटक में वे पार्ट भी चलने ही हैं और दुनिया पतन की अन्तिम स्थिति में जानी हीं है। विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार दुनिया अपने निश्चित समय पर ही परिवर्तन होगी, इसलिए उसके विषय में तो हम कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु अपने आत्म-कल्याण के लिए हमको उनकी ओर से अपने आंख-कान बन्द करके, उनके विषय में निर्संकल्प होकर अपने अभीष्ठ लक्ष्य के लिए ही सोचना, चिन्तन करना

चाहिए। जो ऐसी घटनाओं के विषय में सुनता, पढ़ता, सोचना, वे उसके जीवन को भी कुछ न कुछ अवश्य प्रभावित करती हैं। जिस चीज को हम अपने अन्दर स्थान देते और चिन्तन करके, सोच करके हजम करते, उसका प्रभाव हमारे जीवन पर अवश्य होता है। इसलिए बाबा ने कहा है - ऐसी बातों को न सुनो, न देखो, न वर्णन करो, न चिन्तन करो। जहाँ ऐसी कोई बात हो, दृष्य हो, उस स्थान से हट जाना चाहिए। यदि हमारे मन-बुद्धि में ऐसा चिन्तन चले तो मुरली आदि पढ़कर, अच्छे गीत आदि सुनकर अपनी बुद्धि की दिशा को परिवर्तन करना चाहिए।

3. **सामान्य चिन्तन**

सामान्य चिन्तन अर्थात् जो स्वभाविक चलता ही है, जिसका उसके आध्यात्मिक उत्थान-पतन से बहुत कम सम्बन्ध होता है। इसके अन्तर्गत जीवात्मा का वह चिन्तन आता है, जो व्यवहारिक जीवन के लिए चिन्तन चलता है। जैसे पढ़ाई-लिखाई, धन्धा-धोरी आदि आदि के लिए। सामान्य चिन्तन जीवात्मा के लिए संसार में रहने के लिए अति आवश्यक है परन्तु वह भी समयानुसार अस्वस्थ अवश्य हो जाता है क्योंकि हर वस्तु, व्यक्ति, गुण-धर्म सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते ही हैं। ऐसे ही सामान्य चिन्तन में भी समयानुसार अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप वह भी आत्मा के पतन का कारण बन जाता है। आत्म-कल्याण की अभिलाषी आत्मा को आत्म-चिन्तन, प्रभु-चिन्तन और सामान्य चिन्तन के मध्य सन्तुलन अवश्य रखना चाहिए तब ही वह चढ़ती कला की ओर जा सकता है। अति का सामान्य चिन्तन भी आत्मा के पतन का ही कारण बन जाता है। इसलिए बाबा कहते हैं - अति के बाद अन्त गाया हुआ है। साइन्स जीवन के लिए आवश्यक है लेकिन वे जो अति में जा रहे हैं, वह अन्त की ही निशानी है।

शारीरिक स्वास्थ्य आवश्यक है, उसके विषय में विचार करना और पुरुषार्थ करना आवश्यक है परन्तु शरीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्याधिक चिन्तन गिरती कला का कारण बन जाता है। शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मिक कल्याण दोनों का सन्तुलन ही चढ़ती कला

जीवन में परम प्राप्ति का राज़
सुख, परम सुख और पुरुषोत्तम संगमयुग के सुख का राज़
भौतिक सुख, इन्द्रीय सुख और अतीन्द्रिय सुख, ज्ञान का सुख, परमात्म मिलन के सुख का राज़
परमात्मा के दिल तख्त और दिल तख्तनशीन होने का राज़
अकाल तख्त का राज़

पाण्डव-कौरव और यादव सेना का राज़
गीता, गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता का राज़
यदा यदाहि ... सृजाम्यहं का राज़
जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है का राज़
मन्मनाभव-मध्याजी भव, नष्टोमोहा - स्मृतिलब्धा का राज़
श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़
विनाशकाले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति और विप्रीतबुद्धि विनश्यन्ति का राज़
परमात्मा और सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता का राज़
प्रत्यक्षता और प्रत्यक्ष प्रमाण का राज
आस्तिक और नास्तिक का राज़
निश्चय, नशे और सिद्धि-स्वरूप का राज़
विनाश और विनाश की प्रक्रिया का राज़
स्थापना और स्थापना की प्रक्रिया का राज़

एडवान्स पार्टी, उनके कर्तव्य का राज़
एडवान्स पार्टी और योगबल से जन्म का राज़
स्थापना-विनाश और सिविल वार, एटॉमिक वार, नेचुरल केलेमिटीज का राज़
स्थापना, विनाश और पालना के सम्बन्ध का राज़
स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का राज
स्व-कल्याण से विश्व-कल्याण का राज़
दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन का राज़
राम और रावण का राज़
रावण के दस शीश का राज़
कुम्भकरण का राज़
भस्मासुर का राज़
विष्णु और महालक्ष्मी की चार भुजाओं का राज़

मधुवन (पाण्डव भवन) का राज़
मधुवन निवासियों के भाग्य का राज़
देलवाला, अचलगढ़ मन्दिर और तीर्थराज आबू का राज़
दिल्ली दरबार - इन्द्रप्रस्त का राज़
भारत और भारत के प्राचीन राजयोग का राज़
भारत की राजनैतिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता-परतन्त्रता का राज़
भारत और स्थापना-विनाश के सम्बन्ध का राज़
भारत और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया का राज़
भारत और खूने नाहेक खेल का राज़
सोमनाथ मन्दिर, राजा विक्रमादित्य और भक्ति मार्ग के प्रारम्भ होने का राज़
कृष्ण और क्रिश्चियन्स के सम्बन्ध का राज़

पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़
पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास का राज़
पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन के महत्व का राज़
ब्राह्मण जीवन की महानता का राज़
सिद्धि-स्वरूप स्थिति का राज़
ब्राह्मण जीवन की सिद्धियों का राज़
व्यक्त में अव्यक्त मिलन का राज़
अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन के सुख का राज़
मुक्ति-जीवनमुक्ति और संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का राज़
परमात्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़
आत्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़
संगमयुग और अमृत-वेला का राज़
सायंकाल के सन्धिकाल का राज़
भूतकाल और भविष्य काल का वर्तमान से सम्बन्ध का राज़
भूत, वर्तमान और भविष्य स्थिति के दर्पण का राज़
वर्तमान प्राप्तियों का भविष्य प्राप्तियों से सम्बन्ध का राज़
जीवन में सच्ची खुशी का राज़ अर्थात् सच्ची सुख-शान्ति का राज़
सुख - दुख का राज़
दुख-अशान्ति की पहेली के हल का राज़
परम सुख और परम दुख का राज़

का आधार है। देश-काल, परिस्थिति, आवश्यकता को विचार करके ही शरीरिक स्वास्थ्य का भी चिन्तन करना चाहिए। ऐसे जीवन-व्यवहार के लिए परमात्मा पिता की श्रीमत है - व्यवहार और परमार्थ में सन्तुलन रखो।

वास्तविकता पर विचार करें तो लक्ष्मी-नारायण या सतयुग आदि के देवी-देवतायें जो सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी थे, जिनमें कोई व्यर्थ-चिन्तन, अशुभ-चिन्तन नहीं था परन्तु वे भी सामान्य-चिन्तन के आधार पर या कारण गिरती कला में जाते हैं और वे भी द्वापर से पर-चिन्तन, व्यर्थ-चिन्तन, अशुभ-चिन्तन में आकर विकारों के वशीभूत हो जाते हैं। संगमयुग पर परमात्मा ही इस सत्य का ज्ञान देते हैं और सामान्य-चिन्तन और स्व-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन के मध्य सन्तुलन रखने की श्रीमत देते हैं।

(ब)

संक्षेप में हम विचार करें तो चिन्तन दो प्रकार होता है - एक है **चढ़ती कला का चिन्तन** और दूसरा है **उतरती कला का चिन्तन** अर्थात् कल्याणकारी चिन्तन और अकल्याणकारी चिन्तन।

चढ़ती कला का एकमात्र आधार परमात्मा और उसके द्वारा दिया हुआ ज्ञान है, वह जो विषय-वस्तु देता है, ज्ञान देता है, कार्य देता है, उसके विषय में चिन्तन करना ही चढ़ती कला का आधार है। जिसमें आत्मा-परमात्मा का ज्ञान, ड्रामा के विभिन्न राज़ों का ज्ञान, ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों का चिन्तन, ईश्वरीय सेवार्थ चिन्तन करना है, जो ही आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला का आधार है।

आत्मा-परमात्मा के विषय में, ड्रामा के विभिन्न राज़ों के विषय में, ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों के विषय में, ईश्वरीय सेवा आदि के विषय में चिन्तन के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार का चिन्तन उतरती कला का ही निमित्त कारण अवश्य होता है। विचारणीय तथ्य है कि

सतयुग में आत्मा सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होती तो भी आत्मा की उतरती कला ही होती है अर्थात् सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आत्मा जो भी चिन्तन करती है, वे सब उतरती कला के कारण अवश्य बनते हैं। साइन्स के लिए यद्यपि बाबा के महावाक्य हैं कि वह भी सतयुग के निर्माण में काम आयेगी परन्तु साइन्स के उन साधनों का निर्माण करने वाले अविष्कारक भी उतरती कला में ही जाते हैं क्योंकि उनको यथार्थ आत्मिक ज्ञान नहीं होता, इसलिए उनका उन साधनों को निर्माण करने का लक्ष्य और उद्देश्य चढ़ती कला का नहीं होता है। उनका लक्ष्य देहाभिमान, अहंकार, राग-द्वेष, मान-शान आदि की भावना से प्रेरित होता है। उनका परमात्मा के साथ कोई सम्बन्ध भी नहीं होता है, इसलिए वह चिन्तन भी आत्मा की उतरती कला का ही है। ऐसे कार्य जो-जो कार्य, अविष्कार शुभ-भावना शुभ-कामना और परमात्मा की प्रेरणा से किया जाता है, ईश्वरीय सेवार्थ किया जाता है, ईश्वरीय सेवा के काम में आता है, वह चढ़ती कला का हो जाता है।

जो आत्मायें परमात्मा की प्रेरणा अनुसार उन वैज्ञानिकों की अविष्कारित गुण-शक्ति-साधन को नये विश्व के निर्माण के कार्य उपयोग करेंगे, वे ही चढ़ती कला में जायेंगे अर्थात् अविष्कार करने वाले सभी वैज्ञानिक सतयुग में नहीं जायेंगे।

साकार ब्रह्मा बाप के साकार साथ का राज़
ब्रह्मा बाबा की सम्पूर्णता और समर्पणता का राज़
ब्रह्मा बाबा की महानता का राज़
फॉलो फादर का राज़
सन शोज फादर, फादर शोज सन का राज़
ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों का राज़
ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्यों की विशेषताओं का राज़ अर्थात् ज्ञान
कमलासन और कमलासनधारी का राज़
न्यारे और प्यारे बनने का राज़
ब्रह्मा बाबा - सतयुग के प्रथम नारायण और राजा विक्रमादित्य का राज़
आदि देव, आदम, एडम का राज़
ब्राह्मण और ब्राह्मणों के द्विज जन्म का राज़
ब्रह्मा कुमार-कुमारियों का राज़
योगबल - भोगबल का राज़
योगबल और भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति का राज
श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख का राज़
योगबल से देह धारण करने और देह त्याग का राज़
योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव का राज़

भारत का राज़
भारत और भगवान का राज़,
भारत और स्वर्ग-नर्क का राज़
भारत की सम्पन्नता और महानता का राज़
भारत खण्ड की अविनाश्यता का राज़
भारत के उत्थान-पतन और उसके विश्व के उत्थान-पतन से सम्बन्ध का राज़
भारत की सीमाओं और भारत की सीमाओं के विस्तार और संकुचन का राज़
आर्य और अनार्य का राज़
भारत और भगवान के सम्बन्ध का राज़
भारत और भारत से विभिन्न धर्म और सभ्यताओं के सम्बन्ध का राज़
भारत भूमि पर विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं के शासन का राज़
भारत और विश्व-परिवर्तन का राज़
'आबू तीर्थ महान' का राज़

धर्मराज की ट्रिबुनल का राज़
कब्रदाखिल और कब्र से जगाने का राज़
क्यामत अर्थात् विनाश का राज़

पवित्रता का राज़
सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता का राज़
सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता का राज़
ब्रह्मचर्य व्रत और ब्रह्मचारी जीवन का राज़
ब्रह्मचर्य व्रत तथा पवित्रता में अन्तर का राज़
संगमयुग की पवित्रता और उसका भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप से सम्बन्ध का राज़
स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग की राजधानी की स्थापना का राज़
स्वर्ग में ऊंच पद पाने का राज़
पुरुषार्थ का राज़
यम अर्थात् संयम और नियम का राज़
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज़
पुरुषार्थ और भाग्य का राज़
पुरुषार्थ, प्राप्ति (सुख-दुख) और ड्रामा का राज़
ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा का राज़
मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् गति-सद्गति का राज़

ब्रह्मा का राज़
ब्रह्मा के अस्तित्व का राज़ अर्थात् कैसे शिव बाबा की ब्रह्मा तन में प्रवेशता और ब्रह्मा नामकरण का राज
ब्रह्मा के 84 जन्मों और परमात्मा के ब्रह्मा तन में प्रवेश होने का राज़
आत्मायें अविनाशी हैं और परमात्मा भी अविनाशी है तो परमात्मा पिता कैसे है, उसका राज़
परमात्म के मात-पिता बनने का राज़
जगतपिता और परमपिता का राज़
जगदम्बा और जगतपिता का राज़
ब्रह्मा और ब्रह्मा-सरस्वती का राज़
बेहद के दिन और रात अर्थात् ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात का राज़
ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा अर्थात् ब्रह्मा और कृष्ण का राज़
श्याम-सुन्दर का राज़
ब्रह्मा की अनेक भुजाओं और चतुर्मुख का राज़

चढ़ती कला का चिन्तन	-	उतरती कला का चिन्तन
संग - परमात्मा और चढ़ती कला के पुरुषार्थियों का संग, उनका चिन्तन पंच में रहते		दुनियावी मनुष्यों का संग और उनके विषय में चिन्तन, पंच तत्वों के सम्पर्क
तत्वों के सम्पर्क में रहते भी आत्मिक स्मृति और उसके विषय में चिन्तन		उनका ही चिन्तन
पठन-पाठन - मुरली, ज्ञान के		बाहर के उतरती कला वाले व्यक्तियों द्वारा
साहित्य का पठन-पाठन और चिन्तन		रचित साहित्य का पठन-पाठन और उसका चिन्तन
खान-पान - शुद्ध खान-पान और उसके विषय में चिन्तन		अशुद्ध खान-पान और उसका चिन्तन
व्यवहार - व्यवहार में भी आत्मिक दृष्टि रखना और उसके विषय में चिन्तन करना अर्थात् जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक कर्म करना और उसके विषय में ही चिन्तन ईश्वरीय सेवा का चिन्तन		बाहरमुखता का व्यवहार - लोभ वश अधिक धन आदि के लिए व्यवहार करना और उसका चिन्तन। ईर्ष्या-द्वेष के वश दूसरों के अहित का चिन्तन करना।

चिन्तन, स्मरण अर्थात् याद और सुमिरण का स्वरूप और उनमें अन्तर

बाबा ने मुरलियों कुछ महावाक्य उच्चारण किये हैं, उन पर विचार करें तो तीनों शब्दों के भावार्थ समझ में आ जायेगा कि उनमें क्या अन्तर है, उसका स्वरूप क्या है।
जैसे बाबा ने कहा है -
(A) अपनी घोट तो नशा चढ़े।
तुमको बाबा जो समझाता है, ज्ञान देता है, उस पर मनन-चिन्तन करना है।
तुमको ज्ञान-सागर के तले में जाना है,सागर के तले में जाओगे तो अनेक रत्न मिलेंगे।

तुम जज करो बाबा जो सुनाता है, वह राइट है या साधु-सन्त सुनाते, शास्त्रों आदि में जो लिखा है, वह सत्य है।
दूध को मथने से मक्खन निकलता है, पानी को मथने से समय-शक्ति व्यर्थ जाती है।
तुमको स्वदर्शन-चक्रधारी बनना है।
''विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है।... नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे ऐसे हर्षित रहते हैं।... जो जितना ही ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे उतना ही हर्षित रहते हैं।... व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता।'' अ.बापदादा 16.6.72

(B) तुमको बाप और घर को याद करना है।
तुमको स्वर्ग को याद करना है।
तुमको किसी वस्तु या देहधारी व्यक्ति को याद नहीं करना है, एक निराकार बाप को ही याद करना है।
सूक्ष्म देवताओं को भी याद नहीं करना है।
किसी देहधारी की याद से तुम्हारे पाप नहीं कटेंगे।

(C) तुमको यहाँ कोई जाप नहीं करना है।
तुमको कोई माला आदि का सुमिरन नहीं करना है।
तुमको शिव-शिव भी जपना या मुख से कहना नहीं है लेकिन बाप को याद करना है।
मन में कोई जाप नहीं करना है, बाप को याद करना है। जैसे आशुक-माशुक एक-दूसरे को याद करते हैं। वे कोई सुमिरन या जाप नहीं करते। स्वभाविक एक-दूसरे की याद आती है।

चिन्तन एक ऐसी प्रक्रिया है, जो विस्तार को पाती है। जैसे वृक्ष बढ़ता है, शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं, बाद में फूल-फल आते हैं, जिनका उपभोग करके सुख मिलता है, शक्ति मिलती है। ऐसे ही परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान-गुण-शक्तियों का चिन्तन करने से ज्ञान-गुण-शक्तियाँ विस्तार को पाती हैं और उससे

युद्ध और युद्ध के मैदान का राज़
रुस्तम से माया के भी रुस्तम होकर लड़ने का राज़
योगानन्द (परमानन्द) और विषयानन्द का राज़

कर्मों की गहन गति का राज़
कर्म के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान का राज़
विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया का राज़
सुकर्म-अकर्म-विकर्म का राज़
सुकर्म कर्म करने के विधि-विधान का राज़
कर्म और कर्म फल का राज़
निष्काम कर्म का राज़
विकर्माजीत सम्वत् और विकर्मी सम्वत् का राज़
कर्म और ड्रामा के विधि-विधान के सम्बन्ध का राज़
कर्मातीत अवस्था का राज़
कर्मातीत स्थिति और कर्म-बन्धन की स्थिति का राज़
कर्मभोग और कर्मयोग का राज़ और कर्मभोग से सहज मुक्त होने की विधि का राज़
कर्मभोग के सूली से कांटा बनने का राज़
दैहिक और मानसिक व्याधियों के कारण और निदान का राज़
कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का राज़
साक्षी - कर्मातीत - मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का राज़
कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का राज़
कर्मातीत स्थिति और विनाश के सम्बन्ध का राज़
धर्म और कर्म का राज़
पतित और पावन का राज़
आत्मा के पावन से पतित और फिर पतित से पावन बनने का राज़
आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़
पाप-पुण्य का राज़
आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़
पुण्यात्मा, पवित्रात्मा और पापात्मा का राज़
आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का राज़
पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का राज़
धर्मराज और धर्मराजपुरी का राज़
धर्मराजपुरी के विधि-विधान का राज़
धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने का राज़

आदि सनातन देवी-देवता धर्म और हिन्दू धर्म का राज़
सनातन शब्द का राज़ अर्थात् हिन्दू धर्म से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम लगने का राज़
सृष्टि में जनसंख्या वृद्धि और कम होने का राज़
कल्प-वृक्ष की आयु का राज़
कल्प-वृक्ष की आयु लाखों वर्ष नहीं, **5000** वर्ष है का राज़
कल्प-वृक्ष के अक्षयपन अर्थात् अनादि-अविनाश्यता का राज़
वृक्षपति, वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा का राज़

योग अर्थात याद का राज़
योग के अर्थ और उसके महत्व का राज़
योग के विधि-विधान का राज़
योग में आंखें खोलकर अभ्यास करने का राज़
राजयोग और हठयोग के अन्तर का राज़
निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि का राज़
अन्तर्मुख अर्थात् निर्वान स्थिति का राज
बिन्दु अर्थात् बिन्दु रूप स्थिति का राज़
बिन्दु रूप स्थिति के अभ्यास का महत्व
बिन्दुरूप स्थिति और अव्यक्त स्थिति का राज़
विभिन्न प्रकार के योग और उनका राजयोग से सम्बन्ध का राज़
कर्मयोग, ज्ञान योग, भक्ति योग का राज़
ज्ञानयोग मार्ग
निष्काम कर्मयोग मार्ग
राजयोग मार्ग
राजयोग, हठयोग, राजऋषि, ब्रह्मऋषि, राजयोगी, हठयोगी का राज़
राजयोग-हठयोग की समानताओं और असमानताओं का राज़
रुहानी ड्रिल का राज़ और अभ्यास
योग की सफलता के लिए योगाभ्यास अर्थात् आध्यात्मिक ड्रिल का ज्ञान
एकान्त और एकाग्रता का राज़
स्मृति और विस्मृति का राज़
स्मृति से समर्थी का राज़
मौन का राज़ और योग की सफलता में उसके महत्व का राज़
माया, माया की प्रवेशता, माया से युद्ध और मायाजीत बनने का राज़

जो फल निकलता है, उससे आत्मा को सुख-शान्ति-शक्ति की अनुभूति होती है।

बाबा जो ज्ञान देता है वह एक आध्यात्मिक विज्ञान (Spiritual Science) है, जिससे हर बात की वास्तविकता, उसके कारण और प्रभाव, उसके सम्बन्ध में अंक-आंकड़े (Cause and Effect, Facts and Figures) सब समझ में आते हैं। बाबा जो ज्ञान देते वह अन्धश्रृद्धा से समझने का नहीं है बल्कि वह विवेकात्मक और विवेचनात्मक एवं तर्कसंगत है, इसलिए उसको चिन्तन कर धारण करना है। तब ही उसका यथार्थ सुख अनुभव होगा।

इस सम्बन्ध में आदरणीया गुल्जार दादी और जानकी दादी का वार्तालाप स्मरण में आता है। एक बार गुल्जार दादी ने क्लास कराया तो उन्होंने कहा आप सबको दिलखुश मिठाई रोज़ खानी है, जो जानकी दादी जी ने भी सुना। बाद में जब गुल्जार दादी और जानकी मिले तो जानकी दादी ने गुल्जार दादी को कहा - दादी आपने क्लास में कहा आप सबको दिलखुश मिठाई रोज़ खानी है परन्तु दिलखुश मिठाई बनायेगा कौन? तब गुल्जार दादी ने जानकी दादी को कहा - दादी ये मिठाई बनानी आपको है। क्योंकि का हर समय ज्ञान का चिन्तन चलता रहता है और वे बाबा की मुरली की हर प्वाइन्ट की गहराई में जाकर उसका स्पष्टीकरण करती हैं। जानकी दादी का हर समय चिनतन चलता रहता है और उसको सबको सुनाने का उमंग सदा रहता है।

बाबा की साकार मुरलियों को ध्यान से पढ़ें तो हमको अनुभव होगा कि ब्रह्मा बाबा का कितना चिन्तन चलता था। बाबा एक बात को एक दिन कहते थे, दूसरे दिन उसमें सुधार (Addition and Correction) भी करते थे। बाबा कहते थे - मैं अमृतवेले जल्दी उठकर बच्चों के लिए गरम-गरम हलवा बनाता हूँ। चित्रों में भी बाबा सुधार के लिए राय देते थे। ब्रह्मा बाबा अपना अनुभव सुनाते कि बाबा की याद में और ज्ञान के चिन्तन में नींद भी फिट जाती है।

''जब तुम सम्पूर्ण बन जाते हो तो तुम्हारा शरीर बदल जाता है। तब तुम पूजा लायक बनते हो। ... तुमको जाप नहीं करना है। जाप और याद में रात-दिन का फर्क है। याद करना कोई जाप नहीं है। मुख से कुछ बोलना नहीं है।'' सा.बाबा 29.3.07 रिवा.

द्वितीय अध्याय (Second Chapter)

कुछ अन्य विषय जिनका, हमारे चिन्तन से घनिष्ट सम्बन्ध है और उनका चिन्तन करना भी आध्यात्मिक जीवन की सफलता और ईश्वरीय सेवा के लिए अति आवश्यक है। चिन्तन एक पाचन-क्रिया है अर्थात् जीवात्मा जो अपनी स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से ग्रहण करता है, वह चिन्तन के द्वारा उसके संस्कारों में जाता है और वे संस्कार उसके संकल्प, बोल और कर्म का आधार बनते हैं।

चिन्तन, परमात्मा और आत्मा

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उनको तो चिन्तन करना नहीं पड़ता है क्योंकि उनकी बुद्धि में सारा ज्ञान है, जो अपने समय आवश्यकतानुसार स्वत: इमर्ज होता है परन्तु आत्मायें देहभान और देहाभिमान में आने के कारण विस्मृति में आ जाती हैं, उनकी आत्मिक शक्ति क्षीण हो जाती है, इसलिए उनकी बुद्धि में समय ज्ञान इमर्ज नहीं होता है। उनकी बुद्धि में भी समय ज्ञान इमर्ज हो, याद आये, उसके लिए उनको चिन्तन करना होता है। परमात्मा ज्ञान का सागर है और आत्माओं को भी अपने समान बनाने के लिए इस धरा पर आये हैं, इसलिए वे आत्माओं को सदा ही प्रेरणा देते रहते हैं कि तुम इस ज्ञान का चिन्तन करके इसे धारण करो।

चिन्तन कैसे करना चाहिए, क्या-क्या चिन्तन करना चाहिए, कब और कैसे चिन्तन करेंगे तो तुम्हारी आत्मिक उन्नति होगी, ये सब ज्ञान परमात्मा ही देते हैं।

''सवरे-सवेरे उठकर याद करना चाहिए, विचार-सागर मन्थन करना चाहिए। ... जो सब बातें समझकर औरों को भी समझाते हैं, बाबा उनको लायक समझते हैं। वे ही स्वर्ग में ऊंच पद पाने के लायक हैं। ... ये सब बातें अच्छी रीति समझने की हैं।''

सा.बाबा 27.1.07 रिवा.

''क्या शिवबाबा को नशा चढ़ेगा ? जिनको पूरा नशा चढ़ता है, वे उस नशे से समझाते हैं। पहले तो नशा ब्रह्मा को चढ़ता है, इसलिए शिवबाबा कहते हैं - फॉलो फादर। ...

विश्व-नाटक और अहंकार-हीनता, ऊंच-नीच के भाव का राज़
विश्व-नाटक एवं योग का राज़
विश्व-नाटक, कर्म और कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक और हमारे कर्तव्य का राज़
विश्व-नाटक और मान-अपमान, ... जीत-हार में समान स्थिति का राज़
विश्व-नाटक और खेल-भावना का राज़
विश्व-नाटक और समय की विशेषता का राज़
विश्व-नाटक, आत्मा, साधन-सम्पत्ति और परमानन्द का राज़
विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का राज़
विश्व-नाटक और अधिकार एवं कर्तव्य का राज़
विश्व-नाटक और मोक्ष का राज़
विश्व-नाटक और हीरो पार्ट का राज़
विश्व-नाटक और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़
जो हुआ अच्छा हुआ ...जो होगा अच्छा होगा का राज़
विश्व-नाटक और 'नथिंग न्यू' का राज़
विश्व-नाटक और व्यर्थ चिन्तन का राज़
विश्व-नाटक और अज्ञानता (Ignorance) का राज़

तीनों लोकों का राज़
ब्रह्म लोक (ब्रह्माण्ड) का राज़
सूक्ष्म वतन का राज़
सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा - विष्णु - शंकर का राज़
स्थूल वतन का राज़
त्रिलोकीनाथ का राज़

कल्प वृक्ष का राज़
कल्प-वृक्ष की कलम का राज़
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और उसका विभिन्न धर्मों के साथ सम्बन्ध का राज़
संसार में विभिन्न धर्मों की स्थापना और सबके विलीन होकर एक सत धर्म की स्थापना का राज़
परमात्मा और विभिन्न धर्म स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ परकाया प्रवेश का राज़
एक धर्म की आत्माओं का दूसरे धर्मों में परिवर्तित होने और कल्पान्त में अपने मूल धर्म में वापस आने का राज़

आत्मा के परमधाम से आने और वापस जाने का राज़
आत्मा के सतयुग और कलियुग में देह त्याग का राज़
आत्मिक प्यार का राज़
आत्मा की चेतनता की परख का राज़

सृष्टि-चक्र का राज़
विश्व-नाटक और उसकी संरचना का राज़
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का राज़
विश्व-नाटक और परमात्मा-आत्मा का राज़
विश्व-नाटक के गुण-धर्मों (Characterstics) का राज़
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का राज़
विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्तों का राज़
विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारिता के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक के सतत परवर्तनशीलता और विविधता का राज़
विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का राज़
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के रि-शूटिंग का राज़
विश्व-नाटक की परमानन्दमयता का राज़
विश्व-नाटक और सुख-दुख एवं आनन्द का राज़
विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का राज़
विश्व-नाटक और पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़
विश्व-नाटक और सूर्य, चांद, तारों के सम्बन्ध का राज़
विश्व-नाटक और सुखधाम, दुखधाम, शान्तिधाम का राज़
विश्व-नाटक और साक्षी स्थिति का राज़
विश्व-नाटक और निर्दोष दृष्टि का राज़
विश्व-नाटक और शुभ-भावना शुभ-कामना का राज़
'जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है' का राज़
स्वदर्शन चक्र और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का राज़
विश्व-नाटक और स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात का राज़
स्वास्तिका का राज़ - चार युगों की आयु और उसकी दिशा और दशा का राज़
विश्व-नाटक और पुरुषार्थ का राज़

शिवबाबा कहते - मेरी तो ड्युटी है पावन बनाने की, इसमें मेरी महिमा क्या करेंगे। ... विचार सागर मन्थन कौन करता है, शिवबाबा या ब्रह्मा ?''

सा.बाबा 26.12.06 रिवा.

''तुम्हारा तो सारा दिन धन्धा ही यह रहना चाहिए। यह है ऊंचे ते ऊंचा धन्धा। बाबा को व्यापारी भी कहा जाता है। यह अविनाशी ज्ञान रतनों का व्यापार कोई विरला करे। सारा दिन बुद्धि में यही फिरता रहना चाहिए।'' सा.बाबा 30.12.06 रिवा.

''तुम बच्चों को यह नॉलेज मिली है, वह फैलाना है, इस पर विचार-सागर मन्थन करना है। ... मैं तो दाता हूँ। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। शिवबाबा हमको 21 जन्म के लिए विश्व का मालिक बनाते हैं।''

सा.बाबा 20.12.06 रिवा.

''चलते फिरते बुद्धि में बाबा को याद रखना है, तो अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... अब तुम रुहानी बच्चों को रुहानी बाप यह याद की यात्रा सिखलाते हैं। ... मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे।'' सा.बाबा 17.12.06 रिवा.

''यह है याद की अग्नि, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। एक बाप से प्रीत बुद्धि होना है। सबसे फर्स्टक्लास माशूक है, जो तुमको भी फर्स्टक्लास बनाते हैं। ... यह सब विचार-सागर मन्थन करेंगे तो तुमको बड़ा मजा आयेगा।''

सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

''जिनकी दिल सच्ची थी उन पर साहेब राज़ी हुआ। तब तो प्रॉपर्टी दी। प्रॉपर्टी तो दे दी। अब उनको सिर्फ अपना बनाने की बात है। सर्विस वा दान भी तब कर सकेंगे जब प्रॉपर्टी को अपना बनाया होगा। जितना प्रॉपर्टी होगी उतना नशे से दान कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 30.5.71

चिन्तन और आत्मा की बीजरूप स्थिति अर्थात् चिन्तन-मुक्त स्थिति

चिन्तन ही आत्मा की चेतनता का दर्पण और जीवात्मा का स्वभाविक स्वभाव है। ज्ञान सागर बाप ने हमको ज्ञान के अनन्त राज़ों का ज्ञान दिया है, उनको मनन-चिन्तन कर अनुभव करने, उनको धारण करने और उनको सेवा में उपयोग करके भविष्य के लिए

कमाई जमा करने के लिए श्रीमत दी है और प्रेरणा दी है। ज्ञान की हर बात का अनुभव कर धारण करने, सेवा करने और साथ-साथ पावन बनने के लिए आत्मा के बीजरूप स्थिति के गहन अभ्यास के लिए भी श्रीमत दी है, प्रेरणा दी है तो आज्ञा भी दी है। इसलिए इस विश्व-नाटक की यथार्थता और आत्मिक स्वरूप की वास्तविकता को समझकर अपने मन-बुद्धि पर ऐसा नियन्त्रण हो, जो हम समय पर किसी विषय का चिन्तन करके ज्ञान का भी सुख ले सकें और समय पर चिन्तन से परे अपनी बीजरूप स्थिति में सहज स्थित होकर परमशान्ति का भी अनुभव कर सकें। यथार्थ चिन्तन हमको ऐसी शक्ति प्रदान करता है, जिससे हम ये दोनों स्थितियों अर्थात् सुखमय और शान्तिमय स्थिति का लाभ उठा सकते हैं अर्थात् अनुभव कर सकते हैं।

आत्मा की मूल स्थिति चिन्तन-मुक्त स्थिति है, जिसको ज्ञान मार्ग में बीजरूप स्थिति, हठयोग में निर्संकल्प समाधि, भक्ति मार्ग में आत्मा का परमात्मा में लय स्थिति, सन्यास मार्ग में लीन स्थिति कहा जाता है। इस चिन्तन-मुक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए भी उसका चिन्तन करना अति आवश्यक है। आत्मा परमधाम में अपनी मूल स्थिति में रहती है, जो चिन्तन-मुक्त स्थिति है। परन्तु उस स्थिति का चिन्तन से कोई सम्बन्ध नहीं है अर्थात् वह स्थिति एक निद्रा की स्थिति है। उसमें आत्मा को कोई अनुभूति नहीं है। कोई भी सुख-दुख-शान्ति की अनुभूति आत्मा को देह के साथ ही होती है। इसलिए चिन्तन और चिन्तन-मुक्त स्थिति का प्रश्न इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के समय ही उठता है। अभी की चिन्तन-मुक्त स्थिति के आधार पर ही आत्मा यहाँ परम-शान्ति का अनुभव करती है और भविष्य सतयुग-त्रेतायुग में चिन्ता और चिन्तन से मुक्त स्थिति में भौतिक सुखों का उपभोग करती है।

इस प्रकार इस सत्य पर विचार करें तो बीज-रूप स्थिति के अभ्यास और अनुभव के लिए भी चिन्तन परम आवश्यक है अर्थात् चिन्तन ही एकमात्र आधार है। इसलिए ही बाबा ने हमको सारा ज्ञान दिया है और बीजरूप स्थिति में स्थित होने के लिए कहा है।

इस सत्य को अनुभव करने के लिए आत्मा की बीजरूप स्थित का भी पूरा ज्ञान चाहिए।

आत्मा के लेप-क्षेप का राज़
आत्माओं के पूज्य और पुजारीपन का राज़
आप ही पूज्य और आप ही पुजारी का राज़
आत्मा रूपी बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होने का राज़
आत्मा और परमात्मा के निराकार स्वरूप का राज़
आत्मा-परमात्मा के भेद और उनकी समानता का राज़
आत्मा की सच्ची कमाई का राज़
आत्मा के **84** जन्मों का राज़
आत्मा के अविनाशी संस्कारों का राज़
आत्मा की विभिन्न योनियों का राज़
मनुष्यात्मा और अन्य योनियों की आत्माओं का राज़
मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती है, पशु योनियों में नहीं का राज़
विभिन्न योनि की आत्माओं के कर्मों और उनकेसुख-दुख का राज़
आत्माओं के लिंग परिवर्तन का राज़
मन-बुद्धि-संस्कार और आत्मा के अस्तित्व का राज़
वृत्ति और वायब्रेशन का वातावरण पर प्रभाव तथा वातावरण का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव का राज़
आत्मा की संकल्प शक्ति का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान और उसके महत्व का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान **(Spiritual Knowledge)** और धार्मिक ज्ञान में अन्तर का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान, मनोविज्ञान और दोनों के भेद का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक ज्ञान का राज़
ईश्वरीय ज्ञान और धर्मपिताओं के ज्ञान का राज़ और अन्तर
आत्मा की कर्मातीत स्थिति का राज़
आत्मा के मोक्ष का राज़
आत्माओं का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का राज़
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों का राज़
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के हिसाब-किताब और कल्पान्त में पूरा करके वापस घर जाने का राज़
ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता का राज़
फरिश्ता आत्माओं और प्रेतात्माओं का राज़ तथा दोनों के गुण-धर्मों में अन्तर का राज़
फरिश्ता और सूक्ष्म शरीरधारी प्रेत आत्माओं के अस्तित्व का राज़
देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का राज़
ईविल सोल्स एवं उनके प्रभाव का राज़

निश्चय बुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति का राज़
परमात्मा का राज़
परमात्मा शब्द का भावार्थ
परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, एक देशवासी है अर्थात् परमधाम का वासी का राज़
परमात्मा के सर्वज्ञ, जानी-जाननहार स्वरूप का राज़
परमात्म के न्यायकारी और समदर्शीपन का राज़
परमात्मा के परकाया प्रवेश का राज़
परमात्मा के अवतरण का राज़
परमात्म मिलन का गुह्य राज़
परमात्म मिलन कब, कहाँ और कैसे ?
परमात्मा के लिब्रेटर-गाइड अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता का राज़
परमात्मा के गुणों और कर्तव्यों का राज़
परमात्मा के बाग़वान स्वरूप का राज़
परमात्मा के पतित-पावन स्वरूप और कर्तव्य का राज़
परमात्म के गरीब-निवाज कर्तव्य का राज़
परमात्मा के समदर्शी स्वरूप का राज़
परमात्मा के खिवैया स्वरूप का राज़
परमात्मा, नैया और खिवैया का राज
विषय वैतरणी नदी अर्थात् विषय सागर और क्षीर सागर का राज़
परमात्मा के सौदागर स्वरूप का राज़
परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का राज़
परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप का राज़
परमात्म के सर्वशक्तिवान स्वरूप का राज़
परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का राज़ और अनुभव
परमात्मा और ड्रामा का राज़
परमात्मा और कर्म का राज़

आत्मा का राज़
आत्मिक स्वरूप का राज़
आत्मा और शरीर के अस्तित्व का राज़ और शरीर में आत्मा के स्थान का राज़
आत्मा और देह अर्थात् प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध का राज़ और अनुभव
आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा के पतित और पावन बनने का राज़

आत्मा एक चेतन सत्ता है परन्तु जब वह अपनी बीजरूप स्थिति में स्थित होती है तो चेतन होती है परन्तु चेतना नहीं होती है अर्थात् वह देह सहित सर्व सासारिक वस्तु-व्यक्तियों के सम्बन्ध के संकल्प-विकल्पों से मुक्त निर्संकल्प स्थिति में स्थित होती है। ऐसे ही कहें कि उस स्थिति में आत्मा रूपी बीज तो होता है परन्तु उसमें झाड़ रूपी विस्तार नहीं होता है।

विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो इसके लिए दुनिया वाले भी गाते हैं - बनी-बनाई बन रही, अब कछु बननी नाहिं, चिन्ता ताकी कीजिये जो अन्होनी होये। परन्तु वे इस सत्य को यथार्थ रीति जानते और अनुभव नहीं करते हैं, जिसके विषय में परमात्मा पिता ने बताया है कि ये विश्व-नाटक एक अनादि-अविनाशी बेहद का नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जो चिन्तन करके इस सत्यता को जानकर अनुभव कर लेते हैं, वे सहज ही बीजरूप स्थिति में स्थित हो सकते हैं। दूसरी बात - जो देह और दैहिक वस्तु-वैभव, व्यक्तियों की नश्वरता और परिवर्तनशीलता का चिन्तन करके उसको अनुभव कर लेते हैं, वे सहज उनसे अपना बुद्धियोग निकालकर अपनी अनश्वर बीजरूप स्थिति में स्थित हो सकते हैं। इस सत्य को भी भुलाया नहीं जा सकता कि अपनी अनश्वर बीजरूप स्थिति का अनुभव होगा, तब ही नश्वर वस्तु और व्यक्तियों से बुद्धियोग निकलेगा। इसके लिए भी अपनी अनश्वर बीजरूप स्थिति का चिन्तन करना अति आवश्यक है।

चिन्तन-धारा और सागर मंथन

शास्त्रों में दिखाते हैं कि देवताओं और असुरों ने सागर मंथन किया तो उसमें अनेक रतन और साथ में अमृत और विष भी निकला और अमृत पान के लिए देवताओं और असुरों में खींचातान हुई। सागर मंथन और उससे निकले विभिन्न रतनों, विष और अमृत का राज़ भी परमात्मा ने बताया है। विष या अमृत कोई स्थूल चीज नहीं है। पांच विकारों को ही विष कहा जाता है, जिनके वशीभूत आत्मा को मृत्यु-दुख सहन करना पड़ता है और यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान ही अमृत है, जो आत्मा को अमरत्व का अनुभव कराता है अर्थात्

आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त करता है। परमात्मा ज्ञान सागर है, जिसने ये यथार्थ ज्ञान दिया है। चिन्तन को भी मंथन कहा जाता है। ज्ञान सागर से मिले ज्ञान का यथार्थ रीति, श्रीमत प्रमाण चिन्तन करते तो ये ज्ञान अमृत का काम करता है, आत्मा को परम सुख का अनुभव कराता है, अनेक दिव्य गुणों-शक्तियों रूपी रतनों का अनुभव कराता है और यदि मथानी उल्टी चलाई अर्थात् परमात्मा पिता की याद भूलकर, अहंकार के वश होकर उसके यथार्थ भाव को समझने की बजाये तर्क-वितर्क में चले गये या परचिन्तन आदि में लग गये तो वह विष का काम भी करता है। उससे स्वयं ही दुखी हो जाते हैं और कब-कब ज्ञान मार्ग से मर भी पड़ते हैं। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और यथार्थ रीति ज्ञान का मंथन कर अमृत-पान करके अमरत्व की अनुभूति करनी है।

विचार-सागर मंथन से ही ज्ञान के गुह्य राज़ स्पष्ट होते हैं, उनकी धारणा होती है और ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है। इसीलिए शास्त्रों में सागर मंथन का गायन है। परमात्मा ज्ञान का सागर है और वह अनेक ज्ञान रतन देता है, उनका सुख अनुभव करने के लिए उन पर विचार करना अति आवश्यक है। विचार-सागर मन्थन करने से ही ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है, दूसरों को भी उसकी सत्यता स्पष्ट करने की शक्ति आती है। जो आत्मायें उनका सदुपयोग करते हैं, यथार्थ रीति ज्ञान मन्थन करते हैं, उनके लिए वह अमृत बन जाता है और जो उनका दुरुपयोग करता है अर्थात् उल्टी मथानी चलाते हैं, उनके लिए वह विष का ही काम करता है। बाप का बनकर उनकी श्रीमत का उलंघन कर यज्ञ की मर्यादा का उलंघन करता है, उसके लिए यह अमृत भी विष बन जाता है और वह दोनों जहान के सुख से वंचित हो जाता है अर्थात् वह दुनिया के साधारण मनुष्यों से भी अधिक गिर जाता है।

''बैठे-बैठे यह विचार आना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि अब अलौकिक है और किसी मनुष्य की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। ... देवी-देवतायें भी तो नम्बरवार होंगे, एक जैसे तो हो भी न सकें क्योंकि राजधानी है ना। यह ख्यालात तुम्हारे चलते रहने चाहिए।''

सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

है।

''जितना-जितना गहराई में जायेंगे, उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी। ... सागर के तले में, गहराई में क्या होता है? बिल्कुल शान्त और शान्त के साथ प्राप्ति भी होती है।''

अ.बापदादा 3.10.69

''इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं। ... जब दुनिया को बदलना होता है। ... राम की सीता को चुराई। इन बातों पर विचार किया जाता है। ये सब बहुत समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

चिन्तन के लिए विषय-वस्तु

ज्ञान की सत्यता को अनुभव करने के लिए, आत्मिक सुख को अनुभव करने के लिए, आत्मिक शक्ति के विकास के लिए बाबा ने हमको विश्व-नाटक के गुह्य राज़ों का ज्ञान दिया है, निराकार और साकार ब्रह्मा बाप के गुण-कर्तव्य-विशेषताओं का ज्ञान भी दिया है, सेवा के लिए विभिन्न युक्तियाँ बताई हैं और मनन-चिन्तन करके युक्तियाँ निकालने के लिए कहा है, वे सब बातें हमारी बुद्धि में होनी चाहिए। ऐसे ही अपने मन में और बाहर से आने वाले विभिन्न प्रश्नों का ज्ञान एवं उनका उत्तर हमारी बुद्धि में होना अति आवश्यक है।

A. ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा उद्घाटित विश्व-नाटक के गुह्य राज़

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको किन-किन बातों का ज्ञान दिया है और विश्व-नाटक किन-किन गुह्य राज़ों का ज्ञान दिया है, उनमें से कुछ ज्ञान-बिन्दुओं और राज़ों को यहाँ लिखते हैं, उनको समझने के लिए हर एक को स्वयं चिन्तन करना है और बाबा के ज्ञान-भण्डार मुरली को देखना है और उससे समझना है।

ज्ञान की सत्यता का राज़

श्रीमत और शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक

''आज बापदादा दो चीजें सौगात में दे रहे हैं - सदा शुभ चिन्तक और शुभ चिन्तन। शुभ चिन्तन से अपनी स्थिति बना सकते हो और शुभ चिन्तक बनने से अनेक आत्माओं की सेवा करेंगे।'' अ.बापदादा 22.1.70

''जो सरलचित्त बनता है, उसका प्रत्यक्ष में गुण क्या देखने में आता है? मधुरता। उसके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। ... आपके शुभचिन्तक बनने से सभी की चिन्तायें मिटती हैं। आप सभी की चिन्ताओं को मिटाने वाले शुभचिन्तक हो।'' अ.बापदादा 23.3.70

''होली मनाना अर्थात् सदा के लिए आज के दिन से बीती सो बीती का पाठ पक्का करना। यही होली मनाना है। ... अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में न लाना और चित्त में भी न रखना। एक होता है चित्त में रखना, दूसरा होता है चिन्तन में लाना और तीसरा होता है वर्णन करना।'' अ.बापदादा 23.3.70

''शुभ-चिन्तक सदा रहें, इसका विशेष आधार है - शुभ-चिन्तन। जिसका शुभ-चिन्तन सदा रहता है, वह अवश्य ही शुभ-चिन्तक है। ... सदा शुभ-चिन्तक मणि का शुभ-चिन्तन का शक्तिशाली खजाना सदा भरपूर होगा। भरपूरता के कारण ही औरों को प्रति शुभ-चिन्तक बन सकते हैं।'' अ.बापदादा 10.11.87

''शुभ-चिन्तक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनॉलिटी में रह सकते हैं। ... तुम रुहानी पर्सनॉलिटी वाले सिर्फ गायन योग्य नहीं लेकिन गायन-योग्य के साथ पूजन योग्य भी बनते हो।'' अ.बापदादा 10.11.87

श्रीमत और चिन्तन, चिन्ता एवं चिन्तन-चिन्ता से परे निश्चिन्त स्थिति

'बनी-बनाई बन रही अब कुछ बननी नाहि, चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये'। मनुष्य सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए इस विश्व के उत्थान और पतन में उसके चिन्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, ये हमारा परम कर्तव्य

''आज अंधेरे में है इन्सान ... अभी तुम तो अंधेरे में नहीं हो। ... कितना वण्डरफुल यह नाटक है। ... सवेरे उठकर एक तो बाप को याद करना है और खुशी में ज्ञान का सुमिरन करना है।'' सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''बच्चों को सदैव स्मति में रहना चाहिए - हम भारत को बेहद की खुशखबरी सुनाते हैं। ... जैसे बाबा को सारा दिन ख्यालात चलते हैं - कैसे सबको यह सन्देश सुनायें कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं।... तुम्हें सभी को इस अज्ञान अंधकार से निकालना है।'' सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''अलंकार विष्णु को दे दिये हैं ... 84 के चक्र को याद करते, जैसे कि तुम 84 की बाजोली खेलते हो। तीर्थों पर जाते हैं तो भी ऐसे बाजोली करते हुए जाते हैं। ... तुम्हारा तो सच्चा तीर्थ है - शान्तिधाम और सुखधाम।... तुम हो स्वदर्शन चक्रधारी, देवतायें स्वदर्शन चक्रधारी नहीं हैं।'' सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

''एक तो बाप को याद करो और चक्र को याद करो।... देवतायें तो पवित्र थे, ड्रामा प्लेन अनुसार फिर वे हिन्दू कहलाने लग पड़ते हैं। हिन्दुस्तान तो नाम बाद में पड़ा है, असली नाम भारत है। कहते हैं भारत माताओं की जय।... भारत की ही महिमा करते हैं।... चक्र को भी जानना है। चक्र फिरता रहता है, कब बन्द नहीं होता है।''

सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

चिन्तन और निश्चय

मनुष्य के निश्चय का उसके चिन्तन पर गहरा प्रभाव पड़ता है अथवा ऐसे कहें कि जैसा निश्चय, वैसा ही चिन्तन होगा और जैसा चिन्तन, वैसा ही जीवन होगा। मनुष्य के चिन्तन का उसके जीवन के उत्थान और पतन में महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य जो देखता, सुनता, स्पर्श करता, जिस वातावरण में रहता, उस अनुसार ही उसका चिन्तन होता है और जैसा उसका चिन्तन होता है, उस अनुसार ही उसके कर्म, व्यवहार होता है, जिस पर उसका वर्तमान और भविष्य आधारित होता है। इसीलिए कहावत है - मनुष्य जो सोचता है, वही बन जाता है - क्यों और कैसे?

इस सत्य पर विचार करके अपने जीवन में सच्ची सफलता को प्राप्त करने के लिए सदा शुभ चिन्तन रहना चाहिए, उसको ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए, जिससे उसका चिन्तन सदा शुभ रहे। परन्तु ये बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि मनुष्य जिस बात को अच्छा मान लेता है अर्थात् जिसके विषय में उसका निश्चय दृढ़ हो जाता है, जिसे वह अपने लिए हितकर समझ लेता है, उस पर ही उसका मन-बुद्धि एकाग्र रहता है और उस अनुसार ही उसका चिन्तन चलता है। इसलिए हमारी बुद्धि में बाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान, नियम-संयम, विधि-विधान आदि के विषय में दृढ़ निश्चय चाहिए। उस निश्चय के लिए भी उनके सम्बन्ध में चिन्तन अति आवश्यक पुरुषार्थ है।

चिन्तन और कर्म

मनुष्य का जैसा चिन्तन होता है, उस अनुसार ही कर्म होते हैं अर्थात् जैसा हमारा चिन्तन होता है, उसका हमारे कर्मों पर विशेष प्रभाव होता है और जैसा कर्म होता है, उस अनुसार ही उसका फल होता है। इसलिए सुखमय जीवन के लिए श्रेष्ठ कर्म अति आवश्यक हैं और श्रेष्ठ कर्म करने के लिए श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान और उनको करने की शक्ति चाहिए। इसके लिए बाबा ने जो कर्म के विधि-विधान का ज्ञान दिया है, उस पर चिन्तन करके उसको अनुभव करना है। जब उसका अनुभव होगा तब हमारे कर्म श्रेष्ठ होंगे। कर्म के सम्बन्ध में किन-किन बातों का ज्ञान और अनुभव चाहिए, वह भी 'चिन्तन के लिए विषय-वस्तु' में दिया गया है।

दृश्य. दृष्टिकोण और चिन्तन

देखना भी एक क्रिया है, जो मनुष्य के चिन्तन को प्रभावित करती है। मनुष्य जो देखता, उस पर उसका चिन्तन अवश्य चलता है परन्तु वह चिन्तन एक सेकेण्ड का भी हो सकता है तो एक घण्टे, एक दिन या किसी लम्बे समय के लिए भी हो सकता है। चिन्तन जितने

फिर बाबा भी ऐसी प्वाइन्ट सुनायेंगे, जो उनको असर पड़े।''

सा.बाबा 25.11.06 रिवा.

''घड़ी-घड़ी यह चिन्तन करने से बच्चों को खुशी रहेगी और पुरुषार्थ भी करेंगे। ... सारा दिन बुद्धि में विचार सागर मन्थन चलना चाहिए। जैसे गाय खाना खाकर उगारती रहती है, ऐसे उगारना है। बच्चों को अविनाशी खज़ाना मिलता है। यह है आत्माओं के लिए भोजन।'' सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

''गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।... तुमको बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता हैं।'' अ. बापदादा 31.5.72

''हर एक बात पर अच्छी रीति विचार करना चाहिए। ब्रह्मा को कहते हैं - मुझे याद करो तो यह बनेंगे। ब्रह्मा को कहा गोया ब्रह्मा मुख वंशावली सबको कहा - मुझे याद करो। ... जब यह समझें कि हम आत्मा परमात्मा के बच्चे हैं तब खुशी का पारा चढ़े और कहें कि हम बाप को याद जरूर करेंगे।'' सा.बाबा 6.9.06 रिवा.

''सारा दिन ऐसे-ऐसे अपने से बातें करते रहो। ज्ञान की प्वाइन्ट्स अन्दर टपकनी चाहिए। खुशी रहनी चाहिए। ... रात को सोते समय भी बाप को याद कर ऐसे-ऐसे ख्यालात करते सो जाना चाहिए।'' सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

''पहले-पहले जब आये तो श्रेष्ठाचारी दुनिया में तो सतोप्रधान थे। कोई के साथ कनेक्शन भी पीछे होगा। जब गर्भ में जायेंगे तब सम्बन्ध में आयेंगे। अभी हमारा अन्तिम जन्म है, अब हमको वापस घर जाना है, पवित्र बनने बिगर तो जा नहीं सकेंगे। ऐसे-ऐसे अन्दर में बातें करनी चाहिए क्योंकि बाप का फरमान है - उठते-बैठते, चलते-फिरते बुद्धि में यही ख्यालात रहें कि हम सतोप्रधान आये थे, सतोप्रधान बनकर ही घर जाना है। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

बाप भी देखते हैं - यह पवित्र पौधे थे, जिनको राज्य-भाग्य दिया, वे फिर मेरे आक्यूपेशन को ही भूल गये। अब फिर तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना चाहते हो तो मुझ बाप को याद करो।'' सा.बाबा 8.7.04 रिवा.

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन कर फर्स्ट क्लास लिखत बनानी चाहिए। ... इसमें शास्त्रार्थ करने की बात नहीं। ... यह तो क्लीयर कर लिखना चाहिए कि हम क्या सीखते हैं।'' सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

श्रीमत और स्व-चिन्तन

बाबा ने कहा है स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है और पर-चिन्तन पतन की जड़ है। स्व-चिन्तन क्या है, उसके विषय में संक्षेप में विचार करें तो जिस चिन्तन से परमात्मा की याद आये वह स्व-चिन्तन और शुभ चिन्तन है और जिस चिन्तन से किसी वस्तु-व्यक्ति की याद आये, वह पर-चिन्तन है। यदि हम गहराई से विचार करें तो हमारा जो भी चिन्तन चलता है, उसमें किसी न किसी व्यक्ति-वस्तु या परमात्मा की याद अवश्य आती है, जो हमारे चिन्तन की कसौटी है।

''बाबा का कितना ख्याल चलता रहता है। ख्यालात करते-करते नीद ही फिट जाती है। विचार सागर मन्थन तो सबको करना चाहिए ना। ... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि से विचार सागर मन्थन करना होता है।'' सा.बाबा 17.11.06 रिवा.

''कोई शरीर छोड़ते हैं तो जाकर दूसरा पार्ट बजायेंगे, इसमें रोने से क्या होगा। ... यह समझ में आता है कि जैसा-जैसा आज्ञाकारी बच्चा होगा, उस अनुसार जरूर अच्छे घर में जन्म लिया होगा। ... जो जैसा कर्म करते हैं, ऐसे घर में जाकर जन्म लेते हैं। ... इसमें बड़ी विशाल बुद्धि से विचार सागर मन्थन करना होता है।''

सा.बाबा 17.11.06 रिवा.

''भिन्न-भिन्न युक्तियां विचार सागर मन्थन करने की निकालनी चाहिए और बाबा को बताना चाहिए कि बाबा इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं और हमने इस प्रकार से समझाया।

लम्बे समय तक चलेगा, उसका प्रभाव उतना ही गहरा आत्मा पर पड़ेगा। इसलिए बाबा बाहर के दृश्यों के लिए कहते हैं कि उनको देखते भी न देखो। बाबा सदैव कहते हैं - बच्चे ये आंखे बहुत धोखा देने वाली हैं क्योंकि इन ऑखों से मनुष्य जो देखता है, वह उसके चिन्तन में जाता है और चिन्तन से संकल्प-बोल-कर्म प्रभावित होते हैं। हर घटना और दृश्य के पॉजेटिव और नेगेटिव दो पक्ष होते हैं। ज्ञानी आत्मा को दोनों पक्षों को विचार कर किसी घटना के प्रति अपना दृष्टिकोण निश्चित करना चाहिए अर्थात् हमको क्या देखना है और क्या नहीं देखना है और देखना है तो कैसे देखना है।

''होली मनाना अर्थात् सदा के लिए आज के दिन से बीती सो बीती का पाठ पक्का करना। यही होली मनाना है। ... अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में न लाना और चित्त में भी न रखना। एक होता है चित्त में रखना, दूसरा होता है चिन्तन में लाना और तीसरा होता है वर्णन करना।''

अ.बापदादा 23.3.70

चिन्तन, श्रवण, पठन-पाठन, वर्णन और लेखन

मनुष्य के चिन्तन, श्रवण, पठन-पाठन, वर्णन, लेखन आदि का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। ये सब एक-दूसरे से सम्बन्धित है, एक दूसरे पर आधारित हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। इन सबका प्रभाव मनुष्य के कर्मों पर पड़ता है, जिसके आधार पर उसका भविष्य निर्मित होता है। अच्छे-सुखमय भविष्य के लिए मनुष्य को इन सब पर ध्यान रखना चाहिए।

''खजाना अपना बन गया फिर दूसरे को देने से बढ़ता जाता है। यह हुई पीछे की बात। लेकिन पहले अपना कैसे बनायेंगे जितना-जितना जो खजाना मिलता है उसके ऊपर मनन करने से अन्दर समाता है। जो मनन करने वाले होंगे उन्हों के बोलने में भी विल पॉवर होगी।'' अ.बापदादा 30.5.71

''जो बातें मनन की जाती हैं उन को वर्णन करना सहज हो जाता है। तो मनन करते और वर्णन करते चलो।

यह भी दो बातें हुई। मनन करते-करते मग्न अवस्था ऑटोमेटीकली हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते वह मग्न अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते।''

अ.बापदादा 24.5.71

चिन्तन और श्रवण

मनुष्य के श्रवण का चिन्तन से विशेष सम्बन्ध है अर्थात श्रवण भी मनुष्य के चिन्तन को प्रभावित करता है, जोउसके सुख-दुख का कारण बनता है। ये जड़-चेतन अर्थात् आध्यात्म का नियम है कि जीवात्मा जो अपनी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से ग्रहण करता है, उस पर उसका चिन्तन अवश्य चलता है और वह चिन्तन उसके संकल्प-बोल-कर्म को प्रभावित करता है, जिसके फलस्वरूप आत्मा सुख या दुख पाती है। हमारा जीवन सदा सुखी रहे, उसके लिए हमको अपने श्रवण पर भी ध्यान रखना है अर्थात् हम वही सुनें, जो हमारे काम का हो, हमारी चढ़ती कला के लिए हो। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - बच्चे तुम एक बाप से ही सुनो।

मनुष्य जो गीत-कवितायें सुनते हैं, दूसरों के अच्छे या बुरे शब्द सुनते हैं, भाषण-क्लास आदि सुनते हैं, वे भी उसके चिन्तन को प्रभावित करते हैं अर्थात् उन सबका प्रभाव उसके चिन्तन पर होता है अर्थात् चिन्तन के द्वारा संस्कारों में जाता है, जिससे उसके भविष्य के संकल्प, बोल और कर्म प्रभावित होते हैं और वे संकल्प, बोल, कर्म उसके वर्तमान और भविष्य जीवन के सुख-दुख का आधार बनते हैं। भविष्य के चिन्तन के लिए भी वर्तमान का चिन्तन आधार बनता है।

चिन्तन और पठन-पाठन

मनुष्य के पठन-पाठन और उसके चिन्तन का घनिष्ट सम्बन्ध है। जैसा साहित्य हम पढ़ते हैं, उस अनुसार हमारा चिन्तन चलता है। हम जो भी पढ़ते हैं, उस पर हमारा चिन्तन अवश्य चलता है। जितना हम गहरी रुचि से पढ़ते हैं, उसमें हमारी जितनी अभिरुचि होती

तुमको प्वाइन्ट्स नोट करना चाहिए। नोट करके फिर पढ़ना चाहिए। धारणा तब होगी जब श्रीमत पर चलेंगे।... प्वाइन्ट्स रिपीट करें, औरों को सुनायें तब ऊंच पद पायें।''

सा.बाबा 29.3.07 रिवा.

''यह बना-बनाया अविनाशी ड्रामा है। हर एक आत्मा में अपना-अपना अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, जो हर एक अपना-अपना पार्ट रिपीट करता है, इसमें ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता है। ... तुम्हारी बुद्धि में सारा दिन स्वदर्शन चक्र फिरना चाहिए। अपनी बुद्धि में होगा तब तो किसको समझायेंगे।''

सा.बाबा 28.3.07 रिवा.

''समझाने के लिए बच्चों को प्वाइन्ट्स बहुत मिलती हैं। फिर अच्छी रीति मन्थन भी करना चाहिए। ... एकान्त में बैठ पढ़ने से धारणा अच्छी होती है। ... रात को विचार सागर मन्थन करने से तुमको बहुत मज़ा आयेगा।... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है - ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना चाहिए।'' सा.बाबा 20.3.07 रिवा.

''सवेरे 3-4 बजे उठकर बैठ चिन्तन करो तो बहुत खुशी रहेगी और पक्के हो जायेंगे। रिवाइज़ नहीं करेंगे तो माया भुला देगी। मन्थन करो आज बाबा ने क्या समझाया है। एकान्त में बैठकर विचार-सागर मन्थन करना चाहिए।''

सा.बाबा 6.3.07 रिवा.

''भक्ति मार्ग में तुमने बहुत कुछ सुना है, अभी मैं जो सुनाता हूँ, अब तुम जज करो राइट क्या है। ... भारत की बहुत महिमा है। जितनी बाप की महिमा है, उतनी ही भारत की महिमा है।'' सा.बाबा 6.2.07 रिवा.

''वहाँ भी ढेर राजायें होंगे। तो अन्दर ख्यालात आनी चाहिए - हम ऐसे-ऐसे महल बनायेंगे। ... शौक रहना चाहिए कि हम इतना ऊंच पद पायें, तो कल्प-कल्प पाते रहेंगे। यह कल्प-कल्प की बाज़ी है।'' सा.बाबा 3.2.07 रिवा.

''भूतों को तो एकदम भगाना चाहिए। सपूत बच्चों का काम है खबरदार रहना। ... अगर विचार सागर मन्थन करते रहें तो कभी भूतों की प्रवेशता न हो।''

सा.बाबा 16.12.06 रिवा.

''अन्दर में यह ख्याल आना चाहिए, अपने राज्य में कितना सुख था, फिर पराये राज्य में कितना दुख उठाया। ...

गिर जाते हैं।

''इस संगमयुग का तुमको ही पता है, और कोई समझ न सके। बाप तो सर्विस के लिए अनेक प्रकार की युक्तियाँ बताते हैं, बुद्धू भी न बनो। ... तुम तो चेतन्य हो, तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों का दान मिलता है। ... किसको समझाने, किसका कल्याण करने की युक्तियाँ रचनी चाहिए।'' सा.बाबा 26.8.04 रिवा.

''भारत में शिव का नाम तो बहुत लेते हैं, शिव जयन्ती भी मनाते हैं।...जो भी टाइम मिले, अपने से बातें करनी चाहिए। ... बाप से रूहरिहान कर फिर जाकर रुहानी सर्विस करनी है।'' सा.बाबा 6.11.04 रिवा.

''उठते-बैठते, चलते-फिरते ज्ञान को सुमिरन करते रहो। सारा दिन बुद्धि में यही रहे कि किसको कैसे समझायें, बाप का परिचय कैसे दें।''

सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''तुम बच्चों को हर एक बात का विचार सागर मंथन करना चाहिए।''

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''बैठे-बैठे यह विचार आना चाहिए। तुम्हारी बुद्धि अब अलौकिक है और किसी मनुष्य की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। ... देवी-देवतायें भी तो नम्बरवार होंगे, एक जैसे तो हो भी न सकें क्योंकि राजधानी है ना। यह ख्यालात तुम्हारे चलते रहने चाहिए।'' सा.बाबा 1.12.04 रिवा.

''समझाने के लिए बच्चों को प्वाइन्ट्स बहुत मिलती हैं। फिर अच्छी रीति मन्थन भी करना चाहिए। ... एकान्त में बैठ पढ़ने से धारणा अच्छी होती है। ... रात को विचार सागर मन्थन करने से तुमको बहुत मज़ा आयेगा।... यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है - ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना चाहिए।'' सा.बाबा 20.3.07 रिवा.

''हम आत्मा एक्टर हैं, अभी यह नाटक पूरा होता है, फिर वापस घर जाना है। यह पक्का निश्चय होना चाहिए। एकान्त में बैठकर यह ख्याल करो कि हम आत्मा हैं, बाबा हमको लेने आया है। ऐसे अपने साथ बातें करनी होती है, इसे विचार सागर मन्थन कहा जाता है। ... विचार सागर मन्थन सवेरे अच्छा होता है।''

सा.बाबा 14.4.07 रिवा.

''तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान फिरना चाहिए, जिससे तुम मनुष्य से देवता बन जायेंगे।...

है, उतना ही गहरा उसका चिन्तन होता है और उतनी ही गहरी छाप उसकी हमारी मन-बुद्धि पर होती है, जो छाप हमारे संकल्प, बोल, कर्म को प्रभावित करती है और वे संकल्प-बोल-कर्म हमारे सुखमय या दुखमय भविष्य का निर्माण करते हैं। हमारा वर्तमान और भविष्य सदा सुख-शान्तिमय हो, उसके लिए हमको अपने पठन-पाठन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उसके लिए बाबा की मुरली सबसे अच्छी विषय-वस्तु है, जिसके बाबा ने कहा है - एक मुरली को 6-8 बार पढ़ना चाहिए। जब हम मुरली को 6-8 बार ध्यान से पढ़ेंगे, तो उसका ही चिन्तन चलेगा और उसके साथ बाबा की भी याद रहेगी क्योंकि मुरली बाबा की है और उसके गुह्य रहस्य भी हमारी बुद्धि में बैठेंगे।

चिन्तन और वर्णन

चिन्तन और वर्णन का भी घनिष्ट सम्बन्ध है। मनुष्य के जो चिन्तन में होता है, वह वर्णन में अवश्य आता है अर्थात् जैसा मनुष्य का चिन्तन होता है, वैसे ही उसके शब्द होते हैं अर्थात् उस अनुसार ही उसकी भाषा होती है और मनुष्य के शब्द या बोल उसके भविष्य का निर्माण करते हैं क्योंकि शब्द भी एक कर्म है, जिसका फल आत्मा को भोगना ही पड़ता है। कोई मनुष्य कोई भाषण करता है, कोई क्लास कराता है, उसकी भाषा, उसकी शैली, उसका प्रभाव उसके चिन्तन पर ही आधारित होता है।

चिन्तन और लेखन

मनुष्य जो लेख लिखता है, कोई किताब लिखता है अथवा अन्य कोई लेखन का कार्य करता है, वह भी उसके चिन्तन के आधार पर ही होता है। मनुष्य के चिन्तन के अनुसार उसकी लेखन शैली होती है।

चिन्तन और शरीर

मनुष्य का चिन्तन उसके शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। बाबा ने अनेक बार कहा है - बच्चे बीमारी आदि का ज्यादा चिन्तन मत करो। बीमारी के विषय में बार-बार सोचने से बीमारी और बढ़ जाती है। मनुष्य जैसा चिन्तन करता है, उस अनुसार ग्रन्थियों से रस स्राव होता है, जो उसके शारीरिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। योगी आत्मा के संकल्प कम होते हैं और जो होते हैं, वे शुभ और समर्थ होते हैं, जो उसके शरीर पर हितकर प्रभाव डालते हैं अर्थात् स्वस्थ शरीर का निर्माण करते हैं।

चिन्तन और मानसिक स्थिति

मनुष्य के चिन्तन का उसकी मानसिक स्थिति पर भी प्रभाव होता है। शुभ चिन्तन वाले का मन स्वस्थ होता है, जीवन में खुशी होती है। आशंकित व्यक्ति का चिन्तन उसकी मन:स्थिति को उद्वेलित कर देता है, जिससे उसका मन कमजोर हो जाता है। मनुष्य की मानसिक स्थिति का उसके चिन्तन पर भी प्रभाव होता है। स्वस्थ मानसिक स्थिति वाला दूसरों के लिए सदा ही शुभ और कल्याणमय सोचेगा, फलस्वरूप दूसरे भी उसके लिए शुभ और कल्याणमय सोचेंगे। अच्छी मानसिक स्थिति वाले का चिन्तन सदा शुभ और सर्व के कल्याणार्थ होगा। भयभीत मनुष्य का चिन्तन उस अनुसार होता है और वह दूसरों को भी प्रभावित करता है। अच्छे चिन्तन वाले की मानसिक स्थिति शक्तिशाली होती है, इसलिए वह भय और चिन्ता की परिस्थितियों को भी सहज पार लेता है।

चिन्तन और ईश्वरीय ज्ञान

बाबा ने जो हमको ज्ञान दिया है, उसके लिए बाबा हमको चेलेन्ज करता है कि तुम उसको जज करो कि अभी तक हमने जो सुना वह राइट है या अभी बाबा सुनाता है, वह राइट है। इसलिए ज्ञान की सत्यता और उसके गुह्य-गोपनीय रहस्यों को समझने और धारण करने

संग भी हमारे चिन्तन को प्रभावित करता है इसीलिए कहा गया है - जैसा संग वैसा रंग अर्थात् जैसा संग होगा, वैसा चिन्तन होगा और जैसा चिन्तन होगा, वैसा ही हमारा स्वरूप बन जायेगा। इसलिए ही अच्छे चिन्तक, धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष, आध्यात्मिक प्रगति के अभिलाषी व्यक्ति एकान्त, शुद्ध-पवित्र स्थान पर रहना पसन्द करते हैं।

''एक-एक माता जगतमाता बन जाये। वृत्ति से हर समय, हर संकल्प से जगत माता के स्वरूप में स्थित हो जाये तो कितने वायब्रेशन वर्ल्ड को मिलेंगे ... माँ की भावना जल्दी पहुँचती है। ... ऐसे आप सभी को बच्चे समझकर पालना करो, वायब्रेशन फैलाओ। ... इसमें स्व-उन्नति ऑटोमेटिक है।''

अ.बापदादा 15.2.07

''मधुवन के वायुमण्डल का भी प्रभाव पड़ता है, दादियों का भी प्यार और वृत्तियों के वायुमण्डल का साथ होता है ... स्पेशल मदद मिलती है। ... इसको अन्दर में रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो। जो भी ज्ञान की बातें हैं, उनको रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो।'' अ.बापदादा 15.2.07 कुमारियां

श्रीमत और विचार-सागर मंथन अर्थात् चिन्तन

विचार-सागर मंथन से ही ज्ञान के गुह्य राज़ स्पष्ट होते हैं, उनकी धारणा होती है और ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है। इसीलिए शास्त्रों में सागर मंथन का गायन है। परमात्मा ज्ञान का सागर है और वह अनेक ज्ञान रतन देता है, उनका सुख अनुभव करने के लिए उन पर विचार करना अति आवश्यक है। विचार-सागर मन्थन करने से ही ज्ञान व्यवहारिक जीवन में आता है, दूसरों को भी उसकी सत्यता स्पष्ट करने की शक्ति आती है। जो आत्मायें उनका सदुपयोग करते हैं, यथार्थ रीति ज्ञान मन्थन करते हैं, उनके लिए वह अमृत बन जाता है और जो उनका दुरुपयोग करता है अर्थात् उल्टी मथानी चलाते हैं, उनके लिए वह विष का ही काम करता है। बाप का बनकर उनकी श्रीमत का उलंघन कर यज्ञ की मर्यादा का उलंघन करता है, उसके लिए यह अमृत भी विष बन जाता है और वह दोनों जहान के सुख से वंचित रह जाता है। वे दुनिया के साधारण मनुष्यों से भी अधिक

यह तो है ज्ञान मार्ग।'' सा.बाबा 14.4.73 रिवा.

''अगर बापदादा के दिल पर चढ़ना चाहते हो तो विचार सागर मंथन करो ... बच्चे आदि की परवाह नहीं रखी जाती है। वास्तव में बच्चे की शादी कराना न चाहिए। लोक-लाज कुल की मर्यादा खोनी पड़ती है दुश्मन से डरना थोड़ेही होता है। बाबा का हाथ मिला फिर परवाह किसकी नहीं रखी जाती है।''

सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

चिन्तन, वातावरण और संग

मनुष्य के चिन्तन और वातावरण का गहरा सम्बन्ध है। हमारा चिन्तन वातावरण को प्रभावित करता है और वातावरण का प्रभाव हमारे मन को प्रभावित करता है अर्थात् हमारे चिन्तन को प्रभावित करता है, जिस पर हमारे जीवन का उत्थान-पतन आधारित है। इसीलिए कहा गया है - मनुष्य अपने वातावरण की उपज है परन्तु मनुष्य अपने वातावरण की उपज है तो वातावरण का निर्माता भी है अर्थात् मनुष्य जैसे वातावरण में रहता है, काम करता है, उसमें नीहित वृत्तियां और वायबेशन्स उसके मन-बुद्धि को अवश्य प्रभावित करते हैं और उसके अपने चिन्तन से जो वृत्तियां और वायब्रेशन्स उत्पन्न होते हैं, उनका का प्रभाव भी वातावरण पर पड़ता है, वैसा वातावरण बन जाता है। दोनों में जो शक्तिशाली होता है, वह दूसरे को दबा देता है और वह प्रत्यक्ष होता है। इस सत्य पर विचार करें तो जीवात्मा जैसा चिन्तन करता है, वैसा ही बन जाता है और जीवात्मा जैसे वातावरण में रहता है, वैसा ही उसका चिन्तन होता है, जिस पर उसके जीवन का सुख-दुख आधारित होता है। इस सत्य को जानकर, श्रेष्ठ सुखमय जीवन के अभिलाषी आत्मा को अपने चिन्तन पर अवश्य ध्यान रखना चाहिए अर्थात् चिन्तन शुभ और स्वस्थ रहे, उसका पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए क्योंकि उससे हमारे कर्म प्रभावित होते हैं और कर्म से हमारा पुण्य-पाप का खाता प्रभावित होता है तथा वह पाप-पुण्य का खाता हमारे दुख-सुख का आधार बनता है।

के लिए ईश्वरीय ज्ञान के विभिन्न तथ्यों का चिन्तन करना अति आवश्यक है। जो आत्मा ईश्वरीय नियम-संयम पर चलता है, नित्य ज्ञान का क्लास करता है, मुरली पढ़ता है, ईश्वरीय साहित्य का ही पठन-पाठन करता है, उसका चिन्तन भी सदा ईश्वरीय ज्ञान का ही चलता है।

परमात्मा ने हमको अनेक बातों का ज्ञान दिया है, जो अपने अभीष्ट लक्ष्य अर्थात् पूर्ण पावन बनने के लिए अति आवश्यक है। उस ज्ञान के गुह्य रहस्यों को समझने और उस अनुसार जीवन बनाने के लिए भी ज्ञान के उन बिन्दुओं का चिन्तन आवश्यक है। चिन्तन से ही ज्ञान प्रशस्त होता है, ज्ञान की धारणा होती है, ज्ञान का सुख अनुभव होता है।

''हम आत्मायें इस ड्रामा में एक्टर हैं, इनसे हम निकल नहीं सकते, मोक्ष पा नहीं सकते। बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाये, दूसरा कोई एड हो जाये - यह हो नहीं सकता। इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है।'' सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

''हमारा धन्धा ही सर्विस करना है। सर्विस करते रहेंगे तो सारा दिन विचार सागर मन्थन होता रहेगा। यह बाबा भी विचार सागर मंथन करता होगा ना। नहीं तो यह पद कैसे पायेगा।'' सा.बाबा 25.4.05 रिवा.

''विष्णु का लेटा हुआ चित्र दिखाते हैं। ज्ञान को सिमरण कर हर्षित हो रहा है। ... नर और नारी दोनों ही जो ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे ऐसे हर्षित रहते हैं। ... जो जितना ही ज्ञान को सिमरण करते हैं, वे उतना ही हर्षित रहते हैं।... व्यर्थ सिमरण होता है तो ज्ञान का सिमरण नहीं होता।'' अ.बापदादा 16.6.72

''जिनकी दिल सच्ची थी उन पर साहेब राज़ी हुआ। तब तो प्रॉपर्टी दी। प्रॉपर्टी तो दे दी। अब उनको सिर्फ अपना बनाने की बात है। सर्विस वा दान भी तब कर सकेंगे जब प्रॉपर्टी को अपना बनाया होगा। जितना प्रॉपर्टी होगी उतना नशे से दान कर सकेंगे।''

अ.बापदादा 30.5.71

''खजाना अपना बन गया फिर दूसरे को देने से बढ़ता जाता है। यह हुई पीछे की बात। लेकिन पहले अपना कैसे बनायेंगे जितना-जितना जो खजाना मिलता है उसके ऊपर

करने से अन्दर समाता है। जो मनन करने वाले होंगे उन्हों के बोलने में भी विल पॉवर होगी।'' अ.बापदादा 30.5.71

''जो बातें मनन की जाती हैं उन को वर्णन करना सहज हो जाता है। तो मनन करते और वर्णन करते चलो। यह भी दो बातें हुई। मनन करते-करते मग्न अवस्था ऑटोमेटीकली हो जायेगी। जो मनन करना नहीं जानते वह मग्न अवस्था का भी अनुभव नहीं कर सकते।'' अ.बापदादा 24.5.71

''दूर से ही जान जाते हैं कि यह ब्रह्माकुमार है। अब ब्रह्माकुमार के साथ-साथ तपस्वी कुमार दूर से ही दिखाई पड़ो, ऐसा बनकर जाना है। वह तब होगा जब मनन और मग्न दोनों का अनुभव करेंगे।'' अ.बापदादा 19.4.71

''अभी तो जो मिलता है, उसको बुद्धि में जमा करते जाते हो फिर बैठ जब रिवाइज करके उनकी महीनता वा गुह्यता में जायेंगे तब दूसरों को भी गुह्यता में ले जा सकेंगे।''

अ.बापदादा 16.10.75

''एकान्त में बैठने से ऐसे-ऐसे विचार-सागर मन्थन चलेगा। ... ये बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की। बाप कहते हैं - आज तुमको गुह्य ते गुह्य नई-नई प्वाइन्ट्स समझाता हूँ।'' सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

''आत्मा ब्रह्म महतत्व में खड़ी होती हैं, जैसे स्टार्स आकाश में खड़े हैं। ... जो बच्चे ज्ञान का विचार-सागर मन्थन नहीं करते हैं, उनकी बुद्धि में माया खिट-खिट करती है।'' सा.बाबा 26.7.05 रिवा.

''ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करो कि कैसे किसको समझायें। ... पहले हम मुक्तिधाम जायेंगे, फिर पहले से लेकर चक्र रिपीट होगा। ... स्टूडेण्ट्स की बुद्धि में यह सारी नॉलेज होनी चाहिए। ... यह रुहानी नॉलेज रुहानी बाप समझाते हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी और नशे में रहना चाहिए।''

सा.बाबा 27.7.05 रिवा.

''प्रेम से ज्ञान सुनाओ। पहले तो अच्छी रीति मंथन करना पड़े। शिवबाबा तो विचार सागर मंथन नहीं करते हैं। यह विचार सागर मंथन करते हैं, बच्चों को देने के लिए। फिर भी हमेशा ऐसे समझो कि शिव बाबा समझाते हैं। इनका भी यह नहीं रहता कि मैं सुनाता हूँ,

वहाँ असन्तुष्टा है और जहाँ प्राप्ति है वहाँ सन्तुष्टता है।''

अ.बापदादा 15.12.04

''रुहानी फखुर में रहते हो इसलिए बेफिकर बादशाह हो। ... ऐसे अनुभव करते हो ना! बेफिकर हो और बादशाह भी हो। ... बेफिकर हो क्योंकि आपने सारे फिकर बाप को दे दिये हैं। बोझ उतर गया ना। फिकर खत्म और बेफिकर बादशाह बन अमूल्य जीवन अनुभव कर रहे हो।'' अ.बापदादा 15.12.04

''दुनिया के धन्धे आदि की बात यहाँ नहीं लाओ। ... यह कोई मेरा काम नहीं है। मेरा धन्धा है तुम्हें पतित से पावन बनाकर विश्व का मालिक बनाने का। ... देवताओं को भी कोई परवाह नहीं होती है। देवताओं के ऊपर है ईश्वर। ईश्वर के बच्चों को क्या परवाह हो सकती है।'' सा.बाबा 25.12.04 रिवा.

''गाया जाता है ना - साथ और हाथ। तो साथ है बुद्धि की लगन और सदा अपने साथ श्रीमत रुपी हाथ अनुभव करेंगे।... तुमको बेगमपुर के बादशाह कहते थे ना। यह इस समय की स्टेज है जबकि गम की दुनिया सामने है। गम और बे-गम की अभी नॉलेज है। इसके होते हुए उस स्थिति में सदा निवास करते, इसलिये बेगमपुर का बादशाह कहा जाता हैं।'' अ. बापदादा 31.5.72

''जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आंख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा रूहानी नज़र में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करता रहता हैं।'' अ.बापदादा 2.5.74

''अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो? ... विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं। सिद्धि स्वरूप अर्थात् बेगमपुर के बादशाह।'' अ.बापदादा 3.10.75

''जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल ही नष्टोमोहा हो जाते हैं। ... कहेंगी हमको तो पवित्र बनना है, फट से कहेंगी हमको राजाई की कोई परवाह नहीं है। ...भक्ति मार्ग में राजाओं का भी नाम है, जिन्होंने सन्यास किया है। अभी

है, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी है, चाहे बाप में निश्चय की कमी है। ... ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।''

अ.बापदादा 13.01.86 पार्टी I

''जैसा निश्चय वैसा कर्म और वाणी स्वत: होती है। ... निश्चयबुद्धि हर समय अपने को बेफिकर बादशाह सहज और स्वत: अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 21.12.87

''ब्रह्मा बाप का यही शब्द हर बात में रहा - 'नथिंग न्यू' होना ही है, हो रहा है और हम बेफिकर बादशाह। ... फिकर में होंगे तो निर्णय ठीक नहीं होगा। बेफिकर होंगे तो निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी - अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें।'' अ.बापदादा 30.11.99

''यह है बेफिकर बादशाहों की सभा। यह सतयुग की राज-सभा से से भी श्रेष्ठ है क्योंकि वहाँ तो फिकर और फखुर दोनों के अन्तर का ज्ञान इमर्ज नहीं रहता है। फिकर शब्द का ही मालूम नहीं होता है।'' अ.बापदादा 10.03.86

''मैं निमित्त कर्मयोगी हूँ, करावनहार बाप है। अगर यह स्मृति हर समय स्वत: ही रहती है तो सदा ही बेफिकर बादशाह हैं। ... जब तक बादशाह नहीं बने हैं तब तक यह कर्मेन्द्रियां भी अपने वश में नहीं रह सकती हैं। राजा बनते हो तब ही मायाजीत, कर्मेन्द्रिय-जीत, प्रकृतिजीत बनते हो।'' अ.बापदादा 10.03.86

''तुमको नॉलेज देने वाला वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी, नॉलेजफुल बाप है। ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम सदा खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।'' सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

''जैसा निश्चय वैसा कर्म और वाणी स्वत: होती है। ... निश्चयबुद्धि हर समय अपने को बेफिकर बादशाह सहज और स्वत: अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 21.12.87

''सभी कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बादशाह हो। पवित्रता लाइट का ताजधारी बनाती है। ... बेफिकर बादशाह की निशानी है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। कभी भी कोई अप्राप्ति है ही नहीं जो असन्तुष्ट हों। जहाँ अप्राप्ति है

शिव बाबा सुनाते हैं। इसको निरहंकारीपना कहा जाता है। याद एक शिव बाबा को ही करना है।'' सा.बाबा 3.3.72 रिवा.

''अगर गाय न उगारे, ऐसा मुख न चले तो समझना चाहिए गाय बीमार है। यह भी ज्ञान का मंथन अगर नहीं करते तो गोया रोगी बीमार हो ... अनहेल्दी हो।''

सा.बाबा 6.12.69 रिवा.

''सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे और फिकर से फारिग हो जायेंगे। ... नॉलेज है सोर्स आफ इन्कम। यह नॉलेज भी है और धन्धा भी है। जो जितना पढ़ता है, उसकी उतनी इन्कम होती है।'' सा.बाबा 14.10.06 रिवा.

''ऐसी ऊंची पढ़ाई पर अच्छी रीति ध्यान देना चाहिए। सिर्फ याद की यात्रा से काम नहीं चलेगा, पढ़ाई भी जरूरी है। 84 का चक्र कैसे लगाते हैं, यह भी बुद्धि में फिरना चाहिए। ... सिर्फ इस पर नहीं ठहरना है कि हम बाबा को बहुत याद करते हैं। याद से पावन हो जायेंगे परन्तु पद भी पाना है। पावन तो मोचरा खाकर भी सबको होना ही है परन्तु बाप आये हैं विश्व का मालिक बनाने।'' सा.बाबा 19.8.04 रिवा.

''यहाँ क्या-क्या चीजें हैं, वहाँ यह कुछ भी नहीं होगा। सिर्फ भारत ही होगा। यह रेल आदि भी नहीं होगी। यह सब खत्म हो जायेंगे। वहाँ रेल की दरकार ही नहीं। छोटा सा तो शहर होगा। रेल तो चाहिए दूर-दूर गांव में जाने के लिए।''

सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

''ये सब बातें जो स्मृति में आई हैं, अब उनका सिमरण होना चाहिए, जिसको बाबा स्वदर्शन चक्र कहते हैं। यह भी तुमको स्मृति आई है कि हरेक आत्मा को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। ... यह बनी बनाई बन रही ... अनहोनी होये। इसमें नई बात कोई एड वा कट नहीं हो सकती है।''

सा.बाबा 4.8.04 रिवा.

''एक दिन ऐसा भी आयेगा जो दुनिया बहुत खाली हो जायेगी। सिर्फ भारत ही रहेगा। आधा कल्प सिर्फ भारत ही होगा, तो कितनी दुनिया खाली हो जायेगी। ऐसा ख्याल कोई की बुद्धि में नहीं होगा, सिवाए तुम्हारे। फिर तो तुम्हारा कोई दुश्मन भी नहीं होगा। दुश्मन क्यों आते हैं? धन के पिछाड़ी। भारत में इतने मुसलमान और अंग्रेज क्यों आये? ...

पैसा लेकर खाली करके गये। पैसा तो तुमने आपेही भी खत्म कर दिया, ड्रामा प्लेन अनुसार।'' सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

''यह सारा ज्ञान अन्दर में टपकना चाहिए। जैसे बाप की आत्मा में ज्ञान है, वैसे तुम्हारी आत्मा में भी ज्ञान है।... हम अज्ञान नींद में सोये पड़े थे, अब बाबा ने जगाया है। ... अब तुम बच्चों को यह ख्याल करना है कि हम अपनी उन्नति कैसे करें, ऊंच पद कैसे पायें ?'' सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

चिन्तन और योग

योग और चिन्तन का गहरा सम्बन्ध है क्योंकि योग में भी हम परमात्मा के नाम, रूप, गुण, कर्तव्यों का ही चिन्तन करते हैं, जिससे वह ज्ञान, गुण, शक्तियां हमारे में भी आती हैं और हम भी उनके समान सच्चिदानन्द स्वरूप बन जाते हैं। बिना चिन्तन के योग की सफलता अर्थात् सिद्ध सम्भव नहीं हो सकती। चिन्तन के बाद ही परमात्मा के समान बीज रूप स्थिति बनती है।

चिन्तन की आत्मा के उत्थान और पतन में महत्वपूर्ण भूमिका है। जीवात्मा जैसा चिन्तन करता है, वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। मनुष्य के चिन्तन पर किन-किन बातों का और कैसे प्रभाव पड़ता है, वह सब ज्ञान भी परमात्मा ने दिया है और उन्नति के पथ पर अग्रसर आत्मा को किन-किन बातों का चिन्तन करना चाहिए और किन बातों के चिन्तन से बचना चाहिए, वह भी बताया है। यथार्थ ज्ञान को समझकर आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-गुण-शक्तियों का चिन्तन ही आत्मा की उन्नति का साधन है। सत्य ज्ञान को भूलकर किसी भी भौतिक पदार्थ, व्यक्ति के गुण-धर्मों का चिन्तन आत्मा के पतन का कारण अवश्य बनता है भले ही वह कितनी भी शुभ-भावना से किया गया हो या वह व्यक्ति कितना ही गुणवान विशेषता सम्पन्न क्यों न हो। यथार्थ ज्ञान के चिन्तन से ही परमात्मा के द्वारा बताये गये इस विश्व-नाटक के गुह्य राज़ समझ में आते हैं, ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है। इसीलिए परमात्मा सदा ही चिन्तन के लिए प्रेरित करता है

हैं। ... शुभ-चिन्तक आत्मायें औरों के भी व्यर्थ चिन्तन, पर-चिन्तन को समाप्त करने वाले हैं।'' अ.बापदादा 10.11.87

''सतयुग में देवी-देवताओं को यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं था। अगर उनको ये ज्ञान हो कि हम सीढ़ी उतरते रसातल में जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे। चिन्ता लग जाये। अब तुमको चिन्ता लगी हुई है कि हम सतोप्रधान थे, फिर तमोप्रधान से अब कैसे सतोप्रधान बनें।'' सा.बाबा 17.7.71 रिवा.

भय जीवात्मा का परम शत्रु है, जो चिन्ता को जन्म देता है। भय और चिन्ता के वशीभूत आत्मा अनेक विकर्मों में प्रवृत्त होती है। भय और चिन्ता आत्मा के अपने ही विकर्मों के फलस्वरूप होती है, जो आत्मा ईश्वरीय ज्ञान को समझकर परमात्मा की श्रीमत अनुसार कर्म करती हैं, वे सदैव निर्भय और निश्चिनत रहते हैं। अपने किन्हीं पूर्व संचित कर्मों के फलस्वरूप भय और चिन्ता होती भी है तो वह सत्य ज्ञान और परमात्मा की मदद से समाप्त हो जाती है। जो परमात्मा के साथ सच्चे और आज्ञाकारी रहते हैं, उनको कब भय और चिन्ता हो नहीं सकती। भय और चिन्ता का मूल है अज्ञानता।

अपने वर्तमान कर्म, परमात्मा पर, अपने पर और विश्व-नाटक के विधि-विधान पर यथार्थ निश्चय नहीं। जिसको ड्रामा पर अटल निश्चय है, उसकी कभी भी गाड़ी संगम से पीछे नहीं जा सकती। हर बात में कल्याण ही होगा।

''बाप तो कहते हैं जल्दी-जल्दी करो परन्तु ड्रामा में जल्दी हो नहीं सकती। ... देहाभिमान के कारण ही लूनपानी होते हैं, स्वयं को धोखा देते हैं। बाप कहेंगे यह भी ड्रामा। जो कुछ होता, कल्प पहले मिसल ड्रामा चलता रहता है।''

सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

''जिनको निश्चय हो जाता है, उनको किसी की परवाह नहीं रहती है। मनुष्य अपने हाथ-पांव वाला है ना। ... अपने को स्वतन्त्र रख सकते हैं। क्यों न हम बाप से अमृत लेकर अमृत का ही दान करूँ।'' सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

''ऐसा निश्चयबुद्धि जो पाँव भी कोई हिला न सके। ... ऐसे निश्चयबुद्धि सदा निश्चिन्त रहते हैं। अगर जरा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय में कमी है। ... चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी

आत्मा को शक्ति प्रदान करता है, जिससे आत्मा सुख का अनुभव करती है।

चिन्ता अशुभ के भय से उत्पन्न होती है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, आत्मा दुख का अनुभव करती है। चिन्ता के वशीभूत आत्मा अनेक प्रकार के विकर्म करती है। चिन्ता स्वत: में एक विकर्म है क्योंकि चिन्ता वाला भय और चिन्ता का वायब्रेशन फैलाता है, जो अन्य आत्माओं के लिए भी भय और चिन्ता का कारण बन जाता है। श्रेष्ठ शुभ बातों के लिये चिन्तन होता जो आत्मिक शक्ति का विकास करता है, आत्मा को निर्भय-निश्चिन्त बनाता है।

आत्मिक उन्नति के लिए चिन्तन भी आवश्यक है और चिन्तन से परे निर्संकल्प-बीजरुप आत्मिक स्वरुप के अभ्यास की भी आवश्यकता है। सत्यता की अनुभूति के लिये चिन्तन आवश्यक है परन्तु आत्मिक शक्ति के विकास के लिये, विकर्मों को भस्म करने के लिए चिन्तन से परे आत्मिक स्वरुप में स्थित होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक जीवन की सफलता के निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि दोनों का सफल अभ्यास चाहिए।

मनुष्य सबसे अधिक चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए इस विश्व के उत्थान और पतन में उसके चिन्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव है। हमारा चिन्तन सदा शुभ रहे, ये हमारा परम कर्तव्य है।

''जितना-जितना गहराई में जायेंगे, उतना ही घबराहट गायब हो जायेगी। ... सागर के तले में, गहराई में क्या होता है? बिल्कुल शान्त और शान्त के साथ प्राप्ति भी होती है।'' अ.बापदादा 3.10.69

''इन बातों पर बच्चों को अच्छी रीति विचार भी करना है। हम आत्मायें ऊपर से आई हैं, शरीर से पार्ट बजाने। ... बाप सदैव परमधाम में रहते हैं, यहाँ एक ही बार संगम पर आते हैं। ... जब दुनिया को बदलना होता है। ... राम की सीता को चुराई। इन बातों पर विचार किया जाता है। ये सब बहुत समझने की बातें हैं।''

सा.बाबा 10.12.04 रिवा.

''वैभव वा व्यक्ति चिन्ता को मिटाने वाले नहीं चिन्ता को उत्पन्न कराने के निमित्त बन जाते

और चेलेन्ज करता है कि तुम विचार करो कि ये ज्ञान सत्य है, मैं तुमको जो बताता हूँ वह सत्य है या वेद-शास्त्रों में वर्णित या साधु-सन्त-चिन्तकों द्वारा बताया हुआ सत्य है। चिन्तन आत्मा का निजी स्वरूप है, इसलिए जब आत्मा यथार्थ ज्ञान न होने के कारण आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन नहीं करता तो भौतिक वस्तु और व्यक्तियों का अर्थात पर-चिन्तन अवश्य ही करेगा। मनुष्य जो देखता, सुनता, स्पर्श करता, उसकी छाप उसके अन्त:करण में रहती है और वह सब उसके चिन्तन को प्रभावित करते हैं अर्थात् जीवात्मा जो भी स्थूल या सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से ग्रहण करना उसका चिन्तन अवश्य होता है या वह उसके चिन्तन को प्रभावित अवश्य करता है। बाबा ने कहा है स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है और पर-चिन्तन पतन की जड़ है। स्व-चिन्तन क्या है, उसके विषय में संक्षेप में विचार करें तो जिस चिन्तन से परमात्मा की याद आये वह स्व-चिन्तन और शुभ चिन्तन है और जिस चिन्तन से किसी वस्तु-व्यक्ति की याद आये, वह पर-चिन्तन है। यदि हम गहराई से विचार करें तो हमारा जो भी चिन्तन चलता है, उसमें किसी न किसी व्यक्ति-वस्तु या परमात्मा की याद अवश्य आती है, जो हमारे चिन्तन की कसौटी है।

''विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। ... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''यह है याद की अग्नि, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। एक बाप से प्रीत बुद्धि होना है। सबसे फर्स्टक्लास माशूक है, जो तुमको भी फर्स्टक्लास बनाते हैं। ... यह सब विचार-सागर मन्थन करेंगे तो तुमको बड़ा मजा आयेगा।''

सा.बाबा 24.5.05 रिवा.

''रोज़ सवेरे उठकर यह विचार सागर मन्थन करो और यही चार्ट रखो। कितना समय हमने बाप को याद किया, कितनी जंक उतरी है। ... अन्दर में यही घोटना है - हम आत्मा हैं। गाते भी हैं तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक देत रघुवीर। ... एकान्त में बैठकर अपने साथ बातें करो।'' सा.बाबा 14.6.06 रिवा.

''आज अंधेरे में है इन्सान ... अभी तुम तो अंधेरे में नहीं हो। ... कितना वण्डरफुल यह

नाटक है। ... सवेरे उठकर एक तो बाप को याद करना है और खुशी में ज्ञान का सुमिरन करना है।'' सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

''अभी तुमको विचार करना है - क्या करें जो सब जल्दी समझ जायें। ... किसको पैसे देकर काम कराना भी रिश्वत है, बेकायदे हो जाता है। ... तुम्हारी है योगबल की बात। योगबल इतना चाहिए जो तुम कोई से भी काम करा सको। ... अब बच्चों को विचार करना है, हम अखबार के द्वारा कैसे समझायें।''

सा.बाबा 31.7.04 रिवा.

''जो ओटे सो अर्जुन। अर्जुन की विशेषता है सदा बिन्दी स्वरूप बन विजयी बनना। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाला अर्जुन, सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाला अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं - ऐसे बेहद की वैराग्य वृत्ति वाले अर्जुन कौन बनेंगे ? ... हर सेकेण्ड वा हर कदम में समीपता और सम्पूर्णता के समीप आने के लक्षण स्वयं को भी अनुभव हों और दूसरे भी अनुभव करें।''

अ.बापदादा 1.01.86

''नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हर एक जीवात्मा अब अपने ऊपर वण्डर खा रही है कि हम क्या थे, किसके बच्चे थे, बाप से क्या वर्सा मिला था, फिर कैसे हम भूल गये। ... हमारा घर कहाँ है, कहाँ के रहने वाले थे ... भटक-भटक का फाँ हो गये। अपने ही अज्ञान के कारण रावण राज्य में तुमने कितना दुख उठाया है। भारत भक्ति मार्ग में गरीब बनता है। ... भक्ति के बाद ही भगवान फल देते हैं।''

सा.बाबा 8.7.04 रिवा.

''बच्चे एकान्त में बैठकर विचार करो - बाबा को याद करके हमको यह बनना है। ... यह प्रश्न नहीं उठता कि कहाँ याद करूँ, कैसे याद करूँ ? बेहद के बाप को याद करना है। ... पादरी लोग जब चक्कर लगाते हैं तो और कोई को देखना भी पसन्द नहीं करते हैं। सिर्फ क्राइस्ट की याद में रहते हैं।'' सा.बाबा 1.7.04 रिवा.

''अब बच्चे यह तो जानते हैं - हम आत्मा इस शरीर को छोड़कर अपने घर जायेंगे। बहुत खुशी से जाना है। सारा दिन यह चिन्तन करते रहें - हम शान्तिधाम में जायें क्योंकि बाप ने रास्ता तो बताया है। ... जितना बाप को याद करेंगे उतना सम्पूर्ण बन यथा योग्य शान्तिधाम में जायेंगे।'' सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

निर्विकल्प समाधि की सिद्धि होती है।

योग के लिए भी बाबा कहते हैं - जब योग में बैठते हो तो तुम्हारा ज्ञान का भी चिन्तन नहीं चलना चाहिए, सेवा का भी चिन्तन नहीं चलना चाहिए। फिर कहते हैं - तुम ज्ञान का चिन्तन करो, सेवा की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ निकालों कि कैसे किसको सहज समझा सकें, ज्ञान के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट कर सकें।

इस प्रकार हम देखें तो आत्मा के लिए चिन्तन भी आवश्यक है और चिन्तन-मुक्त स्थिति का अभ्यास भी अति आवश्यक है। दोनों ही अभ्यास करेंगे, तब ही इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव होगा अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होगा। इसके लिए बाबा कहते हैं - तुम्हारा अपने मन-बुद्धि पर ऐसा नियन्त्रण हो, जो जिस समय जिस स्थिति में स्थित होना चाहें, उसी समय संकल्प करते ही उस स्थिति में स्थित हो जायें।

''एक तो बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जायें, दूसरा फिर चक्र को फिराओ। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, इनकी आयु कितनी है, कौन कब आते हैं - यह सारा बाप बैठ समझाते हैं ... पहले-पहले जो आयेंगे, वे ही 84 जन्म लेंगे। ... सारा दिन बुद्धि में सृष्टि-चक्र फिरता रहे और अपना घर भी याद रहे।''

सा.बाबा 8.6.07 रिवा.

''यह बातें रात को चिन्तन कर बहुत खुशी में आना चाहिए। अमृतवेले उठकर बाबा को याद करो और यह चिन्तन करो तो खुशी का पारा बहुत चढ़ेगा। ... रात को जागकर याद करेंगे, विचार सागर मन्थन करेंगे तो प्रैक्टिस पड़ जायेगी, नींद को फिटाना चाहिए।'' सा.बाबा 29.5.07 रिवा.

चिन्तन और चिन्ता तथा चिन्तन और चिन्ता से परे स्थिति

चिन्तन और चिन्ता का जीवात्मा के सुख-दुख के अनुभव में महत्वपूर्ण स्थान है। यथार्थ ज्ञान का चिन्तन आत्मा की सुषुप्त शक्तियों को जाग्रत करता है, ज्ञान के गुह्य रहस्यों का अनुभव कराकर अनेक प्रकार के विकर्मो और चिन्ताओं से बचाता है। यथार्थ चिन्तन

चिन्तन और चिन्तन-मुक्त स्थिति

चिन्तन जीवात्मा का स्वभाव है अर्थात् जब से आत्मा शरीर में प्रवेश करती है, तब से वह किसी न किसी वस्तु-व्यक्ति, कार्य-व्यवहार का चिन्तन करती ही है परन्तु आत्मा का मूल स्वरूप चिन्तन से मुक्त है। इसलिए बाबा ने एक बार क्लास में प्रश्न पूछा - क्या शिवबाबा चिन्तन करते हैं? तो प्राय: सभी ने 'नहीं' में ही उत्तर दिया क्योंकि वे ज्ञान के सागर है और सदा पावन हैं, इसलिए उनको जो बोलना होता है, उसका संकल्प समय पर स्वत: ही आता है और वह शब्द में परिणित हो जाता है। बाबा हमको भी आप समान बनाते हैं तो हमको भी चिन्तन-मुक्त बनना होगा अर्थात् जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होगी तो चिन्तन से परे अर्थात् चिन्तन-मुक्त होगी। उस स्थिति का अभ्यास अर्थात् पुरुषार्थ अभी इस देह में रहते ही करना। ब्रह्मा बाबा बच्चों को ज्ञान के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए, सर्व आत्माओं को बाप का अर्थात् आध्यात्मिकता का सन्देश देने के लिए सदा चिन्तन करते हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा भी बाप समान बनने के लिए चिन्तन-मुक्त स्थिति का पुरुषार्थ भी अवश्य करते हैं। ब्रह्मा बाबा के जीवन में चिन्तन और चिन्तन-मुक्त स्थिति का अद्वितीय सन्तुलन था। वे जिस समय जो कर्म करना चाहें, वही होता था। हमको दोनों बाप अर्थात् निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाप के समान बनना है तो ज्ञान का चिन्तन भी करना है तो चिन्तन-मुक्त स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ भी करना है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का जन्मसिद्ध अधिकार है, इसलिए हर आत्मा में चिन्तन और चिन्तन-मुक्त दोनों स्थितियों के संस्कार हैं, जिसके कारण ही आत्मायें उनकी इच्छा करती हैं। मुक्ति के बाद ही जीवनमुक्ति मिलती है और जीवनमुक्ति के बाद आत्मा इस जगत के विषय-वस्तुओं, व्यक्तियों का चिन्तन करते हुए जीवनबन्ध में आती है, फिर परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर मुक्ति में ले जाते हैं। परमात्मा आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों का ही अनुभव कराते हैं। इस प्रकार हम देखें तो ये तीनों स्थिति एक-दूसरे पर आधारित हैं और एक-दूसरे के जन्मदाता हैं र्थात् तीनों स्थितियां सारे कल्प में चक्रवत् चलती हैं। हठयोग मार्ग में भी निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि का वर्णन है। पहले निर्संकल्प समाधि की सिद्धि होती है, फिर

चिन्तन और गुण एवं शक्तियों की धारणा

दैवी गुणों और शक्तियों को धारण करने के लिए और नियम-संयम पर चलने के लिए भी उनका चिन्तन अति आवश्यक है। उनके चिन्तन से ही उनका जीवन में महत्व अनुभव होता है और उनकी धारणा होती है, जिससे उनका सुख अनुभव होता है और जीवन-व्यवहार की सफलता में भी उनका सहयोग मिलता है।

वास्तव में परमात्मा ने हमको जो ज्ञान दिया है, वह हमारे जीवन में धारण हो जाये और जो नियम-संयम बताये हैं, उन पर हम सही रीति चलते हों तो हमारा ये जीवन परमात्मा के समान परमानन्दमय होगा। इस कसौटी पर हम अपने को देख सकते हैं कि कहाँ तक वह ज्ञान हमारे जीवन में धारण हुआ है।

''बच्चे हर एक प्वाइन्ट पर विचार सागर मन्थन करते रहें तो वे प्वाइन्ट्स समय पर याद आयें। ... गऊ घास खाती है तो उगारती रहती है। तुमको यह ज्ञान घास मिलता है परन्तु तुम सारा दिन उगारते नहीं हो। ... इस पर सारा दिन विचार-सागर मन्थन करते रहना चाहिए। ... उगारते रहो तो धारणा पक्की हो जाये और खुशी का पारा भी चढ़े।''

सा.बाबा 14.11.06 रिवा.

''अगर नॉलेज से लाइट-माइट नहीं मिलती तो वह नॉलेज ही किस काम की! ... जब ज्ञान बुद्धि में समा जाता है तो बुद्धि के डायरेक्शन अनुसार कर्मेन्द्रियाँ भी वैसा ही कर्म करती हैं। ... भोजन खाना और चीज है, हजम करना और चीज है। खाने से शक्ति नहीं आयेग, हजम करने से शक्ति आती है।''

अ.बापदादा 24.1.70

''उनकी बुद्धि में गीता रहती है और समझते हैं - गीता कृष्ण ने सुनाई और व्यास ने लिखी। परन्तु गीता तो न कृष्ण ने सुनाई थी और न वह समय था। बाप ये सब बातें क्लीयर कर समझाते हैं और कहते हैं अभी जज करो।''

सा.बाबा 11.6.07 रिवा.

''जो नॉलेज को अच्छी रीति धारण कर और करायेंगे, वे ही ऊंच पद पायेंगे। ... सवेरे उठकर बाप को याद करो और स्वदर्शन चक्र फिराओ। ... जितना रहम दिल बनकर अपना और औरों का कल्याण करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 9.6.07 रिवा.

''तुमको रात दिन यही तात लगी रहनी चाहिए कि लोगों को यह कैसे समझायें। ... मूलवतन से निराकारी झाड़ से आत्मायें नम्बरवार आती रहती हैं। ... तुमको यह नॉलेज अभी दी गई है कि दूसरों को भी समझाओ। ... अपने-अपने समय पर हर एक आत्मा की महिमा होती है।''

सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''इस नॉलेज में रमण करना चाहिए। ... पिछाड़ी में फिर यहाँ आकर वे रहेंगे, जो बाप की सर्विस में तत्पर रहते हैं। वह बहुत वण्डरफुल पार्ट देखेंगे। ... तुम पूरे फरिश्ते यहाँ ही बनते हो।''

सा.बाबा 24.4.07 रिवा.

''ये मन्दिर आदि अब टूटेंगे, फिर भक्ति मार्ग में बनेंगे। यह सब बातें धारण करने की हैं। यह अपने साथ बातें करनी हैं। इसको कहा जाता है विचार सागर मन्थन करना। ... तुम कल्याणकारी बाप के बच्चे हो, तुम सबका कल्याण करने वाले हो।''

सा.बाबा 20.4.07 रिवा.

''यहाँ जो पूज्य बनते हैं, उनको ही पुजारी बनना है। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ... अब फिर ब्राह्मण बने हैं। यह वर्ण भारत के ही हैं और कोई तो इन वर्णों में नहीं आ सकते। तुम ही इन 5 वर्णों में चक्कर लगाते हो।... यह ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों का ही खुलता है, फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है।''

सा.बाबा 7.4.07 रिवा.

''यज्ञ से जो कुछ मिले, वह स्वीकार करना है। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जौहरी था लेकिन कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे। ... मोह रखना चाहिए बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों में।''

सा.बाबा 12.3.07 रिवा.

''जो भी ज्ञान की बातें हैं, उनको रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो। ... अनुभवी मूर्त बनना है। चलते-फिरते आत्मा का अनुभव हो, बाप के कम्बाइण्ड रूप का अनुभव हो, इस अनुभव में कमी है। रियलाइज़ करो तो रियल गोल्ड बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 15.2.07

''अपनी कमी को रियलाइज़ करते हो लेकिन परिवर्तन करने में कमी पड़ जाती है। उसमें बापदादा ने देखा है कि एक दृढ़ता की कमी है

चिन्तन और स्वप्न

मनुष्य के स्वप्नों का आधार भी दिन के समय या पूर्व में देखा गया, सुना गया और उस पर किया गया चिन्तन ही है। वह चिन्तन अन्त:पटल पर सूक्ष्म रूप से अंकित हो जाता है अर्थात संचित हो जाता है, जो रात्रि के समय आत्मा जब शान्त होती है तब स्वप्नों के रूप में सामने आता है। भल कुछ स्वप्न ऐसे भी आते हैं, जिनके विषय में कब सोचा भी नहीं होता और सोचा भी नहीं जा सकता अर्थात् जिनका कोई आधार नहीं होता है।

पुरुष प्रकृति में स्वप्न-दोष की वास्तविकता को विचार करें तो वह भी पूर्व के चिन्तन का ही परिणाम है। पुरुष प्रकृति में और स्त्री प्रकृति में ऐसी अनेक घृणित बीमारियों का कारण भी चिन्तन ही बनता है। ये भी एक मानसिक रोग हैं, जिनका कारण अशुद्ध चिन्तन होता है। इसीलिए बाबा हमको टी.वी., सिनेमा आदि देखने, अश्लील साहित्य पढ़ने, चित्र आदि देखने की मना करते हैं क्योंकि मनुष्य जो देखता, सुनाता, पढ़ता, उसका चिन्तन अवश्य चलता है । इसी परिपेक्ष में प्यारे ब्रह्मा बाबा अपने जीवन की एक घटना का अनुभव सुनाते हैं कि कैसे एक फिल्म देखने से उनके जो बचपन के वैराग्य के ख्यालात थे, वे उड़ गये। ऐसी कोई न कोई बातों का अनुभव हरेक को अपने जीवन में होता ही है।

''बाबा को यह सब पढ़ने का बहुत शौक रहता था। छोटेपन में वैराग्य आता था। फिर एक बार बाइसकोप देखा, बस वृत्ति खराब हुई, साधूपना बदल गया। ... बाबा ने इसमें प्रवेश किया तो कितनी गाली खाई। ... बाबा ने कहा - इतनी बड़ी स्थापना करनी है, सब इस सेवा में लगा दो। एक पैसा भी किसको देना नहीं है। नष्टोमोहा इतना चाहिए।''

सा.बाबा 6.1.05 रिवा.

और दूसरी मन को एकाग्र करने की विशेषता अर्थात् जिस घड़ी चाहे, उस घड़ी मन एकाग्र हो जाये, जहाँ चाहो, वहाँ एकाग्र हो जाये - इसकी कमी है, इसके ऊपर अटेन्शन दो।'' अ.बापदादा 15.2.07

''गॉड फादर ही लिबरेट कर गाइड करते हैं। उनका ही गायन है - लिबरेटर-गाइड, वह भारत में ही आते हैं। तो भारत सभी से ऊंच देश ठहरा। भारत की बहुत महिमा करनी है। ... तुम बचचों को ज्ञान मिला है तो विचार-सागर मंथन चलता है। और कोई का तो चलता ही नहीं है। ... बाप ही गुप्त ज्ञान देते हैं, जिससे सभी की सद्गति हो जाती है।'' सा.बाबा 24.4.68 रात्रि क्लास

''बाबा जानते हैं जिन्होंने कल्प पहले राज्य-भाग्य लिया होगा, वे अब भी लेंगे। यह चक्र तुम्हारी बुद्धि में होना चाहिए। ... यह सारी कहानी भारत की ही है कि कैसे सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं, फिर विनाश होता है। ... तुम बच्चे इस ज्ञान का सुमिरन करते रहो तो बहुत खुशी रहेगी।'' सा.बाबा 14.12.06 रिवा.

''विघ्न तो आयेंगे, उनको खत्म करने की युक्ति है सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है।... इसमें घबराना नहीं है, उसकी गहराई में जाकर पास करना है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''आत्मा में ही मन-बुद्धि है। यह अच्छी रीति समझकर, फिर चिन्तन करना है और फिर औरों को भी समझाना होता है। ... बच्चों को अच्छी रीति धारणा करनी है जो किसी को भी समझा सकें।'' सा.बाबा 19.7.04 रिवा.

चिन्तन और बाबा की मुरली

विचार-सागर मन्थन के लिए बाबा की मुरली सबसे अच्छा साधन है। कहा ही जाता है विचार-सागर मन्थन। परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसके ज्ञान-सागर स्वरूप का अनुभव बाबा की मुरली से होता है। जो बाबा की मुरली के महत्व को समझ लेता है, वही उस पर विचार सागर मन्थन कर उसमें नीहित रतनों को धारण करके उनका सुख अनुभव करता है।

अगर अपने को संगमयुगी ब्राह्मण समझें तो सतयुग के झाड़ देखने में आयें और अथाह खुशी रहे।''

सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

चिन्तन और अन्य योनि की आत्मायें

चिन्तन आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है, इसलिए हर आत्मा चिन्तनशील है अर्थात् हर योनि की आत्मायें चिन्तन करती हैं। भले हर योनि की आत्माओं के चिन्तन की गति-विधि, स्थिति भिन्न होती है अर्थात् उनके चिन्तन का स्तर अपना होता है। एक चींटी अपना घर बनाती है, उसमें खाद्य सामग्री को संचित करती है। मधु मक्खी छत्ता बनाती हैं, उसमें शहद का संग्रह करती हैं अपने बच्चों के लिए, चिड़िया घोंसला बनाती है आदि आदि बातों पर विचार करें तो इन सब क्रियाओं के लिए उनका चिन्तन अवश्य चलता होगा। ऐसे ही हम किसी योनि की आत्मा के जीवन को, उसकी गति-विधि को विचार करेंगे तो हर प्राणियों में ऐसी कोई गति-विधि मिलेगी, जो इस बात को सिद्ध करती है कि उसका उसके लिए चिन्तन अवश्य चलता है।

बाबा भ्रमरी का, कछुये का, सर्प का उदाहरण देता है तो उन क्रियाओं के लिए उनका चिन्तन अवश्य चलता होगा।

''योग से विकर्म विनाश नहीं होंगे तो बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी। जानवर आदि तो सज़ा नहीं खाते हैं। सज़ा मनुष्य के लिए है। ... इस समय मनुष्य जानवर से भी बदतर हैं, उनको ही फिर मनुष्य से देवता बनना है। ''

सा.बाबा 2.4.07 रिवा.

Q. जानवरों को जो सुख-दुख होता है, वह कर्म और फल के विधि-विधान अनुसार होता है या उनका कोई और विधि-विधान है?

''रात दिन बुद्धि में यही बातें चलती रहें। यह बुद्धि के लिए भोजन है। ... मीरा की थी भक्ति की डांस। तुमको ज्ञान की डान्स करनी है। ... तुम कोई को सिद्ध कर बता सकते हो कि बाप एक ही है, उनसे ही वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 5.6.07 रिवा.

''बाप कितनी महीन बातें सुनाते हैं। दिन-प्रतिदिन तुमको कितनी गम्भीर नॉलेज मिलती रहती है। ... जो अच्छी रीति समझते हैं, वे अच्छी रीति धारण करते हैं और फिर औरों को भी धारण कराते हैं अर्थात् वर्णन करते हैं।''

सा.बाबा 18.5.07 रिवा.

''मुरली रोज़ सुननी पड़े। एक दिन भी मिस होने से बड़ा घाटा पड़ जाता है क्योंकि कभी-कभी बड़ी गुह्य प्वाइन्ट्स, हीरे-रतन निकलते हैं। कोई फर्स्टक्लास रतन निकला हो और हमने मिस कर दिया तो घाटा पड़ जायेगा।''

सा.बाबा 18.4.07 रिवा.

''ख्यालात चलते हैं, नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती रहती हैं। दिन-प्रतिदिन चित्र आदि सहज निकलते जाते हैं और निकलते सब ड्रामा अनुसार ही हैं। कल्प पहले जो एक्ट चली है, वही चलती है। ... नई-नई प्वाइन्ट्स बाबा समझाते रहेंगें, एडीशन-करेक्शन होती रहेगी। ... बाबा कहते हैं - मैं तुमको रोज़ नई बातें सुनाता हूँ, सब इकट्ठी थोड़ेही सुनाऊंगा। बाप है ज्ञान का सागर। सा.बाबा 1.3.07 रिवा.

''बाबा जो टॉपिक पर सुनाते हैं, वे नोट रखना चाहिए। ... अपने पास टॉपिक्स की लिस्ट रखनी चाहिए। एक-एक टॉपिक बहुत फर्स्टक्लास है।''

सा.बाबा 17.12.06 रिवा.

''एकान्त में बैठकर विचार सागर मन्थन करो। ... हम भारतवासी जो देवी-देवता धर्म वाले थे, वे कैसे सतोप्रधान बनें फिर सतो, रजो, तमो में आये। यह सब बातें धारण करनी होती हैं तब ही विचार-सागर मन्थन होता है। धारणा ही नहीं होगी तो विचार सागर मन्थन हो न सके। ... बच्चों को रोज़ पढ़ना है और उस पर विचार सागर मन्थन करना है।'' सा.बाबा 19.12.06 रिवा.

''इस मुरली में ज्ञान का जादू है। ... इस ज्ञान का विचार सागर मंथन करना चाहिए।

चाहिए। विचार-सागर मन्थन चलता रहेगा तो तुम अपार खुशी में रहेंगे।

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान के चिनतन, आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, आत्मा शान्ति का अनुभव करती और अपने परम-लक्ष्य परमशान्ति को प्राप्त करती है। पर-चिन्तन, व्यर्थ चिन्तन से आत्मिक शक्ति का नाश होता है, आत्मा अशान्ति का अनुभव करती है और आत्मा अभीष्ट लक्ष्य परमशान्ति से दूर होती जाती है। सत्य ज्ञान संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा ही आकर देते हैं, और तो सारे कल्प में आत्मायें अज्ञानता जनित देह-भान और देहाभिमान के वशीभूत भौतिक पदार्थों का ही चिन्तन करता है, जिससे वह अशान्ति की ओर ही अग्रसर रहता है। भले सतयुग में आत्मा को अशान्ति की अनुभूति नहीं होती है परन्तु वहाँ भी सत्य आध्यात्मिक ज्ञान के न होने के कारण आत्मायें देह-भान के कारण भौतिक पदार्थों का ही जाने-अन्जाने चिन्तन करते हैं, उनकी बुद्धि में वे ही रहते हैं।

''लक्ष्मी-नारायण को भी स्वदर्शन चक्रधारी नहीं कहेंगे। ... इस नॉलेज को धारण कर और कराना है, इतनी सर्विस करनी है तब 21 जन्मों के लिए प्रालब्ध मिलेगी।... इस देह का भी ख्याल न हो, देह सहित सबको भूलना है। जब इतना पुरुषार्थ करेंगे तब अन्त मती सो गति होगी।'' सा.बाबा 11.6.07 रिवा.

''वह है हद के वर्ष का चक्र और ये है बेहद सृष्टि-चक्र का नया संगमयुग। ... इस नई नॉलेज द्वारा नई वृत्ति, नई दृष्टि और नई सृष्टि में आ गये हो। ... आप जैसे खुशनसीब, खुशी के खज़ानों से सम्पन्न, सदा सुखी और कोई हो सकता है! इस नवीनता की विशेषता आपके देवताई जीवन में भी नहीं है।''

अ.बापदादा 31.12.91

''अन्दर विचार चलना चाहिए - अभी संगमयुग पर हैं, पावन बन रहे हैं, बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। यह घड़ी-घड़ी सुमिरण करना है। ... तुम ईश्वरीय मिशन हो ना। ईश्वरीय मिशन का काम है पहले तो शूद्र से ब्राह्मण और ब्राह्मण से देवता बनाना। ... तुमको सर्व आत्माओं का कल्याण करने का शौक होना चाहिए।''

सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

''संगमयुग पर तुम नई-नई बातें सुनते हो तो उसका चिन्तन चलना चाहिए, जिसको विचार सागर मंथन कहा जाता है।...

इतना सारा ज्ञान सबकी बुद्धि में रह नहीं सकता। सारा दिन ऐसे ज्ञान में रमण करना है।''

सा.बाबा 26.4.05 रिवा.

''यह पुरानी दुनिया है, इसके विनाश के लिए सब तैयारियाँ हो रहीं है। .. यह सब ड्रामा अनुसार होना ही है। ... यह सब बातें अन्दर सिमरण का खुश होना चाहिए। बाबा ने यह रथ भी लिया, इनको तो कुछ भी है नहीं। सब कुछ दे दिया। ... बाबा का गीत भी बनाया हुआ है - अलफ को अल्लाहमिला, इस गदाई का क्या करेंगे। कम जास्ती देकर एकदम खलास कर दिया। शरीर भी बाबा को दे दिया।''

सा.बाबा 27.8.04 रिवा.

''बाप को बहुत प्यार से याद करना है और स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। ... तुम बच्चों की बुद्धि में सारे ड्रामा का चक्र फिरना चाहिए।''

सा.बाबा 26.6.04 रिवा.

चिन्तन-धारा और पुरुषोत्तम संगमयुग

यथार्थ और चढ़ती कला के चिन्तन का ये कल्प का कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग ही है। इसकी यादगार में ही विष्णु को शेष शैय्या पर निश्चिन्त लेटा हुआ हर्षित मुद्रा में दिखाते हैं परन्तु विष्णु तो शेष शैय्या पर लेटते ही नहीं हैं क्योंकि सतयुग में विकारों रूपी सर्प होते नहीं हैं। ऐसे ही विष्णु को स्वदर्शन चक्र दिखाते हैं परन्तु विष्णु स्वदर्शन चक्रधारी भी नहीं हैं क्योंकि उनको इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान ही नहीं है। स्वदर्शन चक्र का ज्ञान तो ब्रह्मा और ब्रह्मा कुमार-कुमारियों को ही शिव परमात्मा से मिलता है, जिसको मन्थन कर वे धारण करते हैं, जिससे विकारों के गले कट जाते हैं और वे परमानन्द का अनुभव करते हैं। स्वदर्शन चक्र को सदा चलता हुआ दिखाते हैं। जिस आत्मा का ईश्वरीय ज्ञान का विचार-सागर मन्थन सदा चलता रहेगा, उसके विकारों रूपी सर्पों के गले कट जायेंगे और वह इस विकारी दुनियां में रहते भी विष्णु के समान सदा हर्षित रहेगा। ब्रह्मा बाबा का कितना विचार-सागर मन्थन चलता था, वह साकार मुरली को पढ़ने से पता चलता है। बाबा हमको भी कहते हैं - तुम्हारा विचार-सागर मन्थन सदा चलते रहना

स्टूडेण्ट्स विचार सागर मंथन कर ज्ञान को उन्नति में लाते हैं। तुमको यह ज्ञान मिलता है, उस पर अपना विचार सागर मंथन करने से अमृत निकलेगा। अगर ज्ञान का विचार सागर मंथन नहीं होगा तो क्या मंथन होगा? आसुरी विचार मंथन।''

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''तुम बच्चों को हर एक बात का विचार सागर मंथन करना चाहिए।''

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''दान-पुण्य आदि भी यहाँ किया जाता है, सतयुग में नहीं। ... सारा मदार कर्मों पर है। ... इस चक्र का तुमको ही पता है। जो विचार सागर मंथन करते रहेंगे, उनको ही धारणा होगी। मुरली चलाने वाले का विचार सागर मंथन अच्छा चलता रहेगा।''

सा.बाबा 3.12.04 रिवा.

''यहाँ क्लास में बैठे एक शिवबाबा की ही याद रहे। सारा समय एक शिवबाबा के सम्मुख रहें तो अहो सौभाग्य। ... भल कोई की बुद्धि में सर्विस के ख्यालात चलते हैं, इस चित्र में यह करेक्शन करें, यह लिखें परन्तु अच्छे बच्चे जो होंगे तो वे समझेंगे कि अभी तो बाप से ही सुनना है, और कोई संकल्प अपने नहीं देंगे।''

सा.बाबा 15.11.06 रिवा.

''मुरली मिस कर देते हैं। बाप कहते हैं - कितनी गुह्य-गुह्य बातें तुमको सुनाता हूँ, जो सुनकर धारणा करना है। धारणा नहीं होगी तो कच्चे रह जायेंगे। बहुत बच्चे भी विचार सागर मंथन कर अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं। ... तुमको तो अथाह खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 29.7.04 रिवा.

चिन्तन और ईश्वरीय सेवा

ईश्वरीय सेवा में सफलता पाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान के विभिन्न तथ्यों का ज्ञान हमारी बुद्धि में होना अति आवश्यक है, जिससे हम किसी को भी समयोचित उत्तर दे सकें, जिससे प्रश्न-कर्ता सन्तुष्ट भी हो और ईश्वरीय ज्ञान को समझने की उसकी रुचि भी बढ़े। बाबा बार-बार मुरलियों में कहता है कि

तुम विचार करो, चिन्तन करो कि किसको कैसे समझायें, जिससे वह सहज समझ जाये। बाबा कहते - तुम मनन-चिन्तन करके ऐसी युक्तियां निकालो, जिससे इस ईश्वरीय ज्ञान के गुह्य रहस्य किसकी बुद्धि में सहज आ जायें। बाबा ने सेवार्थ जो चित्र बनवाये हैं, उनके विषय में भी बाबा कहते हैं कि तुम चिन्तन करो - इनमें और क्या-क्या करेक्शन की जाये, क्या लिखत लिखी जाये, जिससे कोई सहज इनके रहस्य को समझ जाये।

सेवा में भी चिन्तन की बहुत आवश्यकता है और सेवा करने वाले का ही चिन्तन चलता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि जो सेवा पर तत्पर होंगे, उनका ही चिन्तन चलेगा क्योंकि सेवा में अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क होता है, उनके अनेक प्रकार के प्रश्न होते हैं, जो सामने आते हैं, तब ही उन पर चिन्तन चलता है। भले ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको सारा ज्ञान दिया है परन्तु वह हमारी बुद्धि में कहाँ तक धारण हुआ है, वह सेवा के समय ही पता चलता है और उसके लिए पुरुषार्थ स्वत: ही होने लगता है।

''घूमते-फिरते बुद्धि में यह चिन्तन रहना चाहिए। बाबा में यह ज्ञान है ना। ज्ञान सागर है तो जरूर ज्ञान टपकता होगा। तुम भी ज्ञान सागर से निकली ज्ञान नदियां हो। ... स्टुडेण्ट्स की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई रहती है।... धारणा कर औरों को भी समझाना चाहिए।''
सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

''यह सारा राज़ बुद्धि में है ना। तो यह सुमिरन करते रहना चाहिए। ... लाखों वर्ष का तो कोई चिन्तन कर भी न सके। ... धीरे-धीरे सुख कम होता जाता है। हर एक चीज सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो होती है। ये सब बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण कर औरों को भी समझाना है।''
सा.बाबा 23.12.04 रिवा.

''युक्तियां निकालनी होती हैं, जिससे कोई को अच्छी रीति तीर लगे। ... तुम एक ही प्वाइन्ट को उठाओ कि सर्वव्यापी की बात से तो भक्ति भी चल न सके। यह बात अच्छी रीति समझानी है।''
सा.बाबा 8.6.07 रिवा.

''परमात्मा बाप है, सर्वव्यापी नहीं है। इस एक बात को सिद्ध किया तो तुम्हारी जीत है।

शुरू होता है तब फिर और-और खण्ड बनते जाते हैं। ... तुम्हारी बुद्धि में यह चक्र फिरना चाहिए। ... वहाँ आसमान, सागर आदि सब के तुम मालिक बन जाते हो। वहाँ कोई हद नहीं रहती है।''
सा.बाबा 7.5.07 रिवा.

''बाप समझाते हैं - सवेरे उठकर ऐसे-ऐसे ख्याल करो। अभी नाटक पूरा होता है, हमको वापस घर जाना है। अब एक बाप की श्रीमत पर ही चलना है।''
सा.बाबा 19.4.07 रिवा.

''जैसे मेरी बुद्धि में झाड़, ड्रामा की नॉलेज की धारणा है, वैसे तुम्हारे में भी होनी चाहिए। ... यह नॉलेज तुम बच्चों की बुद्धि में टपकनी चाहिए। ओना रहना चाहिए कि जाकर बिचारों का कल्याण करें।''
सा.बाबा 30.3.07 रिवा.

''तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बुद्धि में सारा दिन यह ज्ञान टपकता रहे। ... सदैव बुद्धि में यह बातें रिवाइज़ करो कि पहले-पहले हम पावन थे, फिर 84 जन्म लेकर पतित बन गये, अब ड्रामा प्लेन अनुसार बाबा पावन बना रहे हैं।''
सा.बाबा 25.12.06 रिवा.

''बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। पक्के रहेंगे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।''
सा.बाबा 23.12.68 रात्रि क्लास

''जो पास्ट हो चुका है वह फिर से होना है। बनी बनाई ...अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा राज़ है। किसको भी दोष नहीं दे सकते। ड्रामा में पार्ट है। तुमको सिर्फ बाप का पैग़ाम सुनाना है। ... कल्प पहले भी जो निमित्त बने होंगे, वे ही अब बनेंगे और बनाते जायेंगे। बच्चों को विचार सागर मन्थन करना है।''
सा.बाबा 26.9.06 रिवा.

''बाप तो कहते हैं जल्दी-जल्दी करो परन्तु ड्रामा में जल्दी हो नहीं सकती। ... देहाभिमान के कारण ही लूनपानी होते हैं, स्वयं को धोखा देते हैं। बाप कहेंगे यह भी ड्रामा। जो कुछ होता, कल्प पहले मिसल ड्रामा चलता रहता है।''
सा.बाबा 28.11.04 रिवा.

''हम आत्मायें इस ड्रामा में एक्टर हैं, इनसे हम निकल नहीं सकते, मोक्ष पा नहीं सकते। बाप कहते हैं ड्रामा से कोई निकल जाये, दूसरा कोई एड हो जाये - यह हो नहीं सकता।

से चलते-फिरते बाप को याद करना है और सृष्टि-चक्र बुद्धि में फिराना है।''

सा.बाबा 3.9.04 रिवा.

''उनको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी। वे शुद्ध संकल्पों में पहले से ही मन को बिजी रखेंगे तो और संकल्प आयेंगे ही नहीं।... मंथन करने के लिए तो बहुत खज़ाना है। ... समय की कौन सी तेजी देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेजी है। वही बात को समय फिर कब रिपीट नहीं करता है? ... ड्रामा में जो बात बीती, जिस रूप से बीती, वह फिर से रिपीट नहीं होगी। फिर 5000 वर्ष के बाद ही रिपीट होगी।''

अ.बापदादा 26.1.70

''कितना बड़ा बेहद का नाटक है, तो उसको जानना चाहिए ना। सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। हर एक का ड्रामा में जो पार्ट है, वही बजायेंगे। ड्रामा में कोई रिपलेस हो नहीं सकता।... यह सारी नॉलेज बुद्धि से समझने की है।

सा.बाबा 14.9.04 रिवा.

''यह 84 का चक्र बुद्धि में तुमको याद रहेगा तो बहुत खुशी रहेगी। तुम जानते हो हम नये विश्व अर्थात् सतयुग के मालिक बनने वाले हैं। गीता में भी है - भगवानुवाच - हे बच्चे, देह सहित देह ... सर्व पापों से मुक्त कर दूँगा। ... यह 84 का चक्र अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना है। यह है स्वदर्शन चक्र।'' सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

''कोई फिर एडवान्स में भी जायेंगे। श्रीकृष्ण के माँ-बाप भी तो एडवान्स में जाने चाहिए, जो फिर कृष्ण को गोद में लेंगे। कृष्ण से ही सतयुग शुरू होता है। ये बड़ी गुह्य बातें हैं। यह तो समझ की बात है - कौन माँ-बाप बनेंगे?''

सा.बाबा 25.5.07 रिवा.

''सब साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। कैसा अच्छा ड्रामा बना हुआ है। ... आत्मा 84 जन्मों का पार्ट बजाकर फिर रिपीट करती है। वण्डर है ना। ... बाप कितनी महीन बातें सुनाते हैं। दिन-प्रतिदिन तुमको कितनी गम्भीर नॉलेज मिलती रहती है।'' सा.बाबा 18.5.07 रिवा.

''यही भारत विश्व का मालिक था और कोई खण्ड उस समय नहीं था। जब झूठ खण्ड

फिर गीता का भगवान भी सिद्ध हो जायेगा। ... सारा दिन यह बुद्धि में रहना चाहिए कि बाप का परिचय सबको कैसे दें। अब रात-दिन तुम इस चिन्तन में रहो कि कैसे सबको रास्ता बतायें।'' सा.बाबा 5.6.07 रिवा.

''अकाल तख्त तो ब्रह्म महतत्व है, हम आत्मायें वहाँ के रहने वाले हैं। ... वह शान्ति का तख्त सबके लिए है। राज्य तख्त कोई सर्व के लिए नहीं कहेंगे। ... बच्चों को इसमें ही बुद्धि लगानी है कि बाप का परिचय किसको कैसे दें।''

सा.बाबा 5.6.07 रिवा.

''यह भी विचार सागर मन्थन करना होता है कि पब्लिक को यह कैसे बतायें। ... भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी में नई दुनिया का सम्वत् भी दिखाना चाहिए। नई दुनिया में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था।'' सा.बाबा 31.5.07 रिवा.

''भारतवासी भगत भगवान को याद करते हैं। गृहस्थी भगत हैं क्योंकि भक्ति प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए होती है। ... निवृत्ति और प्रवृत्ति दोनों ही मार्ग दिखाना है। ... दिल में उमंग रहना चाहिए, चिनतन चलते रहना चाहिए। कोई भी धर्म वाला आये तो हम उनको ऐसे समझायें।'' सा.बाबा 27.4.07 रिवा.

''मनुष्य जब कोई ड्रामा देखकर आते हैं तो वह बुद्धि में आदि से अन्त तक घूमता रहता है। ... बाप से सुख-शान्ति का वर्सा मिलता है, फिर बुद्धि में सृष्टि-चक्र का ज्ञान भी है। ... सर्विस करने वालों को तो बहुत विचार सागर मन्थन करना है और बहुत बहादुर बनना है।'' सा.बाबा 13.3.07 रिवा.

''पहले ज्ञान का मन्थन करो, फिर सबको प्रेम से ज्ञान सुनाओ। शिवबाबा तो विचार सागर मन्थन करते नहीं हैं। यह करते हैं बच्चों के लिए। ... याद शिवबाबा को करना है। यह बाप जो विचार सागर मन्थन करते हैं, वह सुनाते हैं। अब बच्चों को भी फॉलो करना है। जितना हो सके अपने साथ बातें करते रहो। रात्रि को जागकर भी ख्याल करना चाहिए।'' सा.बाबा 6.3.07 रिवा.

''बाप आया है पतितों को पावन बनाने। बाबा कहते हैं - तुम्हारा भी यही धन्धा है। रात-दिन यही चिन्तन करो कि हम पतितों को पावन बनने का रास्ता कैसे बतायें।''

सा.बाबा 16.10.06 रिवा.

''हर एक का विचार चलना चाहिए कि सबको रास्ता कैसे बतायें। ख्यालात नहीं चलेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे।'' सा.बाबा 22.8.06 रिवा.

''विचार सागर मंथन कर औरों को सुनाते रहेंगे तब चिन्तन चलेगा। ... यह पढ़ाई है। आमदनी में खुशी होती है। जिसके पास जितने ज्ञान रत्न होंगे, उतनी खुशी भी होगी।'' सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

''अभी तो जो मिलता है, उसको बुद्धि में जमा करते जाते हो फिर बैठ जब रिवाइज करके उनकी महीनता वा गुह्यता में जायेंगे तब दूसरों को भी गुह्यता में ले जा सकेंगे।'' अ.बापदादा 16.10.75

''हमारा धन्धा ही सर्विस करना है। सर्विस करते रहेंगे तो सारा दिन विचार सागर मन्थन होता रहेगा। यह बाबा भी विचार सागर मन्थन करता होगा ना। नहीं तो यह पद कैसे पायेगा।'' सा.बाबा 25.4.05 रिवा.

''बच्चों को सदैव स्मति में रहना चाहिए - हम भारत को बेहद की खुशखबरी सुनाते हैं। ... जैसे बाबा को सारा दिन ख्यालात चलते हैं - कैसे सबको यह सन्देश सुनायें कि बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आये हैं।... तुम्हें सभी को इस अज्ञान अंधकार से निकालना है।'' सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''अन्तर्मुख होकर विचार करना है कि बाप ठीक कहते हैं। ... बाप सतयुग की स्थापना करते हैं। वहाँ कलियुग का नाम-निशान ही नहीं रहेगा। सर्विसएबुल बच्चों के सारा दिन ख्याल चलते रहते हैं। सर्विस नहीं करते तो समझा जाता है कि बुद्धि ही नहीं चलती।'' सा.बाबा 26.8.04 रिवा.

चिन्तन और विश्व-नाटक के गुह्य रहस्य

ये विश्व-नाटक परम सुखमय है और अति गुह्य और गूढ़ रहस्यों से भरा हुआ है, उन रहस्यों को समझने और इस विश्व-नाटक का यथार्थ सुख अनुभव करने के लिए इसके सभी रहस्य हमारी बुद्धि में स्पष्ट होने चाहिए। इसकी सभी बातों के रहस्यों को समझने और धारण करने के लिए उन सभी बातों पर गम्भीरता से विचार करेंगे, चिन्तन करेंगे तब ही ये रहस्य हमारी बुद्धि में धारण होंगे और हमको उनका सुख अनुभव होगा। इसीलिए बाबा हमको विचार सागर मंथन करने की प्रेरणा सदैव देते रहते हैं।

ब्रह्मा बाबा के जीवन को देखें तो समझ में आता है कि बाबा का ज्ञान की एक-एक बात पर कितना चिन्तन चलता था, बाबा कितनी उसकी महीनता में जाते थे और कैसे वे उस पर विचार सागर मन्थन करके उनका रहस्य बच्चों को समझाते थे। शिवबाबा को तो चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं है परन्तु ब्रह्मा बाबा ने विश्व-नाटक के विभिन्न रहस्यों को चिन्तन कर स्वयं भी धारण किया और बच्चों के आगे भी स्पष्ट किया, जिससे बच्चे भी उनको समझ सके और बच्चों को भी विश्व-नाटक के विभिन्न राज़ों पर चिन्तन करने की श्रीमत दी।

ये विश्व-नाटक अति गुह्य और आश्चर्यजनक राज़ो से भरा हुआ है, जो इसके गुह्य राज़ों का मनन-चिन्तन कर अनुभव करता है, वह इसके परमसुख को अनुभव करता है। जैसे नाटक के वण्डरफुल सीन को देखकर देखने वाले को खुशी होती है, ऐसे ही इस विश्व-नाटक के गुह्य राज़ों को मनन-चिन्तन कर उनको अनुभव करता है, उसे खुशी होती है। मनोरंजन अर्थात् उनको चिन्तन करने से मन हर्षित होता है।

''अभी तुम्हारी बुद्धि में सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी नाच रही है। बुद्धि ज्ञान डांस कर रही है। ... यह है अविनाशी ज्ञान रतनों की पढ़ाई। भक्ति को अविनाशी ज्ञान रत्न नहीं कहेंगे। ... अभी तुम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो।'' सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

''बाप भी गुप्त है, नॉलेज भी गुप्त है, तुम्हारा पुरुषार्थ भी गुप्त है। इसलिए बाबा गीत-कवितायें आदि भी पसन्द नहीं करते हैं, वह है भक्ति मार्ग। इसमें तो चुप रहना है, शान्ति